अंक 04

ज्योतिष की राष्ट्रीय मासिक पत्रिका। सम्पादक : के. एम. सिन्हा (ज्योतिषाचार्य)

Kundali expert For Better Future

ज्योतिष विज्ञान

दिसम्बर 2020

नववर्ष विशेषांक

मूल्य 35 रूपये

इस अंक के साथ पाये मुफ्त उपहार

2021 फलादेश

- नववर्ष विशेषांक
- रोहिणी नक्षत्र
- तुला राशि विशेष
- अंक ज्योतिष
- क्रिसमस विशेष
- दिसंबर 12 राशियाँ 2020
- साल का अन्तिम सूर्य ग्रहण
- ग्रहो की अवस्था से दशाफल
- हस्त रेखा से जाने भविष्य
- कुण्डली से जाने विवाह कब होगा
- गौ माता की पूजा क्यो ?
- विवाह और गुण मिलाप
- प्रश्नो के उत्तर
- प्रश्न कुण्डली से जाने भविष्यफल
- कर्क लग्न और विपरीत राजयोग
- दशमांश कुण्डली से जाने भविष्य
- काल सर्प दोष और उपाय
- कान की संरचना से भविष्यफल
- पीपल के पेड का महत्व
- तुलसी का हिन्दू धर्म में महत्व

ज्योतिषाचार्य

के.एम.सिन्हा

"जीवन की लड़ाईयाँ सदैव मजबूत और परिश्रमी लोग नहीं जीता करतें जीतता आज नही तो कल वहीं है, जिसे यकीन है की "वी जितेगा

चतुर्थ

संस्करण

Dec 2020

Publisher
KM ASTROGURU PVT. LTD,
B-1, 101, Block-E, Classic
Residency Apartment, Raj
Nagar Extenion, Ghazibad

Printed & Designed By
LB Web & Graphic Designer
Medical College, Gorakhpur

For ADS & Marketing
Please Contact
krishna@Kundaliexpert.com
info@Kundaliexpert.com
Mobile : 9818318303
Landline No:. 0120-4732013

रासायनिक प्रवक्ता के रूप में करियर शुरू करने वाले, आज श्री के. एम. सिन्हा न केवल भारत में बल्कि दुनिया के कई अन्य हिस्सों में एक प्रसिद्ध वैदिक ज्योतिषी और कुंडली विशेषज्ञ है। वह कुछ राजनीतिक घटनाओं के बारे मे सटीक भविष्यवाणियाँ करने के लिए भी जाने जाते हैं। कुंडली एक्सपर्ट की अपनी मुख्य शाखा गाजियाबाद में स्थित है। उनकी भविष्यवाणी वैदिक ज्योतिष पर आधारित है जहां वे कुंडली या उसके द्वारा प्रदान किए गए समय, स्थान और तिथि के आधार पर विभिन्न ग्रहों की स्थिति का अध्ययन करते है। वह लोगों को उनकी समस्याओं को दूर करने और रोकने के उपाय भी बताते है।

ज्योतिषीय नियमों को गणितीय मॉडल मे अनुवाद करके उनके द्वारा ज्योतिषीय भविष्यवाणियाँ भी की गई है। एक ज्योतिषी बनने के अपने सपने को पूरा करने और आगे बढ़ने के लिए श्री के. एम. सिन्हा ने रसायन विज्ञान कोचिंग कक्षाएं प्रदान करना शुरू किया। ज्योतिष को आगे बढ़ाने के लिए अपने जीवन के 15 वर्षो को समर्पित किया और ज्योतिषीय सिद्धांतों का अध्ययन, विश्लेषण और समझना शुरू किया। ज्ञान प्राप्त करने की इस यात्रा ने अब उन्हें एक ज्योतिषी में बदल दिया है और पिछले 5-6 वर्षो से वह पेशेवर रूप से ज्योतिष का कार्य कर रहे हैं।

उनके अनुसार ज्योतिष एक विज्ञान है , जो विभिन्न ग्रहों की स्थिति के सिद्धांतों पर काम करता है। अलग-अलग घरों में विभिन्न ग्रहों की स्थिति लोगों के जीवन में बहुत प्रभावशाली भूमिका निभाती है। सटीक पूर्वानुमान प्राप्त करने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान और जन्म तिथि के बारे में सही जानकारी होना बहुत महत्वपूर्ण है।

के.एम.सिन्हा, के अनुसार जन्म का समय, जन्म का तारीख और जन्म का स्थान प्रदान करके बनाई गई कुंडली बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि कुंडली किसी भी ज्योतिषीय भविष्यवाणियों को बनाने का आधार है। जन्म कुंडली में 12 घर होते हैं, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं को नियंत्रित करते हैं। तारों की स्थिति, ग्रहों की स्थिति जन्म तारीख, स्थान और समय के अनुसार इन घरों में बदलते रहती है जो लोगो के जीवन में विभिन्न प्रभाव डालती है।

ज्योतिषीय भविष्यवाणियों से जो लाभ प्राप्त हो सकता है, वह यह है कि लोगो के उनके जीवन के कठिन समय से अवगत कराया जा सकता है , उनके समस्याओं का समाधान और उपायों को बताया जा सकता है। इसके अलावा, कोई कैसे अच्छे समय का पूरा उपयोग कर सकता है और इसे अपने पक्ष में कर सकता है इस बात पर भी जोर दिया जाता है।

मुख्य रूप से गाजियाबाद में स्थित, दिल्ली में सर्वश्रेष्ठ ज्योतिषी के.एम.सिन्हा एक प्रसिद्ध कुंडली विशेषज्ञ है और उन्होने कई व्यक्तिगत और राजनीतिक भविष्यवाणियां सटीक रूप से किया है । व्यक्तिगत जीवन, पेशा, करियर से सम्बंधित या स्वास्थ्य आदि से सम्बंधित कोई भी समस्या हो, परामर्श कर सकता है। और विशेषज्ञ से सलाह ले सकता है। वह हस्तरेखा विज्ञान और अंक शास्त्र के माध्यम से भी भविष्यवाणियाँ करते है। एक कुडली चार्ट तैयार कर कुंडली का विश्लेषण कर भविष्यवाणी तथा उपायों को कुंडली विशेषज्ञ द्वारा नाममात्र राशि पर प्रदान की जाती है। यह नाममात्र शुल्क एक वर्ष के लिए वैध है और कोई भी वर्ष के दौरान कभी भी ज्योतिषीय सलाह ले सकता है ।

ज्योतिष विज्ञान के इस तृतीय संस्करण में पूरी कोशिश की गई है कोई कमी ना रहें फिर भी यदि कोई त्रुटि पाठक के जानकारी में आती है तो अपने सुझाव info@kundaliexpert.com पर भेज सकते है । आप सभी का बहुत आभार ।

विषय सूची

कैसा रहेगा? 2021 आपके लिए .....(4–8)

गौ माता की पूजा क्यो?.....(8–10)

अंक ज्योतिष.....(11–12)

कालसर्प दोष और उसके उपाय.....(13–14)

पीपल के पेड़ का महत्व.....(15–16)

नए घर में प्रवेश करते समय क्या ध्यान दें.....(18)

हस्त रेखा से जानें भविष्य .....(19–22)

ग्रहों की अवस्था से दशाफल.....(23–25)

प्रश्न कुण्डली से जाने भविष्यफल.....(26–27)

कान की संरचना से भविष्यफल.....(28–31)

तुलसी का हिन्दू धर्म में महत्व .....(31–32)

रोहिणी नक्षत्र.....(31–37)

साल का अन्तिम सूर्यग्रहण.....(38)

कर्क लग्न विपरीत राजयोग.....(39–43)

तुला राशि विशेष.....(44–46)

विवाह और गुण मिलाप.....(47–54)

© All Right Reserved to KM ASTROGURU PVT. LTD.

All rights reserved. Full or No part of this book may be reproduced in any form by an electronic or mechanical means, including any information storage and retrieval systems, without the permission in writing from the publisher.

WHY SHOULD YOU MUST CONSULT WITH

ASTROLOGER KM SINHA

ASTROLOGER
KM SINHA

CONSULTATION TYPE

IT'S
KM ASTROGURU
PVT.LTD.

1 or 2 Questions Fee = 3100 + S.T.	Full Analysis Fee = 5100 + S.T.
KUNDALI PDF ✓	KUNDALI PDF ✓
3 FOLLOWUP ✓	3 FOLLOWUP ✓
CUSTOMIZED LIFE REPORT ✓	CUSTOMIZED LIFE REPORT ✓
JYOTISH VIGYAN ✓	JYOTISH VIGYAN ✓
CUSTOMIZED DAILY HOROSCOPE ✓	CUSTOMIZED DAILY HOROSCOPE ✓
CUSTOMIZED WEEKLY HOROSCOPE ✗	CUSTOMIZED WEEKLY HOROSCOPE ✓
CUSTOMIZED MONTHLY HOROSCOPE ✗	CUSTOMIZED MONTHLY HOROSCOPE ✓
CUSTOMIZED RASHI PARIVARTAN ✗	CUSTOMIZED RASHI PARIVARTAN ✓
FULL MOBILE ACCESS ✗	FULL MOBILE ACCESS ✓

कैसा रहेगा 2021 आपके लिए?

(ज्योतिषाचार्य के. एम. सिन्हा)

नया वर्ष आते ही हर एक के मन में कई तरह के सवाल और कई तरह की जिज्ञासाएं मन में रहती है कि उनके लिए आने वाला यह नया साल कैसा होगा ? बिते हुए साल की तरह यह साल भी तो नही होगा? उनका इस साल करियर कैसा होगा? नौकरी और व्यवसाय इस साल का कैसा रहेगा? उनकी आर्थिक स्थिति कैसी रहेगी? ऐसी बहुत सारी जिज्ञासाएँ मनुष्य के मन में रहती है। यदि उनका पिछला साल किसी कारणवश खराब हो जाता है तो वह आने वाले नये साल में बहुत सारी उम्मीदे लगाये रहता है कि यह साल पिछले साल की अपेक्षा अच्छा जाए। इन सभी जिज्ञासाओं का समाधान करनें के लिए गोचरीय ग्रह स्थिति के अनुसार विभिन्न राशि वालों के लिए उक्त आधारों पर वार्षिक राशिफल विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया गया है। अतः सभी राशि वालें लोगों के लिए सामान्यतः नया वर्ष कैसा रहेगा इसकी विवेचना इस लेख के अन्तर्गत लिखि गई है।

मेष राशिफल : 2021

मेष राशिफल 2021 के अनुसार मेष राशि वाले लोगों के लिए या जातकों के लिए ये वर्ष कई मायनों में खास रहनें वाला हैं और विशेषरूप से यह साल मेश राशि वाले जातको का करियर के लिहाज से यह साल काफी अच्छा जानें की उम्मीद है

क्योंकि शनि देव की आपके पर आपार कृपा दृष्टि बनी रहेगी। हालंकि इस वर्ष आपका धन काफी खर्च होने वाला है। और विद्यार्थीयों के लिए यह वर्ष मिले जुले परिणाम लेकर आने वाला है। इस साल वृहस्पति के शुभ प्रभाव के चलते मेष राशि वाले छात्र जातकों को परीक्षा में सफलता मिलेगी और आपकी विदेश जाकर पढ़ाई करनें की भी इच्छा पूरी होगी। इसके अलावा परिवार कि बात करें तो आपका पारिवारिक जीवन निराशा–जनक रह सकता है। और परिवार से बहुत ज्यादा जरूरी साथ नही मिलेगा इस वर्ष आपके माता–पिता के स्वास्थ्य खराब हो सकतें हैं। मेष राशि वाले जातकों का वैवाहिक जीवन इस वर्ष उतार चढ़ाव वाला रहने वाला है। करियर की बात करें तो करियर अच्छा जाने की उम्मीद है। मेष राशि वाले जातकों को इस वर्ष अपने गुस्से पर नियन्त्रण करनें की जरूरत है अन्यथा उनका अपने जीवन साथी के साथ तालमेल में अभाव देखा जा सकता है। और गुस्से के ही कारण उनके वैवाहिक जीवन में तनातनी रहेगी। वहीं प्रेम में पड़े हुए अगर मेष जाति के जातक अपनें पार्टनर के साथ प्रेम विवाह के बंधन में बँधना चाहतें है तो ऐसे जातकों का यह साल खुशियाँ लेकर आ सकता है

वृषभ राशिफल : 2021

वृषभ राशिफल 2021 के अनुसार इस राशि के जातकों के लिए ये वर्ष थोड़ा उतार चढ़ाव वाला रहनें वाला है यह वर्ष वृषभ राशि के लिए करियर के लिहाज से अच्छा रहने वाला है इस वर्ष आपको मनचाहा ट्रांसफर मिलनें के योग बन रहें है यदि इस वर्ष जातक नौकरी बदलने की सोच रहें है तो उसमें इन्हें प्रबल सफलता के योग बन रहें है मिले–जुले नतीजे

लेकर यह साल आने वाला है आपके लिए इस वर्ष जनवरी अप्रैल के शुरूआती 14 दिन, साथ ही मई से जुलाई तक के अंतिम सप्ताह और फिर सितम्बर माह मे वृष राशि के जातकों को सबसे अधिक धन प्राप्ति के योग बनते नजर आ रहे हैं। यह साल ऊपर–नीचे होने के कारण साल की शुरूआत में ही तनावपूर्ण रहेगा। इनकी तनावपूर्ण स्थिति फरवरी माह तक देखनें को मिल सकती है और यह परेशानी ऐसे

मिथुन राशिफल : 2021

मिथुन राशिफल 2021 के अनुसार ये वर्ष आपके लिए शिक्षा से जुड़े जातकों के लिए नयी उम्मीद लेकर आने वाला हैं। जो छात्र जातक विदेश जाकर उच्च शिक्षा ग्रहण करना चाहतें है तो उनके लिए 2021 में जनवरी से

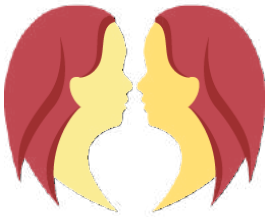

मई तक का समय बेहद अनुकुल रहने वाला है। इसके अलावा प्रेम की दृष्टि से भी यह साल मिथुन राशि के प्रेमी जातकों के विवाह के लिए सौगात लेकर आ सकता है इस वर्ष अपने स्वास्थ्य का आपको पूरा–पूरा ध्यान रखना पड़ सकता है। अन्यथा आपकों स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या हो सकती है आपके खर्चो में बढ़ोत्तरी होने के बावजूद आपको धन लाभ हो सकता है। अतः पूरे साल की बात करें तो कुछ महीना आपके लिए अच्छा साबित होने वाला है और कुछ महीना बेकार। व्यापार से जुड़े हुए जातकों को थोड़ा सावधान रहने की जरूरत है। क्योंकि आपका पार्टनर आपके विश्वास का फायदा उठाकर आपको नुकसान पहुँचा सकता है। स्वास्थ्य कि बात करें तो यह साल आपके लिए कुछ अच्छा नहीं रहने वाला इस समय आपको अपने खान–पान का विशेष ध्यान रखना होगा अन्यथा आपको रक्त से जुड़ी कोई समस्या परेशान कर सकती है।

कर्क राशिफल : 2021

2021 कर्क राशि वाले जातकों के लिए बहुत ही उतार–चढ़ाव वाला होनें वाला हैं। करियर के लिहाज से वर्ष कर्क राशि वाले जातको के लिए मिला–जुला रहनें वाला है। इस समय अप्रैल से सितम्बर महीनें तक आपको सतर्क रहनें की जरूरत है इस समय आपको बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। इस वर्ष भग्य आपका साथ नाममात्र का देगा इसलिए आप अपनें कार्यस्थल पर अपने से वरिष्ठ अधिकारियों से मतभेद करनें और किसी भी तरह की गलती करने से बचना होगा। इस वर्श आपको सरकारी क्षेत्र में आर्थिक लाभ होने की सम्भावनाएं है इस वर्श्ष आपकी आर्थिक स्थिति ठीक रहने के कारण आप अपने पुराने उधार और बिल का आसानी

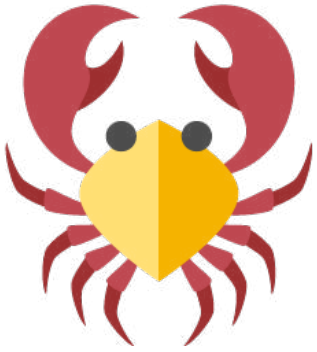

से भुगतान कर सकेंगें। शिक्षा के क्षेत्र की बात करे तो विद्यार्थी जातको के लिए सितम्बर से नवम्बर का समय और अप्रैल से पहले का समय काफी अच्छा रहने वाला है। और यही सही समय है जिसमे विद्यार्थीयों को सफलता मिल सकती है परन्तु सफलता पानें के लिए छात्रों को कड़ी मेहनत भी करनी पड़ेगी स्वास्थ्य की बात करें तो इस वर्ष आपका स्वास्थ्य अनुकुल नहीं रहने वाला है क्योंकि सेहत से जुड़ी दिक्कतो से आप काफी परेशान रह सकतें हैं। इसलिए इस वर्ष बहुत ही सावधानी आपको बरतनी होगी।

सिंह राशिफल : 2021

सिंह राशिफल 2021 के जातकों की बात करें तो यह साल आपके लिए बहुत ही उतार–चढ़ाव वाला रहने वाला है। वही बात करें हम सिंह राशि के करियर की तो इनका करियर इस वर्ष बहुत ही अच्छा रहने वाला है और कहीं न कहीं इनको अचानक से करियर मे तरक्की मिलनें के योग बन रहे है

इस वर्ष अप्रैल और मई का महीना आपके लिए चुनौतियों से भरा हो सकता है। आपका इस वर्ष बड़े अधिकारियो से सम्बन्ध भी बिगड़ सकते है। आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष आपका उतार चढ़ाव वाला होने वाला है। परन्तु अगर कोशिश करें ढ़ंग से आप तो अगस्त से अक्टूबर के बीच आप धन संचित कर पाने में भी पूरी तरह सफल हो सकते है। इस वर्ष आप अपनी आमदनी अपने परिवार के सहयोग से आर्जित कर पाने में सफलता हासिल कर सकते है। विद्यार्थी जातक की बात करें तो उच्च शिक्षा के क्षेत्र में लक्ष्य प्राप्ति के लिए इस साल काफी ज्यादा मेहनत करनी पड़ सकती है इस साल सिंह राशि वालो को अपने स्वास्थ्य का काफी ध्यान रखना होगा क्योंकि इनको हाथ, पेट, और गुर्दे संबंधित बीमारियाँ हो सकती है।

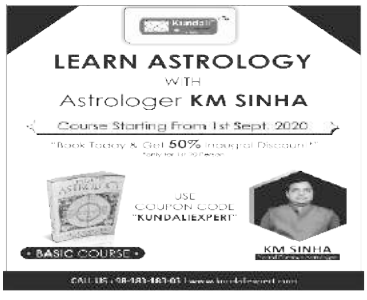

कन्या राशिफल : 2021

यह वर्ष कन्या राशि वाले जातकों

के लिए मिला–जुला परिणाम लेकर आनें वाला है। साल की शुरूआत तो आपकी अच्छी होगी परन्तु साल के मध्य मे आपको बहुत ही सावधान रहने की जरूरत है करियर के लिहाज से यह वर्ष आपका ठीक–ठीक जाने वाला है। परन्तु साल के मध्य में अप्रैल से सितम्बर के बीच आप पुरानी नौकरी छोड़कर नयी नौकरी ज्वाइन करनें का सबसे बड़ा फैसला ले सकते है। अगर देखा जाए तो इस साल का जनवरी, मार्च और मई का महीना आपका काफी बेहतर रहने वाला है। आर्थिक दृष्टि से देखा जाए तो यह साल अच्छा नहीं रहने वाला है। शिक्षा में पड़े हुए विद्यार्थी जातक के लिए यह समय थोड़ा नाजुक रहनें वाला है इसलिए विद्यार्थियों के लिए इस वर्ष कड़ी मेहनत ही करना एकमात्र उपाय होगा। पारिवारिक दृष्टि से देखा जाए तो यह साल ठीक रहने वाला है। वैवाहिक जीवन के लिहाज से बात करें तो 2021 की शुरूआत में जो लोग अभी तक कुँवारें है उनके लिए जनवरी से अप्रैल तक का समय सबसे ज्यादा अनुकुल रहने वाला है। स्वास्थ्य कन्या राशि वालो का अच्छा जाने की उम्मीद है लेकिन इस वर्ष कन्या राशि के कुछ जातकों को मधुमेह की समस्या और मूत्र जलन तंत्र से संबन्धित रोग हो सकते है, इसलिए सावधान रहने की सलाह इनको दी जाती हैं।

तुला राशिफल : 2021

तुला राशि वालों का 2021 बहुत ही उतार–चढ़ाव, उठा–पटक वाला होने वाला है। तुला राशि वालों का करियर इस साल अच्छा साबित हो सकता है। वही

कोई जातक अगर बिजनेस के क्षेत्र से जुड़े है और बिजनेस पार्टनर शिप करने की सोच रहें है तो इस साल उन्हे थोड़ा सावाधान रहनें की जरूरत है। क्योंकि तुला राशि वाले जातकों को फरवरी से अप्रैल तक का महीना आपको थोड़ा दिक्कत दे सकता है। आर्थिक दृष्टिकोण से तुला राशि वाले जातकों के साल की शुरूआत काफी बेहतर हो सकती है। बात करें विद्यार्थी जातक की तो तुला राशि वालों की शिक्षा इस साल काफी अच्छा जाने वाला है। तुला राशि वालों का पारिवारिक स्तर ठीक–ठीक पाने वाला है। इस साल आपकी आपके घर से दूरी बननें की संभावना बनती नजर आ सकती है। यह जरूरी नही है कि दूर जाने का करण पारिवारिक लड़ाई झगड़े हो यह दूरी काम में व्यस्त होने के कारण भी हो सकती है। अतः इनके स्वास्थ्य के प्रति इस राशि के जातक को अत्यधिक सावधानी बरतने की जरूरत है। वैसे तो इस वर्ष कोई रोग होने की सम्भावना नही है परन्तु अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देकर भी आप छोटी–मोटी समस्या को समय रहते देखकर उनसे बच सकतें हैं।

वृश्चिक राशिफल : 2021

वृश्चिक राशि के जातकों के लिए यह साल मिला जुला परिणाम देने वाला है यह साल वृश्चिक राशि वालों के लिए विदेश यात्रा पर जाने के योग नजर आ रहें है। इसके अलावा आपको अपने स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान देना होगा। वृश्चिक राशि वालों का करियर इस साल चुनौतिपूर्ण रहने वाला है अतः किसी भी काम को करने से पहले सोच समझ लेने की सलाह दी जाती है अन्यथा बात आपकी नौकरी तक भी आ सकती है। इस राशि वालों की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी जाने वाली है यूँ तो साल के शुरूआत में आपका खर्च बहुत ज्यादा हो सकता है परन्तु इसके अलावा भी आप धन एकत्रित करने में भी सफलता पा सकतें है। इसके अलावा आपका अगर कोई पुराना वाद–विवाद चल

रहा है तो इस वर्ष यह सब हल हो सकतें हैं। वैसे तो यह साल स्वास्थ्य के मामले में ठीक है और कोई भी बहुत बड़ी बीमारी होने की सम्भावना नहीं है परन्तु फिर भी छोटी मोटी समस्या आपको

परेशान कर सकती है। तो इस कारण इस वर्ष आपको बहुत ही सावधान रहनें की जरूरत है।

धनु राशिफल : 2021

धनु राशि वाले जातकों का यह साल 2021 बहुत ही बेहतर जाने वाला है। फिर चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में हो या फिर करियर के क्षेत्र में पूरे साल धनु राशि वाले जातको के लिए सफलता के योग बनते दिखायी दे रहे है। करियर की बात करें तो आपके सीनियर्स आपको आगे बढ़ाने आपकी पूरी मेहनत करेंगें और आपका पूरा–पूरा साथ देंगे। आर्थिक दृष्टि से देखा जाए तो इस पूरे वर्ष आपको धन की कोई कमी नहीं होगी। पढ़ाई के लिए धनु राशि वाले जातक इस वर्ष बहुत ही लकी रहने वाले है। जो जातक उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए कदम बढ़ाना चाहते है तो उनके लिए जनवरी और अप्रैल, 16 मई और 16 सितम्बर का महिना बहुत ही सही साबित होने वाला है। बात करे इस राशि के स्वास्थ्य की तो स्वास्थ्य

अच्छा रहेगा परन्तु बीच–बीच में कुछ छोट–मोटे कष्ट और परेशानियाँ हो सकती है लेकिन ये ज्यादा गम्भीर कष्टकारी नही होंगे।

मकर राशिफल 2021

मकर राशि वाले जातकों की बात करे तो इनका हर क्षेत्र में हर मायने में यह वर्ष अच्छा जानें की उम्मीद है। साल के शुरूआत में अगर हम करियर के क्षेत्र की बात करे तो इनकों अपने कार्य का सही फल इसी वर्ष ही मिलेगा। इस वर्ष आप अपने कारोबार में जितनी मेहनत करेंगे आपको उतनी ही अच्छी सफलता और परिणाम मिलेंगे। आर्थिक दृष्टिकोण से देखें तो यह साल आपका परेशानी भरा हो सकता है तथा इस स्थिति में आपकों अपना धन सोच समझकर खर्च करनें की जरूरत है। इस राशि

के छात्र जातकों की बात करें तो इस वर्ष इनकी पढ़ाई की अच्छी स्थिति होने वाली है। इस राशि के स्वास्थ्य की बात करें तो इनका स्वास्थ्य काफी अच्छा रहने वाला है। अगर आपको लम्बे समय से कोई बीमारी हुई है तो इस वर्ष उन सारी पुरानी बीमारियों से छुटकारा पा सकतें है। इस वर्ष प्रेम में पड़े हुए जातक की बात करे तो आपका पार्टनर आपके प्यार में पागल हो जाएगा और आप दोनो इस वर्ष प्रेम विवाह के बंधन में बंधने का निर्णय ले सकते है। देखा जाए तो मार्च जुलाई से अगस्त का समय आपके लिए विवाद उत्पन्न करने वाला है। इसलिए आपको किसी भी विवाद को न बढ़ने देते हुए उस विवाद को समय रहते सुलझाना होगा।

कुंभ राशिफल : 2021

कुंभ राशि वाले जातकों का यह साल 2021 बहुत ही सारी अच्छी सौगात लेकर आने वाला है। कुंभ राशि वाले जातकों को अपने कार्यक्षेत्र में अच्छी सफलता मिलेगी। यह वर्ष उतार–चढ़ाव वाला कुंभ राशि वालो के लिए होनें वाला हैं साल के शुरूआत में जितना भाग्य आपका साथ देगा उतना साल के अन्त तक आते आते प्रभाव कम होता जायेगा। कार्य करने तथा नौकरीपेशा वाले लोगो को इस वर्ष स्थान बदलना पड़ सकता है। वही बात करें दिसम्बर महीने की तो दिसम्बर का महीने आपके कार्य क्षेत्र में बहुत ही जबरदस्त सफलता लाने वाला है। आर्थिक स्थिति इस वर्ष बहुत अच्छी नहीं रहेगी इसलिए इस वर्ष आपको खर्चा पर लगाम लगाकर धन संचय करने का प्रयास ज्यादा करना चाहिए। जनरल एवं मीडिया, इन फार्मेशन, टेक्नोलॉजी और आर्किटेक्चर की पढ़ाई करने वाले जातकों के लिए इस वर्ष बेहतर नतीजे मिलने की संभावना है। जीवन में आपके कार्य अधिक होने के कारण और काम में व्यस्तता के कारण आपको अपने परिवार से दूर जाना पड़ सकता है। वैवाहिक जीवन की बात करें तो दाम्पव्य जीवन में जुलाई और अगस्त के महीने में प्यार काफी हद तक बढ़ सकता है। इसके अलावा सितम्बर महीने में अपने जीवन साथी व सन्तान के साथ दूर घूमने जाने का प्लान बना सकते है। विशेष रूप से आपके पैरो मे दर्द, गैस एसिडिटी,

अपच, सर्दी जुकाम जैसी समस्याएं परेशान कर सकती है। इन्हें अपने खान–पान पर ज्यादा ध्यान देने कि जरूरत है।

मीन राशिफल : 2021

मीन राशि के जातकों का यह साल मिला–जुला परिणाम लेकर आने वाला है। इस वर्ष मीन राशि के जातक को कुछ क्षेत्र में अपार असफलता मिलेगी तथा कुछ क्षेत्रों में इन्हे निराशा भी सामना करना पड़ सकता है। जहाँ पर आपको सावधानी बरतनी होगी। इस साल उनका करियर काफी अच्छा जायेगा। हालांकि जो लोग अपने कार्यक्षेत्र में उच्च पद पर हैं उन लोगों के साथ काफी अच्छा सम्बन्ध बनाकर चलना

होगा, आर्थिक क्षेत्रों में मीन राशि वाले लागों का मिला–जुला परिणाम होने वाला है। इनका पारिवारिक जीवन इस वर्ष काफी अच्छा होने वाला है। अतः इस राशि के जातक इस साल चाहे तो किसी प्रॉपर्टी की खरीद–बेचने से काफी अच्छा मुनाफा कमा सकतें हैं। साथ ही साथ आपको या आपके परिवार के लोगो को घर के किराये से भी अच्छी आमदनी प्राप्त हो सकती है मीन राशि जातक के संतान को इस वर्ष पढ़ाई या नौकरी के क्षेत्र में जबरदस्त लाभ मिलने के योग है। इस राशि के जातक का इस वर्ष स्वास्थ्य काफी अच्छा रहने की संभावना है। इसका मतलब यह बिल्कुल नही है। की लापरवाही की जाएँ। सावधानी बरतने की सलाह इस वर्ष मीन राशि वाले जातकों को दी जाती है।

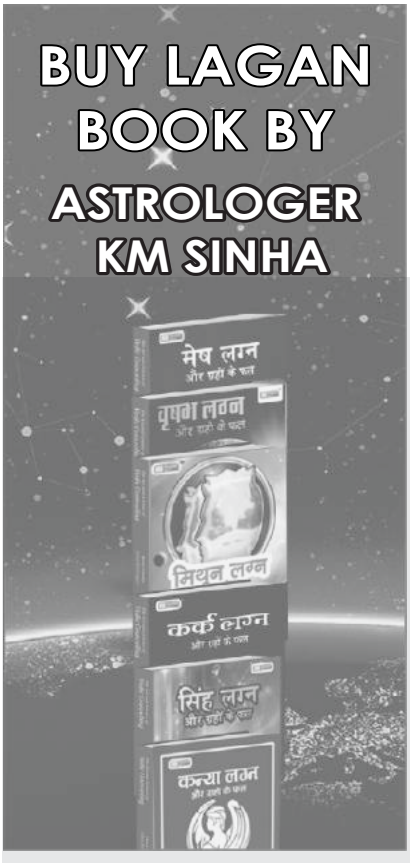

गऊ माता की पूजा क्यों की जाती है?

हिन्दूओं के धर्म में एक बहुत बड़ी मान्यता गऊ माता को दी जाती है और सभी धर्म के लोग विशेष रूप से हिन्दू धर्म के लोग गाय को गौ माता का दर्जा देते है। पुराणों में भी धर्म को गौ माता के रूप में दर्शाया गया है। भगवान श्रीकृष्ण गाय की सेवा अपने हाथों से करते है और इनका निवास गोलोक बताया गया है और इतना ही नही गाय को कामधेनु के रूप में भी दुनियाँ के कई मंदिरों में पूजन किया जाता है और गौ माता को सभी की इच्छाओं की पूर्ति करनें वाला बताया गया है। विशेष रूप से हिन्दू धर्म में गाय के इस पूजा करनें के महत्व के पीछे कई कारण भी बताये गयें जिनका धार्मिक और वैज्ञानिक महत्व भी बहुत है आज भी अगर देखा जाए तो भारतीय समाज में गौ माता की पूजा का महत्व कही कम है ज्यादा और कही तो नाममात्र का भी नहीं है। शास्त्रों के अनुसार ब्रम्हा जी नें जब सृष्टि की रचना की थी तो सबसे पहले गाय को ही पृथ्वी पर भेजा था। और आपको यह पता होगा की सभी जानवरों ने मात्र गाय ही ऐसा जानवर है जो माँ शब्द का उत्पात्ति भी गौवंश से हुई है। गाय ऐसा जानवर है जो माँ शब्द का उच्चारण करता है, इसलिए शास्त्रों में भी माना गया है की माँ शब्द की उत्पत्ति भी गौवंश से हुई है। गाय हम सबको माँ की तरह अपने दूध से पालती पोसती हें। आयुर्वेद के अनुसार भी माँ के दूध के बाद बच्चों के लिए सबसे फायदेमंद गाय का ही दूध होता है। 'धार्मिक आस्था है कि गौ माता की पूजा से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। घर की सुख–समृद्धि के लिए घर में गाय का होना अत्यन्त ही शुभ माना जाता हैं और विद्यार्थियों को अपना अध्ययन करने के साथ ही गाय की सेवा भी करनी चाहिए ऐसा करनें से उनका मानसिक विकास बहुत ही तेजी से होता है। यदि किसी स्त्री को संतान प्राप्ति की इच्छा होती है तो उनके लिए गाय को चारा खिलाना उनकी सेवा करना परिणामदायक माना जाता है

गौ माता कि पूजा क्यों की जाती है यह जानने की इच्छा सभी की होती है कुछ लोगों को इसके बारे में बहुत कुछ पता होता है तो बहुत लोगो को नाममात्र का, देखा जाए तो गाय के हर एक अंग में कुछ ना कुछ महत्वपूर्ण बात अवश्य होती हैं और इनके हर एक चीज का महत्व देवी–देवताओं से होता ही हैं जिसके कारण गाय को गौ माता के रूप में माना गया है भविष्य पुराण के अनुसार गाय के सींगो में तीनों लोको के देवी–देवता विद्यमान रहते हैं। सृष्टि के रचनाकार ब्रम्हा और पालनकर्ता विष्णु गाय के सींगो के निचले हिस्से में विराजमान है तो गाय के सींग के मध्य हिससे में शिव शंकर विराजतें है। गौ के ललाट में माँ गौरी तथा नासिका भंग में भगवान कार्तिकेय विराजमान है। धार्मिक आस्था के जरिए हमें यह पता चला की गाय माता जो होती है वह अपनी सेवा करने वाले व्यक्ति के सारे पाप अपनी एक सांस के जरिए खींच लेती है। और गाय जहाँ बैठती है, वहाँ के वातावरण को शुद्ध करके सकारात्मकता भर देती है। ऐसा शायद इसलिए कहा जाता है क्योंकि गाय जहाँ भी बैठती है वहाँ पूरी निर्भीकता से बैठती है। कहा यह जाता है की बैठी हुई जगह के सारे पापों को अपने

अन्दर ही समाकर उस जगह को शुद्ध कर देने की क्षमता गौ माता के अन्दर होती है।

पुण्य फल की प्राप्ति के लिए प्रतिदिन करें गौ–दर्शन

गौ माता की महिमा अपरमपार है। मनुष्य जो कि हिन्दू धर्म के है उनको यह चाहिए की वह गाय को मंदिरों और घरों में स्थान दे, क्योंकि गौ माता मोक्ष दिलाती हैं। और पुराणों में भी इसका उल्लेख मिलता है कि गाय की पूँछ छूने से मात्र मुक्ति का मार्ग खुल जाता है। देखा जाए तो गौ माता की महिमा को शब्दों में नही बाँधा जा सकता है हर एक मनुष्य अगर गौ माता को महत्व देना सीख ले तो गौ माता उनके दुख दूर कर देती है। लोग पूजा–पाठ करके धन पाने की इच्छा रखते है लेकिन भाग्य बदलने वाली गौ माता होती है। मरने से पहले कहा जाता है की पूँछ छू लेने से जीवन में किए पापों से मुक्ति मिल सकती है। लोग अक्सर ऐसा करते है कि जो दिखायी देते है लोग उनकी पूजा नहीं करते बल्कि जो अदृष्य जो देवता होते है जो दिखायी नहीं देते है लोग उनकी तालाश में भटकते रहते है। उनको यह मालूम नहीं होता कि भविष्य में बड़ी समस्याओं का हल भी गाय से मिलेने वाले उत्पादो से मिल सकता है। और आने वाले दिनों में संकट के समय गौ माता ही लोगो की रक्षा करेगी। इस सच्चाई से लोग अनजान है।

गोपाष्टमी पर होती है गौ माता व बछड़े की पूजा

कर्तिक मास के शुक्ल पक्ष अष्टमी को गोपाष्टमी उत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है वैसे तो गोपाष्टमी मुख्य रूप से मथुरा, ब्रज और वृंदावन क्षेत्र में मनाया जानें वाला उत्सव है। पर अब इसे पूरे भारत में उत्तर भारतीयों द्वारा बनाया जाता है। गोपाष्टमी पर गाय, बछड़े और ग्वालों की विशेष पूजा अर्चना की जाती है माना जाता है कि इससे मनोकामनाएं

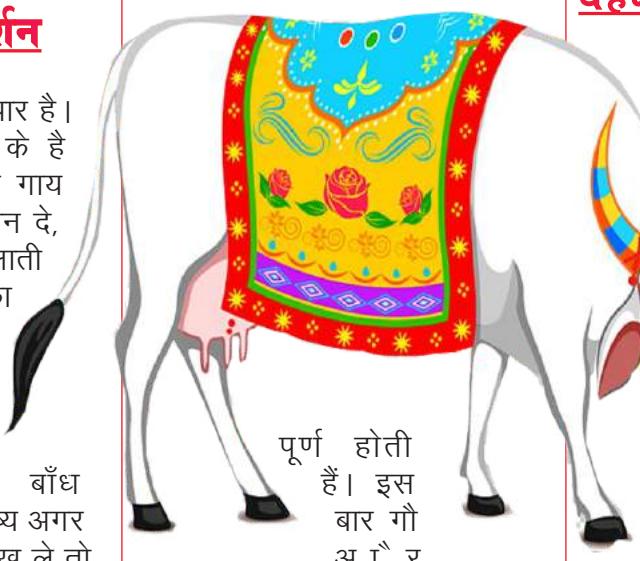

पूर्ण होती हैं। इस बार गौ अ ा र ग्वालों की पूजा को समर्पित गोपाष्टमी रविवार 22 नवंबर को मनाया जाएगा।

ऐसे करें गोपाष्टमी पर गौ माता की पूजा

सबसे पहले तो कार्तिक शुक्ल अष्टमी यानी गोपाष्टमी को इस दिन सुबह गायों को स्नान कराएं।

इसके बाद उनको पुष्प, अक्षत, गंध आदि से विधिपूर्वक पूजा करें फिर ग्वालों को वस्त्र आदि देकर उनका भी पूजन करें।

इसके बाद गायों को घास दें और परिक्रमा करें। परिक्रमा करने के बाद गायों के साथ कुछ दूर जायें ऐसा करने से आपकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, गोपाष्टमी की शाम को जब गायें चरकर वापस आ जाएं तो उनका पंचोपकार पूजन करें, गायों को भोजन दे और उनकी चरण रज को माथें पर धारण करें, अतः ऐसा करनें से सौभाग्य की वृद्धि होती हैं।

ये है गोपाष्टमी के शुभ मुर्हूत

गोपाष्ट मी तिथि – 22 नवम् बर 2020

गो पाष्टमी तिथि शुरू हो रही है – 22 नवम्बर 5:00 (सुबह से)

गोपाष्टमी तिथि का अंत हो रहा – 23 नवम्बर 4:56 (तक

गोपाष्टमी की शाम ऐसा करनें से सौभाग्य बढ़ेगा :

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, गोपाष्टमी की शाम को जब गायें चरकर वापस आ जाएं तो उनका पंचोपकार पूजन करें, गायों को भोजन दे और उनकी चरण रज को माथें पर धारण करें, अतः ऐसा करनें से सौभाग्य की वृद्धि होती हैं।

Kundali expert
How to Join
"ASTROLOGY COURSE "

Get Information Broucher
WEEKEND CLASSES
Only Through Mobile APP
Download KUNDALI EXPERT Mobile APP
GET IT ON Google Play
Available on the App Store

गेपाष्टमी तिथि शुरू हो रही है – 22 नवम्बर 5:00 (सुबह से)

गोपाष्टमी तिथि का अंत हो रहा – 23 नवम्बर 4:56 (तक)

गोपाष्टमी से जुड़ी कथा

पौराणिक कथाओं के अनुसार इस दिन भगवान श्रीकृष्ण नें गौ चारण की लीला का आरम्भ किया था इसलिए इस तिथि को गोपाष्टमी कहा जाता है। गोवर्धन पूजा के दिन श्रीकृष्ण बृजवासियों को इंद्र के प्रकोप से बचानें के लिए गोवर्धन पर्वत अपनी उंगली पर उठा लिया था। और गोपाष्टमी के दिन ही इंद्र श्रीकृष्ण के समक्ष अपनी हार स्वीकार की थी। इसके बाद भगवान श्रीकृष्ण नें गोवर्धन पर्वत को नीचे उतार दिया था तभी से गोपाष्टमी पर्व मनाया जाता है और इस दिन गाय के साथ बछड़ों की भी पूजा की जाती है। इसलिए गोपाष्टमी पर्व को गोवर्धन पूजा के सात दिन बाद मनाया जाता है।

गोपाष्टमी की पौराणिक कथा

बाल कृष्ण नें माता यशोदा से इस दिन गाय चरानें की जिद की थी। यशोदा मईया ने श्री कृष्ण के पिता नंद बाबा से इसकी अनुमति मांगी थी। नंद महाराज मुहूर्त के लिए एक ब्राह्मण से मिले, ब्राह्मण नें कहा कि गाय चराने की शुरूआत करनें के लिए यह दिन अच्छा और शुभ है। इसलिए अष्टमी पर कृष्ण ग्वाला बन गए और उन्हें गोविन्दा के नाम से लोग पुकारने लेगे। माता यशोदा नें अपने लल्ला के श्रृगांर किया और जैसे ही पैरों में जूतियां पहननें लगी तो लल्ला नें मना कर दिया और बोले मैय्या यदि मेरी गौएं जूतियां नहीं पहनती तो मैं कैसे पहन सकता हूँ। यदि पहना सकती हो तो उन सभी को जूतियाँ पहना दो और भगवान जब तक वृंदावन में रहें, भगवान नें कभी पैरों में जूतियाँ नहीं पहनी। आगे–आगे गाय और उनके पीछे बांसुरी बजाते भगवान उनके पीछे बलराम और श्री कृष्ण के यश का गान करते हुए ग्वाल–गोपाल इस प्रकार से विहार करते हुए भगवान नें उस वन में प्रवेश किया तब से भगवान की गौ चारण लीला का आरम्भ हुंआ और वह शुभ तिथि गोपाष्टमी के नाम से प्रसिद्ध है।

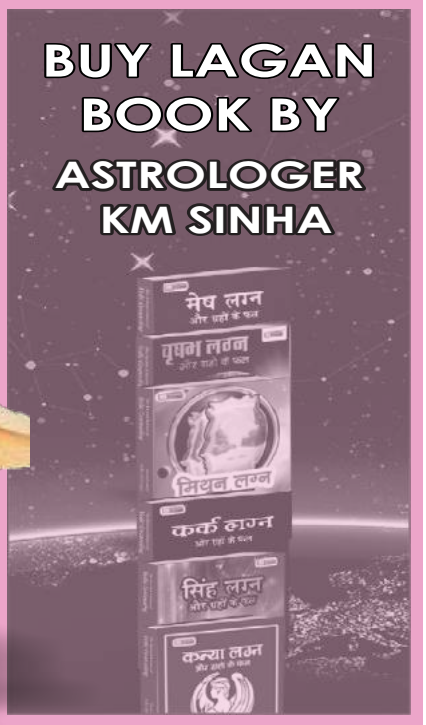

Kundali expert
How to Join
"ASTROLOGY COURSE "

Get Information
Broucher
WEEKEND CLASSES
Only Through Mobile APP
Download KUNDALI EXPERT Mobile APP
Google Play
App Store

अंक ज्योतिष

अंक ज्योतिष, ज्योतिषशास्त्र की तरह ही एक ऐसा विज्ञान है जिसमें अंको की मदद से व्यक्ति के भविष्य के बारे में जानकारी दी जाती है। हिन्दी में इसकी गुण और विद्या को अंक शास्त्र और अंग्रेजी में **न्यूमेरोलॉजी** कहतें है। अंक ज्योतिष के अनुसार हम बात करे तो खासतौर से गणित के कुछ नियमें का प्रयोग करके व्यक्ति अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं का आकलन करके उनके आनेवाली जिन्दगी के बारे में भविष्यवाणी की जाती है। और आपको बता दें कि अंक ज्योतिष में जातक की जन्मतिथि के अनुसार मुल अंक निकालकर उसके भविष्य के फल की गणना मुख्य रूप से की जाती है।

मूलांक

1 2 3 4 6 7 8 9

क्या है अंक ज्योतिष

अंक ज्योतिष वास्तव में अंको और ज्योतिषीय तथ्यों का मेल कहलाता है। अर्थात् ज्योतिषशास्त्र में अंको के माध्यम से ज्योतिषीय तथ्यों का मेल करके किसी भी व्यक्ति के भविष्य की जानकारी देना ही अंक ज्योतिष कहलाता है। जैसा कि आपको यहाँ चित्र के माध्यम से दिखाया गया है अंक ज्योतिष में यह 1 से 9 ही अंकों की गणना करके व्यक्ति के भविष्य की गणना की जाती है इसके साथ ही ज्योतिषशास्त्र मुख्य रूप से तीन तत्वों पर आधारित होतें हैं यह तीन तत्व ग्रह, राशि, और नक्षत्र हैं। देखा जाए तो अंक शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र का मिलान सभी नौ ग्रहों, बार राशियों, और 27 नक्षत्रों के आधार पर किया जाता है। अधिकतर सभी कार्य अंको के आधार पर ही किए जातें हैं। अंको के द्वारा ही साल, महीना, दिन, घंटा, मिनट और सेकेण्ड जैसी आवश्यक चीजों को व्यक्त किया जाता है।

क्यों किया जाता है अंक ज्योतिष का प्रयोग :

अंक ज्योतिष का प्रयोग ज्योतिषशास्त्र में अंको के माध्यम से विशेष रूप से व्यक्ति के भविष्य के बारे में जानकारी प्राप्त करनें के लिए किया जाता है। अंक ज्योतिष में की जानें वाली गणना विशेष रूप से ज्योतिषशास्त्र में दिये गये नव ग्रहों अर्थात् (सूर्य, चंद्र, गुरू, राहु केतु, बुध, शुक्र शनि और मंगल)के साथ मिलाप करके की जाती है। देखा जाए तो 1 से 9 अंक की जो मूलांक बताया गया है वह हमारे ज्योतिषशास्त्र में नव ग्रहों का ही स्वरूप है। जिसके आधार पर ही हम व्यक्ति के जीवन में किसी भी जानकारी का पता लगा सकतें हैं। और साथ–साथ यह भी जान सकतें है कि हमारें किस अंक का असर किस ग्रह पर रहता है। किसी भी जातक के जन्म के बाद उसकी जानकारी हमें ग्रहों की स्थिती के आधार पर ही पता चल पाती है। ज्योतिष शास्त्र में प्रत्येक व्यक्ति के जन्म के समय एक प्राथमिक और एक द्वितीयक ग्रह उस पर शासन करतें हैं इसलिए जन्म के बाद उसपर अंको का प्रभाव सबसे ज्यादा रहता है, और यही अंक उसका स्वामी होता है। शास्त्रों में ऐसा माना जाता है कि यदि तालमेल अच्छा होता है।

अंकशास्त्र का महत्व

ज्योतिषशास्त्र के जैसे ही अंकशास्त्र काभी हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व होता है। इस विद्या के माध्यम से लड़के और लड़की की कुण्डली में से मूलांक निकालकर ही उनके गुणों का मिलान भी किया जा सकता है। आजकल यह भी देखा गया है कि अंकशास्त्रों का प्रयोग लोग वास्तुशास्त्र में भी में भी करनें लगे है। नए घर का निर्माण करते वक्त लोग इस बात का भी ज्यादा ध्यान देने लगे हैं की घर में कितनी सीढ़ियाँ होंगी, कमरे की कितनी खिड़कियाँ और कितने दरवाजे होने चाहिए। इन सभी चीजों का अंकशास्त्र के माध्यम से ही किया जाता है। इसके साथ–ही–साथ सफलता पाने के लिए लोग अपने नाम के स्पेलिंग को भी अंकशास्त्र के द्वारा ही रखतें है। उदाहरण के लिए करण जौहर फिल्म जगत के निर्माता आौर निर्देशक करण जौहर से लेकर एकता कपूर तक सभी नें अंक शास्त्र के मदद से ही अपने नाम रखकर अपना भाग्योदय किया है।

मूलांक का अंक ज्योतिष में महत्व

मूलांक के जरिये अगर हमें अपना भविष्य जाना हो या फिर हमें अपना शुभ नम्बर जानना हो तो हम खुद से ही इस मूलांक के आधार पर हम अपना शुभ नम्बर जान सकतें है। हम यह शुभ अंक तीन तरीको के माध्यम से जान सकतें है एक तो हम इसे मूलांक के आधार पर जान सकते है, दूसरा भाग्य के अंक के आधार पर जान सकतें हैं, तीसरा हम इसे नामांक के आधार पर भी जान सकतें है। इसको देखनें के लिए हम नीचे इन तीनों भागों के कुछ उदाहरण को देख लेतें है जिसके आधार पर हम अपना शुभ अंक निकाल सकते हैं।

मूलांक में मुख्य रूप से अंकों का प्रयोग तीन तरीकों से किया जाता हैं।

मूलांक : मूलांक से हम किसी भी व्यक्ति की जन्म तिथि को एक–एक कर जोड़नें से जो अंक प्राप्त होता है वह उस व्यक्ति का मूलांक कहलाता है। उदाहरण स्वरूप : यदि किसी व्यक्ति की जन्म तिथि 28 है तो 2 + 8 = 10, 1 + 0 = 1, तो व्यक्ति का मूलांक 1 होगा, दूसरा उदाहरण देखतें है यदि किसी व्यक्ति की जन्म तिथि 19 है तो 1 + 9 = 10, 1 + 0 = 1, तो व्यक्ति का मूलांक 1 होगा तो आपने यह देखा और आप समझ भी गये होंगे की आप अपना मूल अंक कैसे निकाल सकते हैं।

भाग्यांक : भाग्यांक की बात करें तो किसी भी व्यक्ति की जन्म तिथि, माह और वर्ष जोड़ने के बाद जो अंक प्राप्त होता है वो उस व्यक्ति का भाग्यांक होता है। उदाहरण के लिए देखें तो यदि किसी व्यक्ति की जन्म तिथि 28 – 04 – 1992 है तो उस व्यक्ति का भाग्यांक 2 + 8 + 0 + 4 + 1 + 9 + 9 + 2 = 35, 3 + 5 = 8, अर्थात् इस जन्म तिथि वाले व्यक्ति का भाग्यांक 8 होगा। दूसरा उदाहरण देखते हैं यदि किसी व्यक्ति की जन्मतिथि 19 – 11 – 1995 है तो उस व्यक्ति का भाग्यांक 1 + 9 + 1 + 1 + 1 + 9 + 9 + 5 = 36, 3 + 6 = 9 अर्थात् इस जन्म तिथि वाले व्यक्ति का भाग्यांक 9 होगा।

नामांक : नामांक के अनुसार हम कोई अंक निकाले तो हम देखतें है की यदि किसी व्यक्ति के नाम से जुड़े अक्षरों को जोड़ने के बाद जो अंक प्राप्त होता है, तो वो उस व्यक्ति का नामांक कहलाता है। उदाहरण के लिए हम देखते है यदि किसी व्यक्ति का नाम Shyam है तो इन अक्षरों से जुड़े अंकों को जोड़ने के बाद ही उसका नामांक निकाला जा सकता है। S(19,1+9=10+H(8)+Y(25, 2+5).A(1)+M(13,1+3=4)। हमारे जीवन में इन मूलांको का कितना महत्व है यह तो आप समझ गये होंगे तो आइए हम एक–एक मूलांको को पढ़कर समझ लेते है की किस तरह से यह मूलांक हमारे जीवन में महत्व रखते है। आइए हम अंक एक के मूलांक को भली–भाँति समझ लेतें है।

अंक एक (भाग – 1)

अंक एक की हम बात करें तो अधिकांश लोगो को मूलांक के बारे में पता ही होगा अगर नही पता है तो आप इसको पढ़कर इसके बारे में जान सकतें है। जिन व्यक्तियों का जन्म किसी भी माह की 1,10,19 या 28 तारीख को हुआ हो तो, उनका मूलांक 1 होगा, आइए मूलांक एक के बारे में जानतें है। मूलांक 1 का जो स्वामी होता है वह सूर्य होता है और सूर्य का हर एक के जीवन की शक्ति का प्रतीक माना जाता हे। यदि आपका मूलांक 1 है तो आपमे ईमानदारी बहुत ही ज्यादा होगी। आप दृढ़ निश्चयी और सृजनशील व्यक्ति होंगे। लेकिन आप कुछ हद तक हठी और अहंकार से भी युक्त हो सकतें हैं। यदि आप अभिमान से बचकर स्वाभिमान तक सीमित रहतें है तो आपकी गणना श्रेष्ठतम लोगों में ही होगी और आप हमेशा सही निर्णय लेने में दक्ष रहेगें। आप अपने आदर्शों का निर्वाह करने वाले बात के धनी, स्वानिर्णय पर अड़िग एवं सैद्धान्तिक व्यक्ति हैं और ये गुण श्रेष्ठतम बनानें में बहुत सहायक होते हैं। मूलांक 1 वाले व्यक्ति किसी के अधीन काम करना पसंद नहीं करते हैं ये निडर साहसी व स्वभिमानी होते है जीवन में किसी भी कठिनाइयों के आने से घबराते नहीं है शायद इनका यही गुण इन्हे सफलता दिलाने में सहायक होता है। मूलांक 1 वाले शिक्षक जातकों की बात करें तो ये प्रायः उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले होते है। इनका उत्साही स्वभाव इन्हें लगभग सभी तरह की परीक्षाओं में सफलता दिलातें हैं जिसके कारण इन्हे पढ़ाने वाले सभी शिक्षक इनका सम्मान करते हैं। इस मूलांक वाले लोगो के आर्थिक स्थिति की बात करें तो इनकी अर्थिक स्थिति अच्छी होती है इनको धन की कमी नहीं होती, हालांकि ये लोग अपनी शान–शौकत मे भी काफी धन खर्च कर डालतें हैं। यदि इनके पारिवारिक संबंधों की बात करें तो यह अपने परिवार में बड़े होते है और अपने बड़े भाई–बहनों की पूरी मदद करतें है। यदि यह बड़े नही होते है तो भी अपने घर में एक मुखिया की भूमिका निभातें है घर में इनके मुखिया जैसी स्थिति होनें के कारण घर के किसी भी काम में इनकी सलाह लेना जरूरी समझतें हैं कुछ लोग इनको विभिन्न प्रकार की हानि पहुँचाते है फिर भी ये उनकी भलाई करते रहतें है। और इनके अधिकतर जो दोस्त होते है वह 2,3,9 मूलांक वाले ही होते है। 1 मूलांक वाले जातकों के विवाह या प्रेम संबंधो की अगर बात करें तो इनका प्रेम सम्बन्ध स्थायी रहता है, यदि इनका अपनें प्रेमी/प्रेमीका से इनका विवाह नहीं हो पाता है तो यह एक दूसरे से मैत्री सम्बन्ध रखते हैं और एक दूसरे की हमेशा सहायता करतें है। इनके संतान कम होती है फिर भी इनको हर हाल में एक पुत्र अवश्य होता है। मूलांक 1 वाले अपने कार्यक्षेत्र में कही न कहीं I.A.S, या P.C.S अधिकारी होते है, इनमें जन्म से ही नेतृत्व के गुण होतें है ये अच्छे नेता बन सकते है। इनके हम स्वस्थ्य की बात करे तो इनका स्वास्थ्य उत्तम रहता है फिर भी इनको हृदय रोग, पेट रोग और आँखो के रोग होने का भय रहता है। अतः 1,2,3 व 9 मूलांक वाली तारीखें और रविवार और सोमवार के दिन शुभ होते है। और 1 मूलांक वाले व्यक्ति के रंगो की बात करें तो इनके लिए पीला, सुनहरा या नारंगी रंग अनुकूल रहता है।

खरमास 2020 कब ?

ज्योतिषाचार्य **के.एम. सिन्हा** के अनुसार भारतीय संस्कृति में प्रत्येक मांगलिक कार्यक्रम के लिए ग्रह नक्षत्रों के अलावा, वृहस्पति ग्रह का भी अत्यधिक महत्व होता है। अर्थात् वृहस्पति ग्रह को देखते हुए ही किसी भी मांगलिक कार्यों को करने की तिथि तय की जाती है। अतः जब वृहस्पति ग्रह यानि की गुरू सूर्य ग्रह के नजदीक होते है तो वृहस्पति ग्रह की सक्रिय होने की स्थिति जो है वह कम हो जाती है। जिसके कारण हम कहते है की वृहस्पति अस्त हो रहा है। और कहा यह जाता है की वुहस्पति के अस्त होने की स्थिति में कोई भी मांगलिक कार्य जैसे–विवाह, मूंडन, नामकरण इत्यादि कार्य घर में नहीं किये जातें है और इसी अवस्था को हम 'खरमास' या 'मलमास' के नाम से जानतें है।

कब से लग रहा है खरमास ?

ज्योतिषाचार्य या ज्योतिषीय गणना के आधार पर इस वर्ष सूय्र 15 दिसम्बर 2020 को दोपहर 3:27 पर धनु राशि मे प्रवेश कर रहें है और 15 जनवरी 2021को रात 2:07तक इसी राशि में रहेंगे। इस महीने में हिन्दू धर्म के विशिष्ट व्यक्तिगत संस्कार जैसे–नामकरण, विवाह, मुंडन इत्यादि किसी भी तरह के धार्मिक संस्कार नही किसे जाते है। बहुत ही पहलें के समय से यह मान्यता चली आ रही है कि हिन्दू धर्म में खरमास के महीने में या इस समय में किसी भी तरह के शुभ काम नहीं किए जातें है और पंचांग कि स्थिती के अनुसार देखा जाए तो जब से सूर्य वृहस्पति राशि में प्रवेश करता हैं। तभी से खरमास या मलमास प्रारम्भ हो जाता हैं। विशेष रूप खरमास लग जाने के कारण इस महीनें को हिन्दू धर्म के अनुसार शुभ

नहीं माना जाता है। इसलिए अत्यधिक लोग खरमास में किसी भी शुभ कार्य को करने से इंकार कर देतें है तथा शुभ–मूहुर्त आनें की प्रतिक्षा करतें है। मल–मास को मलिन मास माना जाता है और मलिनमास होने के कारण इस महीने को मलमास भी कहा जाता है।

खरमास की पौराणिक कथा

खरमास की पौराणिक कथा बहुत ही कम लोग जानतें होंगें पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार खरमास की कहानी कुछ यूँ है। जब भगवान सूर्यदेव 7 घोड़ों के रथ पर सवार होकर लगातार ब्रम्हांड की परिक्रमां करते रहतें है अतः सूर्यदेव को कहीं पर भी रूकने की इजाजत नहीं है। क्योंकि सूर्यदेव के रूकते ही जनजीवन भी जो ठहर जायेगा। लेकिन जो घोड़े सूर्यदेव के रथ में जुड़े हुए होते हैं, वे घोडें लगातार चलनें व विश्राम ना मिलने के कारण मिलने के कारण भूख–प्यास से बहुत थक जातें है। सूर्यदेव को उन घोड़ों की दयनीय दशा को देखकर उनका मन दया से भर गया। फिर उसके बाद भगवान सूर्यदेव उन घोडों को एक तालाब के किनारे ले गये तब उसी समय सूर्यदेवता को यह आभास हुआ कि अगर किसी भी स्थिति में यह रथ रूका तो अनर्थ हो जायेगा पूरी सृष्टि स्थिर हो जायेगी। लेकिन घोड़ों का सौभाग्य कहिए कि तालाब के किनारे दो खर (गधा) मौजूद थे। तब सूर्यदेव उन घोड़ों को विश्राम करने के लिए तथा उन्हें पानी पीने क लिए छोड़ देते है और खर यानी गधे को अपने रथ में जोड़ लेते है। अतः घोड़ा–घोड़ा होता है और गधा गधा होता है। गधों को अपने रथ में जोड़ने के कारण रथ की गति धीमी हो जाती है फिर भी जैसे–तैसे 1 मास का चक्रपूरा होता है, तब तक घोड़ों को भी विश्राम मिल चुका होता है। इस तरह से यह क्रम चलता रहता है और हर सौर वर्ष में 1 सौरमास 'खरमास' कहलाता है। अर्थात् खरमास अंग्रेजी कैलेन्डर के अनुसार 15 दिसंबर के आज से सूर्यदव के धनु राशि में जाने से संक्रमण से शुरू होता है व 15 जनवरी को मकर राशि राशि में संक्रमण के न होने तक रहता है। इसी तरह 14 मार्च के आस–पास सूर्य, मीन राशि में संक्रमित होते है। जिसके कारण सभी मांगलिक कार्य वर्जित मानें जातें है।

मान्यता के अनुसार क्या नर्क में जातें हैं खरमास में मरनें वाले ?

प्राचीन समय के मान्यताओं के अनुसार यह बात ज्ञात हुई है कि खरमास में यदि कोई व्यक्ति अपना प्राण त्यागता है तो उसे निश्चित रूप से नर्क में ही निवास मिलता हैं और इसका उदाहरण पवित्र ग्रन्थ महाभारत में भी मिलता है। अर्थात् कही गयी कथा के अनुसार जब भीष्म पितामह शरशैया पर लेटे होतें है लेकिन खरमास के कारण वे अपने प्राण इस महीने नहीं त्यागते है। जैसे ही सूर्य मकर राशि में प्रवेश करतें हैं, वैसे ही भीष्म पितामह अपने प्राण त्याग देतें है। तभी से यह परम्परा चली आ रही है और माना यह जाता है कि खरमास में मरनें वाले लोग निश्चित तौर पर नरक में ही जातें है

दिसम्बर माह में इस दिन रहेंगे विवाह के शुभ मुहूर्त :

खरमास के शुरू होने से पहले विवाह के शुभ मुहूर्त इस प्रकार है दिसम्बर 2020–1 दिसम्बर, 7 दिसमबर, 9 दिसम्बर, 8 दिसम्बर एवं, 11 दिसम्बर। अतः 11 दिसम्बर 2020 तक ही विवाह के शुभ मुहूर्त है, इसके बाद फिर 15 दिसम्बर से 2020–21 का एक महीने का खरमास लग जायेगा जो 2021 की मकर–संक्रांति के दिन नही समाप्त होगा।

खरमास समाप्त होने के बाद क्या करें ?

जैसे कि आपको पता होगा खरमास का समाप्त हो जाने के बाद से एक नए सौर मास का आरम्भ होता है। हालॉकि जब सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर बढ़ जाता है तो हर काम के लिए वह बहुत ही मंगलकारी होता हैं और साथ ही साथ खरमास समाप्ति के दौरान ही सभी शुभ कार्यो के बंद द्वार को भी खोल देता है। इसलिए खरमास की समाप्ति के बाद यह दिन एक अबूझ मुहूर्त माना जाता है। इस दिन आप बिना किसी परेशानी डर से विवाह कर सकतें हैं। अतः खरमास खत्म हो जाने के बाद से गृह प्रवेश, विवाह संस्कार मुंडन संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार, नामकरण सहित सारे मांगलिक कार्यक्रमों के लिए शुभ मुहूर्त की शुरूआत हो जाएगी।

खरमास में क्या करें ?

शास्त्रों के अनुसार, खरमास की अवधि में भागवत् गीता का पाठ करना शुभफलदायी होता है।
इस अवधि में श्री राम जी की अराधना तथा कथा वाचन करना शुभ होता है।
इस समय दान, पुण्य, जाप, और भगवान का ध्यान लगानें से कष्ट दूर हो जातें है।
मलमास या खरमास भगवान शिव की अराधना के लिए शुभ होता है।
इस अवधि में भगवान विष्णु की भी पूजा करनीं चाहिए।

Kundali expert

How to Join
"ASTROLOGY COURSE "

Get Information
Broucher
WEEKEND CLASSES
Only Through Mobile APP

Download KUNDALI EXPERT Mobile APP

GET IT ON Google Play | Available on the App Store

सब्सक्राइब कीजिए भारत की सबसे लोकप्रिय ज्योतिष पत्रिका

ज्योतिष विज्ञान

सफलतम् 1 ला वर्ष

हर अंक में विशेष

केवल ज्योतिष से सम्बन्धित मासिक पत्रिका
ज्येतिष सीखने के लिए अनेक लेख
वर्तमान में राशि परिवर्तन और उसका प्रभाव
महीने के व्रत त्यौहार इत्यादि
राजनीतिक विश्लेषण
अनेक विद्वानों द्वारा ज्योतिषीय विषय पर शोध

सदस्य शुल्क (प्रिंट एडिशन) (TAX सहित)

(साधारण डाक से)

वार्षिक 708
द्विवार्षिक 1298
त्रिवार्षिक 2360
आजीवन 12980

(कोरियर से)

वार्षिक 826
द्विवार्षिक 1416
त्रिवार्षिक 2478

(पंजीकृत डाक से)

वार्षिक 885
द्विवार्षिक 1475
त्रिवार्षिक 2537

सदस्यता शुल्क (डिजिटल एडिशन)

एक प्रति 35
वार्षिक 300

BANK DETAILS :
Name : KM ASTROGURU PVT. LTD.
A/C No. : 628605015394
IFSCE Code : ICICI0006286
Branch Add : R-1/88 RDC Raj Nagar Ghaziabad UP 201002
Type : CURRENT ACCOUNT

काल सर्प दोष क्या है

काल सर्प के दोष में असल जिन्दगी में व्यक्ति के जन्मांग चक्र में राहु और केतु की स्थिति आमनें सामने की होती है। अतः राहु और केतु दोनो ही 180 डिग्री पर रहतें हैं यदि बाकी सात ग्रह राहु केतु के एक तरफ हो जाए और दूसरी ओर कोई ग्रह न रहे, तो ऐसी स्थिति में कालसर्प योग बन जाता है अर्थात् इसे ही कालसर्प दोष कहा जाता है। हालांकि काल सर्प योग का निर्धारण करते समय अत्यन्त सावधानी बरतनी चाहिए।

काल सर्प योग के लक्षण

आइए हम कालसर्प के दोष के इन लक्षणों को समझतें है जिनके होने से यह पता चलता है की आपकी कुण्डली में काल सर्प दोष किस प्रकार से हो सकतें है।

जातक को प्रायः स्वप्न में सर्प का दिखाई देना।

अत्यधिक परिश्रम के बाद भी कार्यो में मन मुताबिक सफलता ना पाना।

मानसिक तनाव से ग्रस्त रहना।

सही निर्णय न ले पाना।

कलहपूर्ण परिवारिक जीवन।

गुप्त शत्रुओं का होना कार्य में बाधा उत्पन्न होना।

काल सर्प दोष के निवारण उपाय :

अगर आपकी कुण्डली में कालसर्प दोष है तो इसका सर्वोत्तम उपाय श्रावण मास में भगवान शिव का विधिपूर्वक रूद्राभिषेक अवश्य करवाना चाहिए।

शिवलिंग पर मिश्री और दूध नित्य अर्पित करना चाहिए साथ–साथ शिव तांडव स्त्रोत का प्रतिदिन पाठ करना श्रेष्ठ कहता है।

इसका निवारण करने के लिए अपने घर के पूजा स्थान पर भगवान श्रीकृष्ण की मोर पंख वाली मूर्ति का प्रतिदिन पूजन करना चाहिए।

बहते हुए जल में चाँदी से बनें नाग–नागिन के जोड़े को विधिपूर्वक प्रकार से प्रवाहित कर दें।

कालसर्प दोष निवारण के लिए राहु की शांति का उपाय रात में करे। राहु की पूजा शिव मंदिर में रात में या राहुकाल में करे।

ऐसे करें अपनें घर पर ही कालसर्प दोष की पूजा

काल सर्प दोष से पीड़ित जातक प्रत्येक सोमवार को एक शुभ मुहूर्त या फिर ब्रम्हा मुहूर्त में 4 बजे सादे जल में गंगाजल मिलाकर स्नान कर धुले हुए साफ सफेद रंग के कपड़े पहनें।

अच्छी तरह से पवित्र होकर घर में अगर शिवलिंग हो तो और भी अच्छा है अगर न होतो मिट्टी की छोटी सी शिवलिंग बनाकर, इस मंत्र से स्थापना, आह्वान करें।

शिवलिंग स्थापना मंत्र :

ऊँ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य, वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं, यज्ञ ग्वंग समिमं दधातु। विश्वे दासइह मादयन्तामोउम्प्रतिष्ठ।

ऊँ भूर्भव : भगवते शाम्भ सदाशिशाय आवाहयामि स्थापयामि। ततो नमस्कारं करोमिं।

अब शिवलिंग पर 11 साबुत चावल के दाने 'श्री राम' नाम का उच्चारण करते हुए अर्पित करें।

चावल अर्पित करते समय मन ही मन में आपकी जो भी इच्छा या मनोकामना हो उसे अपनें मन में बोलते रहें।

ऐसा लगातार 11 सोमवार तक निरन्तर करनें से अवश्य ही कालसर्प दोष से मुक्ति मिलेगी, और यह हमेशा ध्यान में रहे कि पूजा का समय एक ही होना चाहिए, बार–बार पूजा का समय नहीं बदलना चाहिए।

11 सोमवार तक एक ही समय एक ही स्थान पर किसी प्राचीन शिवलिंग के ऊपर एक मुट्ठी साबुत (खड़ा) गेहूँ, एक गीला नारियल व एक सिक्का ये सब सामग्री श्री राम नाम मंत्र का उच्चारण करते हुए ही अर्पित करें।

पूजा की इन सारी विधियों में यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए, कि जो सिक्का सोमवार को पूजा करते समय लिया गया है वही संख्या वाला सिक्का ही हर बार लेना है अगर आपने पूजा के लिए पहले सोमवार को 1 का सिक्का लिया था।

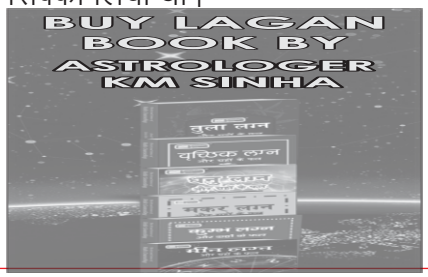

तो हर सोमवार को भी 1रु का

सिक्का ही लेना है 2 या 5 का नहीं

लेना है।
शिवलिंग पर सबसे पहले गेहूँ को अर्पण करें, फिर नारियल के ऊपर सिक्का रखकर अर्पण करें। इस पूरी क्रिया के दौरान श्री राम नाम का निरन्तर जाप करते रहें। यह 11 सोमवार तक करें।

कैसे बनता है काल सर्प दोष

व्यक्ति के जन्म के समय ग्रहो की दशा में जब राहु केतु आमने–सामने होते हैं और सारे ग्रह एक तरफ रहतें है, तो उसको कालसर्प योग कहा जाता है। जब किसी व्यक्ति की कुण्डली के भावों में सारे ग्रह दाहिनी ओर इकट्ठा हो तो यह कालसर्प योग नुकसानदायक नहीं होता हैं जब सारे ग्रह बाई ओर इकट्ठा रहें तो वह नुकसान दायक होता है। इसके आधार पर उन्होने काल सर्प दोष के 12 प्रकार भी बता दिए हैं। और कुछ ज्योतिषीयों ने तो ढ़ाई सौ के लगभग प्रकार बताएं हैं।

कुछ ज्योतिषियों नें काल सर्प दोष के 12 मुख्य प्रकार बताएं है :

1 अर्नत, 2 कुलिक, 3 वासुकि, 4 शंखपाल, 5 पद्म, 6 महापदम, 7 तक्षक, 8 कर्कोटक, 9 शंखनाद, 10 घातक 11 विशाक्त और 12 शेषनाग। अब ज्योतिषियों के अनुसार कुंडली में 12 तरह के कालसर्प दोष होनें के साथ ही राहू की दशा, अंतरदशा में अस्त–नीच या शत्रु राशि में बैठे ग्रह मारकेष या वे ग्रह जो वक्री हों, उनके चलते भी जातक को कष्टों का सामना करना पड़ सकता है।

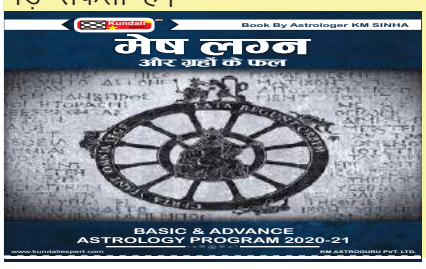

हिन्दू धर्म में पीपल के पेड़ के पूजन का क्या महत्व है। हिन्दू धर्म में पीपल के पेड़ के पूजन का क्या महत्व है

पीपल के पेड़ की पूजा का खास महत्व

पुराणों के अनुसार देखा जाए तो पीपल का वृक्ष भगवान विष्णु का रूप है इसलिए इसे धार्मिक क्षेत्र में श्रेष्ठ देवता के वृक्ष की पदवी मिली है और इसका विधि विधान से पूजा करना प्राचीन काल से ही चला आ रहा है, हिन्दू धर्म में विशेष रूप से अनेक अवसरों पर पीपल की पूजा करनें का विधान है, और हिन्दु धर्म की मान्यता यह है कि सोमपती अमावस्या के दिन पीपल के पेड़ में साक्षात् भगवान विष्णु ओर लक्ष्मी जी का वास होता है पुराणों में पीपल का बहुत महत्व बताया गया है।
इस मन्त्र को थोड़ा समझतें है :

मूल विश्णु : स्थितो नित्यं स्कन्धे केषव एव चः
नारायणस्तु षाखासु पत्रेशु भगवान हरिः...
फले श्च्युतो न सन्देह :सर्वदेवै : समान्वतः..
यस्याश्रयः पापसहस्त्रहन्ता भवेन्नृणां कामदुधो गुणाढयः

संस्कृत में लिखे इस शब्द का अर्थ है कि 'पीपल की जड़ में विष्णु, तने में केशव, शाखाओं में नारायण, पत्तों में भगवान हरि और फलो में सब देवताओं से युक्त अच्युत सदा निवास करते हैं और यह वृक्ष मूर्तिमान श्रीविष्णु स्वरूप है। पदम्पुराण के अनुसार पीपल को प्रणाम करने और उसकी परिक्रमा करनें से आयु लम्बी होती है और जो व्यक्ति इस वुक्ष को पानी देता है, वह सभी पापों से छुटकारा पाकर स्वर्ग को जाता है पीपल के वुक्ष में पितरों का वास माना गया है, इसमें सब तीर्थों का निवास भी होता है इसलिए मुंडन आदि संस्कार पीपल के पेड़ के नीचे करवाने का प्रचलन है।

शनि की साढ़ेसाती में पीपल वृक्ष के पूजन का महत्व

शनि की अपनी कुण्डली में साढ़े साती या ढ़ैय्या के कुप्रभाव से बचने के लिए हर शनिवार पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ाकर सात बार परिक्रमा करनी चाहिए और शाम के समय पेड़ के नीचे दीपक जलाना भी लाभकारी सिद्ध होता है, और आधुनिक वैज्ञानिकों ने इसे अनूठा वृक्ष भी कहा है जो कि दिन और रात यानि

जो कि मनुष्य के जीवन के लिए अत्यन्त ही आवश्यक है और यही कारण है कि शायद इस वृक्ष को देव वृक्ष का दर्जा दिया गया है, इस वृक्ष के प्रति पुराणों में इतनी आस्था है कि पीपल की निरन्तर पूजा अर्चना और परिक्रमा कर के जल चढ़ाने रहने से संतान की प्राप्ति होती है, पुत्र उत्पन्न होता है, पुण्य मिलता है, अदृश्य आत्माएं तृप्त होकर सहायक बन जाती है, पीपल की पेड़ के जड़ मे शनिवार को जल चढाने व दीपक जलानें से अनेक प्रकार के कष्टों का निवारण होता है, जब किसी की शनि की साढ़ेसाती चलती है तो पीपल के वुक्ष का पूजन तथा परिक्रमा की जाती है क्योंकि भगवान कृष्ण के अनुसार शनि की छाया इस पर रहती है, इसकी छाया यज्ञ हवन, पूजा–पाठ, कुरान कथा आदि के लिए श्रेष्ठ मानी गई है।

प्रत्येक शनिवार को पीपल के वृक्ष पर जल, कच्चा दूध थोड़ा चढ़ाकर, सात परिक्रमा करके सूर्य, शंकर, पीपल– इन तीनों देवताओं कि सविधि पूजा करें तथा चढ़े हुए जल को अपने नेत्रों में लगाएं और पितृ देवाय नमः भी 4 बार बोले तो राहु + केतु, शनि + पितृ दोष का निवारण होता है।

पीपल के पत्तों का भी पूजा पाठ में विशेष महत्व होता हैं इनके पत्तों से शुभ काम में वंदनवार भी बनाए जाते है, और धार्मिक श्रद्धालु लोग इस वुक्ष को अपने मंदिर परिसर में अवश्य लगाते है, और यह बात आपको जानना आवश्यक है कि सूर्योदय होने से पहले पीपल के वृक्ष पर दरिद्रता का वास रहता है, और सूर्योदय होने के बाद पीपल के वृक्ष पर लक्ष्मी जी का अधिकार होता है। इसलिए सूर्योदय के पहले पीपल की पूजा करना अच्छा नहीं माना गया है।

अतः पीपल के पेड़ को काटना अथवा नष्ट करना ब्रह्महत्या के समान पाप माना गया है, पीपल के वृक्ष के नीचें रात्रि को सोना अत्यन्त ही अशुभ होती है। इसकी वृक्ष छाया गर्मियो में ठंडी रहती है तथा सर्दियों में गर्म रहती है, इस वृक्ष के पत्ते, फल आदि सभी में औषधिय गुण रहने से यह हर प्रकार के रोगो का नाशक भी होता है उपरोक्त सभी कारणों से पीपल के वृक्ष का पूजन किया जाता है।

पीपल के वृक्ष की पूजा करने से प्रसन्न होते है वृहस्पति :

पीपल के वृक्ष को लेकर कई ज्योतिषीय गुण बोध मानें गयें है पीपल के वृक्ष को वृहस्पति ग्रह से जोड़ा जाता है, माना जाता है कि पीपल वृक्ष को वृहस्पति ग्रह से जोड़ा जाता है, माना जाता है कि पीपल वृक्ष का वृहस्पति से सीधा सम्बन्ध होता है। वृहस्पति को सभी ग्रहों में सबसे अधिक लाभ देने वाला ग्रह माना जाता है वृहस्पति धन का कारक ग्रह है, वुहस्पति जब भी किसी की कुंडली में प्रवेश करते है। उस व्यक्ति को पीपल की जड़ में जल चढ़ाने को कहा जाता है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार यह माना जाता है कि पीपल के वृक्ष में जल चढ़ाने से कुण्डली में मौजूद कमजोर वृहस्पति मजबूत हो जाता है। जयोतिषशास्त्र के अनुसार पीपल का वृक्ष देवता समान होता है। इसलिए पीपल के पेड़ को यथासम्भव उसके स्थान से काटा या हटाया नहीं जाना चाहिए, पीपल की पूजा से कार्यो और विचारों में स्थिरता आती है, मन का भटकना रूकता है, व्यक्ति की तार्किक क्षमता में वृद्धि होती है, पीपल की पूजा से विवाह में आ रही बाधाओं का निवारण होता है और विवाह शीघ्र सम्पन्न होता है। पीपल की पूजा से व्यक्ति में दान–धर्म की प्रवृत्ति बढ़ती है, पीपल की पूजा से आय का प्रवाह आसान बनता है और धन प्रवृत्ति की कई राहे खुलती है, पीपल की पूजा से व्यक्ति की बुद्धिमत्ता बढ़ती है और उसे दीर्घायु बनाती है

पीपल वृक्ष की पूजा के लाभ

शनिवार को पीपल वृक्ष की पूजा करनें से अपार सुख–समृद्धि मिलती है।

पीपल वृक्ष की हर रोज विशेष पूजा करने से अपार धन वैभव की प्राप्ति होती है।

पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर पूजा करनें के बाद श्री हनुमान चालीसा का पाठ करने वाले को घोर संकटो से मुक्ति मिलती है।

पीपल के वृक्ष के नीचे मीठा जल चढ़ाने के बाद सरसो के तेल का दीपक जलाकर 7 परिक्रमा करने से मनचाही इच्छा पूरी हेती है।

विशेषकर अमावस्या तिथि को पीपल के वृक्ष के नीचे दीपक जलाकर पंच मेवा

(पाँच प्रकार की मिठाई) अर्पित करनें से पितृ दोष में मुक्ति
मिलती है।

नए घर में प्रवेश करते समय जरूर ध्यान रखें ये बातें वरना हो सकता है भारी नुकसान

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार किसी भी स्थिति में घर चाहे स्वयं का हो या फिर दूसरो का प्रवेश करतें है तो नई आशा नए सपने नई उमंगों से व्यक्ति के मन में स्वाभाविक रूप से मन में हिलोर लेती हे और नया घर हमारे लिए मंगलमयी हो, प्रगति कारक हो, यश

सुख समृद्धि और सौभाग्य की सौगात दे यही हमेशा कामना होती है और भी कई सारी बाते ऐसी है जो व्यक्ति को घर मे प्रवेश करते वक्त रखनी चाहिए।
सबसे पहले गृह प्रवेश करने से पहले दिन, तिथि वार एवं नक्षत्र को ध्यान में रखते हुए, गृह प्रवेश के लिए शुभ मुहूर्त का ध्यान जरूर रखें। और एक विद्वान ब्राह्मण की सहायता लें, जो आपके घर का विधि पूर्वक मंत्रोच्चारण करके गृह में पहली बार प्रवेश करनें की पूजा को संपूर्ण करता है।
गृह प्रवेश के समय इन महीनों में माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ माह को गृह प्रवेश के लिए सबसे सही और शुभ समय बताया गया है और साल के यह जो महीने हैं आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, और पौष घर में प्रवेश करनें कि स्थिति में शुभ नही मानें गये है।
अगर सप्ताह के हिसाब से देखा जाए तो घर में प्रवेश करनें के लिए मंगलवार के दिन किसी भी स्थिति में गृह प्रवेश करना शुभ नही माना जाता है और किसी विशेष परिस्थितियों में रविवार और शनिवार के दिन भी गृह प्रवेश करना अच्छा नहीं माना जाता है। और सप्ताह के बाकी दिनो में से किसी भी दिन गृह प्रवेश किया जा सकता है। अतः अमावस्या व पूर्णिमा को छोड़कर शुक्लपक्ष 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, और 13 तिथियाँ घर में प्रवेश करने के लिए बहुत ही शुभ मानी जाती है।

ध्यान रहे घर में प्रवेश मंगल कलश के साथ ही करे शुभ माना जाता है
प्रवेश करते वक्त घर को बंदनवार, रंगोली, और फूलों से सजाएं।
और मंगल कलश मे शुद्ध जल भरकर उसमें आम या अशोक के आठ पत्तों के बीच नारियल रखें। और कलश व नारियल पर कुमकुम से स्वास्तिक का चिन्ह् बनाएं।
नए घर में प्रवेश के समय घर के स्वामी और स्वामिनी को पाँच मांगलिक वस्तुएँ नारियल, पीली हल्दी, गुड़, चावल, दूध अपनें साथ लेकर नए घर में प्रवेश करना चाहिए।
भगवान गणेश की मूर्ति, दक्षिणावर्ती शंख, श्री यंत्र को गृह प्रवेश वाले दिन घर में ले जाना चाहिए। और घर में मंगल गीतों के साथ नए घर में प्रवेश करना चाहिए।
ध्यान रहे गृह प्रवेश करते समय पुरूष पहले दाहिना पैर तथा स्त्रीं बायां पैर बढ़ाकर ही नए घर में प्रवेश करें।
इसके बाद भगवान गणेश जी का ध्यान करते हुए गणेश जी के मंत्रों के साथ घर के ईशान कोण में या फिर पूजा घर में कलश की स्थापना करें।
घर में प्रवेश के दौरान घर के पूजा के साथ–साथ रसोई घर में भी पूजन करनी चाहिए। चूल्हें, पानी रखनें के स्थान और स्टोर आदि में धूप, दीपक के साथ, कुमकुम, हल्दी, चावल आदि सें पूजन कर स्वास्तिक चिन्ह् बनाना चाहिए।
रसोई घर में पहले दिन गुड़ व हरी सब्जियाँ रखना शुभ माना जाता है। और चूल्हे को जलाकर सबसे पहले उस पर दूध उफानना चाहिए ऐसा करना घर में प्रवेश करने वाले लोगो के लिए शुभ माना जाता है।
सबसे पहले नये घर में प्रवेश करने के बाद मिष्ठान बनाकर उसका भगवान जी को भोग लगाना शुभ माना जाता है।
घर में प्रवेश करनें के बाद जो भी भोजन बनायें उस बने हुए भोजन से सबसे पहले भगवान को भोग लगाएं।
और कुछ भोजन को साफ–सुथरा अलग रखकर गौ माता, कौआ, कुत्ता चींटी आदि के निकटतम भोजन निकालकर रखें।
और प्रवेश करनें के दौरान ब्राह्मण को भोजन कराएं या फिर किसी गरीब भूखे आदमीं को भोजन करा दें। इससे घर में सुख, शांति व समृद्धि आती है व हर प्रकार के दोष दूर हो जातें हैं।

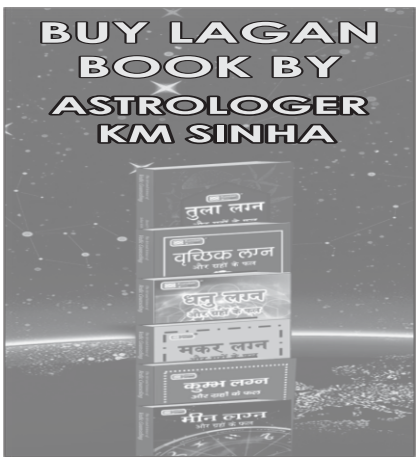

हाथ की रेखाएं चिन्हों के लक्षण ओर प्रभाव

जयोतिष शास्त्र में हाथों की रेखाओं को देखा जाए तो यह रेखाऐं बहुत कुछ कहती हैं आपके भविष्य और वर्तमान से जुड़ी हर एक बात आपकी हाथों की लकीरों में लिखा हुआ होता है और यह बात विशेष रूप से जाननी होगी की जिस प्रकार किसी व्यक्ति के दो स्वभाव एक जैसे नही होतें है, उसी प्रकार दो हाथ भी एक समान नही होतें हैं हाथ का अध्ययन प्रकृति की पुस्तक के अध्ययन के समान है, यह याद रखिए, प्रत्येक रेखा हर हाथ में एक जैसा फल नहीं देती। प्रत्येक का अर्थ भिन्न होता है। हाथों की बनावट तथा अन्य कारणों से भले ही उस रेखा का वैसा ही स्वरूप क्यों न हो, उसका प्रभाव बदल जाता है। हस्त रेखा शास्त्र में हाथ व्यक्ति की हथेली को पढ़कर उसके चरित्र या भविष्य के जीवन का मूल्यांकन किया जाता है। रेखाओं के सम्बन्ध में अनेक मत है। लेकिन जब हम इन मतों का परीक्षण करतें है तो हमें यथार्थ और सच्चाई का ज्ञान होता हैं डॉक्टर को ले लीजिए। प्रत्येक डॉक्टर के निदान और उपचार का ढ़ंग भिन्न होता है पैसे ही हथेली और उंगलियों का प्रत्येक क्षेत्र एक देवी या देवता से संबन्धित है और उस क्षेत्र की विशेषताएं विषय के इसी पहलू की प्रकृति का संकेत है। उदाहरण के लिए, अनामिका, अपालो, यूनानी, देवता के साथ जुड़ी हैं, अंगूठी वाली इस उंगली की विशेषताएं कला, संगीत, सौंदर्य शास्त्र, शोहरत, धन और सद्भाव सं संबंद्ध विषयों की विवेचना के दौरान देखी जाती हैं।

हाथ की रेखाओं की विशेषताएं

हाथ की रेखाएं वही अच्छी मानी जाती है जो स्पष्ट और सुअंकित हों। चौड़ी और पीली रेखाओं को अच्छा नहीं माना जाता है। और हाथ की रेखाओं पर अगर टुटी–फुटी चिन्ह पड़ी हुई है या उन पर द्विप–चिन्ह् या अन्य किसी भी प्रकार की अनियमितताएं है तो वह अशुभ मानी जातीं हैं। अगर कोई रेखाएं अत्यधिक निस्तेज व पीले रंग की हों तो उस व्यक्ति के स्वास्थ्य पर उनका दुष्प्रभाव पड़ता है, उनमें न तो कोई स्फूर्ति होती है न निर्णय लेनें की क्षमता। अगर रेखाएं लाल रंग की हों तो व्यक्ति उत्साही, आशावादी, स्थिर चित्त और कर्मशील होता है। पीले रंग की रेखाएं व्यक्ति की पित्त प्रधान प्रकृति की घातक होती हैं अतः उनसे यह भी पता चलता है कि व्यक्ति को यकृत–रोग की संभावना है। ऐसा व्यक्ति अपनें तक सीमित, संकुचित वृत्ति का, कम मिलनसार व घमण्डी होता है। अगर रेखाऐं गहरे रंग की (काली–सी) हों तो व्यक्ति गम्भीर और उदासीन रहता है। जिद्दी प्रकृति का होता है बदले की भावना उसके मन में हमेशा बनी रहती है और ऐसा व्यक्ति आसानी से किसी को क्षमा नहीं कर पाता। रेखाएँ धुँधली पड़ जाती है और बनती–बिगड़ती भी रहती है। हाथ की परीक्षा करते समय इस ओर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। हाथ में केवल एक अशुभ लक्षण देखकर किसी निर्णय पर पहुँच जाना अनुचित है यदि अशुभ लक्षण महत्वपूर्ण होगा तो प्रत्येक प्रधान रेखा पर उसका प्रभाव दिखाई दे जायेगा। इसलिए यह आवश्यक है कि दोनों हाथों की रेखाएं देखी जाएं। यदि अशुभ लक्षण की पुष्टि अन्य रेखाओं से हो जाए तो यह समझ लेना चाहिए कि वह संकट अवश्य आयेगा। लेकिन अगर वह व्यक्ति कोशिश करे तो उस संकट से अवश्य बचा जा सकता है।

हाथ की रेखाएं

हम किसी भी व्यक्ति के हाथ की लकीरों की बात करें तो सामान्य रूप से हाथ में सात प्रधान और सात अन्य रेखाऐं होती हैं नीचे दी गई जीतनी भी रेखाएं हे वह प्रधान रेखाएं मानी जाती है।

जीवन रेखा – जो शुक्र क्षेत्र को घेरे हुए होती है। शीर्ष रेखा – जो हाथ के बीचों–बीच एक छोर से दूसरे छोर तक जाती है।

हृदय रेखा – जो उंगलियों के मूल स्थल के नीचे शीर्ष रेखा के समानतर चलती है।

शुक्र मुद्रिका – जो हृदय रेखा से ऊपर होती है और सूर्य तथा शनि क्षेत्रों को घेरे हुए होती है। **स्वास्थ्य रेखा** – जो बुद्ध क्षेत्र से आरम्भ होकर हाथ के बीच से गुजरती हुई शनि–क्षेत्र की ओर जाती है।

हृदय रेखा :हस्त रेखा के अध्ययन में हृदय रेखा के अध्ययन को भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण और आदर्शपूर्ण स्थान प्राप्त है। हृदय देखा की स्थिती के भीतर मौजूद रोमांटिक संभावनाओं को निर्धारित करने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पुरूष का स्त्री के प्रति और स्त्री का पुरूष के प्रति आकर्षक स्वाभावक है। स्त्री पुरूष के बीच जो

प्रेम भावनाएं होती हैं इसका परिचय हमें हाथों में बनी हुई लकीरों के माध्यम से ही होता है और इसकी स्पष्ट जानकारी हमे हृदय रेखा से ही पता चलती है। स्त्री और पुरूष के बीच अच्छे सम्बन्धों में बाधाओं का आना व बाधाओं का किस कारण से आना यह सभी हस्त रेखा के हृदय रेखा से जाना जा सकता है

हृदय रेखा कहाँ से शुरू होती है :

हृदय रेखा के बार में अगर हमें जानना है या इन रेखाओं का अध्ययन करना है तो हमें अपनें हाथ की हथेली में हृदय रेखा को जानना अत्यन्त आवश्यक होता है। हृदय रेखा की शुरूआत तर्जनी उंगली के नीचे हथेली को पार करते हुए कनिष्ठा पर समाप्त होती है। यह रेखा जीवन रेखा और मस्तिष्क रेखा के ऊपर हथेली के ऊपरी भाग पर स्थित होती है। इसका आरम्भ तीन महत्वपूर्ण स्थानों गुरू पर्वत के मध्य से, पहली और दूसरी उंगलियों के बीच और शनि पर्वत के मध्य से होता है। इस रेखा का विश्लेषण करके यह भी बताया जा सकता है कि व्यक्ति के जीवन में प्रेम विवाह का योग है या नहीं। इसी प्रकार सात अन्य रेखाएं ये हैं –

मंगल रेखा – जो प्रथम क्षेत्र से आरम्भ होकर जीवन रेखा के भीतरी भाग में जाती हैं।

वासना रेखा – जो स्वास्थ्य रेखा के समानान्तर होती हैं।

अतीन्द्रिय ज्ञान रेखा – जो अर्द्धवृत्ताकार रूप में बुध क्षेत्र से चन्द्र क्षेत्र की ओर जाती हैं।

विवाह रेखा – जो बुध क्षेत्र पर आड़ी रेखा के रूप में होती हैं।

तीन मणिबंध रेखाएं – जो हाथ और कलाई के जोड़ पर होती है। जीवन रेखा को जीवनी या आयु की रेखा भी कहतें हैं

मस्तक रेखा – शीर्ष रेखा को मस्तक रेखा भी कहतें हैं।

शनि रेखा – भाग्य रेखा को शनि रेखा भी कहतें हैं।

निम्नलिखित जानकारी को इस चित्र के माध्यम से दर्शाया गया हैं।

दायां और बायां हाथ का महत्व

दायें और बाएं हाथ के अन्तर को समझना हस्त परीक्षा के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है अतः मनुष्य के दोनो हाथ एक दूसरे से भिन्न होतें है। यह अन्तर अधिकतर रेखाओं के रूपों, उनकी स्थितियों और चिन्हों के कारण होता है। यूं तो देखा जाए तो दोनो हाथो का अध्ययन कारना अत्यन्त ही आवश्यक होता है लेकिन दायें हाथ से जो भी सूचना मिले उसे विश्वसनीय माना

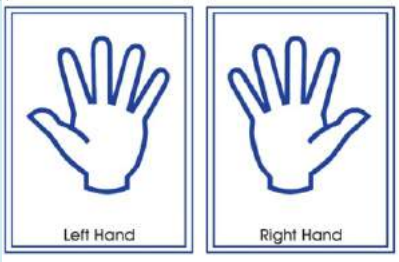

जाता है तथा माना यह जाता है कि बायां हाथ व्यक्ति को जन्म से मिलता है और पृथ्वी पर वह नया जीवन जब लेता है तो दायें हाथ का निर्माण वह स्वयं करता है। "बायां हाथ व्यक्ति के प्राकृतिक प्रभाव को प्रभावित करता है जबकि दायें हाथ में जन्म के बाद मिलनें वाले प्रशिक्षण, अनुभव और जीवन में जिस वातावरण का सामना किया हो उसके अनुसार रेखाएं और चिन्ह् होतें है। मस्तिष्क के विचारों और आदेशों का पालन जितना अधिक दायां हाथ करता है, उतना बायां हाथ नहीं करता है। मानव शरीर एक धीमे लेकिन विकास के दौर से गुजरता है। और उसमें जो भी परिवर्तन होता है उसके प्रभाव की छाप शरीर की सारी व्यवस्था पर पड़ती है इसलिए उचित यही होगा कि उन परिवर्तनो को देखने के लिए दायें हाथ की परीक्षा करनी चाहिए। क्योंकि भविष्य मे जब भी विकास से या अविकास से परिवर्तन होंगे इसी हाथ द्वारा प्रदर्शित होंगे। इसीलिए दोनो हाथों की साथ–साथ परीक्षा करना आवश्यक है। यदि भविष्यवाणी करनी है तो भी दाएं हाथ में होने वाले परिवर्तन को ध्यान में रखकर करें। अगर जो लोग बायें हाथ से ज्यादा काम करतें है उनका बाया हाथ ही उनके भविष्य कि लकीरें निर्धारित करतें हैं इसलिए बायें हाथ वालें लोगों का दायें हाथ उनका जन्मजात हाथ माना जाता है। और दोनो हाथ की रेखायें ज्यादा मात्रा में मिलती जुलती ही रहती हे परन्तु कुछ लोगों में परिवर्तन इतना धीमें–धीमें होता है कि रेखाओं में बहुत बहुत कम अन्तर दिखाई देता है। यदि योग्य जयोतिषियों द्वारा हाथ का अध्ययन ध्यान से किया जाए तो व्यक्ति के जीवन की घटनाओं, विचारों, कार्यो में होनें वाले परिवर्तनों के सम्बन्ध में पूरी–पूरी जानकारी प्राप्त हो सकती हैं तथा समय–समय पर लकीरों में होने वाले परिवर्तनों का भी पता लगाया जा सकता है।

जीवन रेखा

जिस प्रकार प्रकृति नें हमारें चेहरे पर नाक, कान के स्थान निर्धारित कियें है उसी प्रकार हाथ में भी व्यक्ति की जीवन रेखा, शीर्ष रेखा आदि अन्य चिन्हों के स्थान भी निश्चित किए गए है इसलिए यदि रेखाएँ अपने प्राकृतिक

स्थानों से हटकर असाधारण स्थितियां ग्रहण कर लें तों हमें भविष्य में आनें वाले असाधारण परिवर्तनों का प्रभाव पड़ सकता है तो फिर व्यक्ति के स्वास्थ्य पर उसका प्रभाव क्यों नहीं पड़ेगा। अतः इस बात का पता सभी को होगा कि मनुष्य के अन्दर कई सारे ऐसे कीटाणु या प्रवृत्तियां होती हैं जो किसी भी समय व्यक्ति मृत्यु का कारण बन सकती है। देखा जाए तो ये कीटाणु स्नायुओं के तालमेल को दूषित करतें हे

और उनका प्रभाव कहीं स्नायु के माध्यम से हाथ पर पड़ता है। हमारे पुराणों से चलती आ रही प्रथा के अनुसार हमारे जीवन में हस्त रेखा का बहुत ही महत्व है, जो कि हमारे घटना, जीवन, आयु, मृत्यु का वर्णन करती है, जीवन रेखा हमे विशेष रूप से आयु व जीवन से सम्बन्धित जानकारी प्रदान करती है।

जीवन रेखा कौन सी होती है ?

जीवन रेखा का स्थान हमारे हथेली में अंगूठे के आधार से प्रारम्भ होकर हथेली को पार करते हुए वृत्त के आकार में कलाई के पास आकर मिलती है, यह बहुत ही प्रभावशाली रेखा मानी जाती है। जीवन रेखा का घेराव अंगुठें के निचले क्षेत्र में होता है। यह शुक्र का क्षेत्र माना जाता है। यह रेखा तर्जनी और अंगूठे के मध्य से शुरू

होकर मणिबंध तक जाती है। अतः इसका फैलाव एक आर्क की तरह होता है।

हृदय रेखा :

हस्त रेखा के अध्ययन में हृदय रेखा के अध्ययन को भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण और आदर्शपूर्ण स्थान प्राप्त है। हृदय रेखा की स्थिती के भीतर मौजूद रोमांटिक संभावनाओं को निर्धारित करने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पुरूष का स्त्री के प्रति और स्त्री का पुरूष के प्रति आकर्षक स्वाभाविक है। स्त्री पुरूष के बीच जो प्रेम भावनाएं होती हैं इसका परिचय हमें हाथों में बनी हुई लकीरों के माध्यम से ही होता है और इसकी स्पष्ट जानकारी हमे हृयद रेखा से ही पता चलती है। स्त्री और पुरूष के बीच अच्छे सम्बन्धों में बाधाओं का आना व बाधाओं का किस कारण से आना यह सभी हस्त रेखा के हृदय रेखा से जाना जा सकता है

हृदय रेखा कहाँ से शुरू होती है :

हृदय रेखा के बारे में अगर हमें जानना है या इन रेखाओं का अध्ययन करना है तो हमें अपनें हाथ की हथेली में हृदय रेखा को जानना अत्यन्त आवश्यक होता है। हृदय रेखा की शुरूआत तर्जनी उंगली के नीचे हथेली को पार करते हुए कनिष्ठा पर समाप्त होती है। यह रेखा जीवन रेखा और मस्तिष्क रेखा के ऊपर हथेली के ऊपरी भाग पर स्थित होती है। इसका आरम्भ तीन महत्वपूर्ण स्थानों गुरू पर्वत के मध्य से, पहली और दूसरी उंगलियों के बीच और शनि पर्वत के मध्य से होता है। इस रेखा का विश्लेषण करके यह भी बताया जा

सकता है कि व्यक्ति के जीवन में प्रेम विवाह का योग है या नहीं।

भाग्य रेखा :

जैसे हस्त रेखा में जीवन रेखा, और हृदय रेखा अत्यन्त ही महत्वपूर्ण भूमिका निभातें है व्यक्ति के जीवन में वैसे ही व्यक्ति के जीवन में उसका भाग्य अत्यन्त ही आवश्यक होता है। अपने हस्त रेखा के अध्ययन में व्यक्ति का भाग्य कब साथ देगा कब नहीं देगा इस बात की जानकारी हम हस्त रेखा में स्थित भाग्य रेखा का अध्ययन करके जान सकतें है। यदि भाग्य रेखा को कोई अन्य रेखा न काटती हो तो भाग्य

रेखा में किसी प्रकार की रूकावट नहीं आती है। परन्तु यदि जिस बिन्दु पर रेखा भाग्य को काटती है तो उस व्यक्ति को भाग्य की हानि होती है। कुछ लोगों के हथेली में जीवन रेखा या भाग्य रेखा में से एक ही रेखा होती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति या तो एकदम भाग्यहीन होता है या फिर उच्चस्तर का भाग्यशाली होती है।

इन जगहों से शुरू होती है भाग्य रेखा

भाग्य रेखा व्यक्ति की हथेली में कलाई से आरंभ होकर मध्यमा अँगुली के नीचे स्थित शनि पर्वत तक पहुँचती हैं इसके अलावा भी भाग्य रेखा कई अन्य स्थानों से आरम्भ हो सकती है लेकिन खत्म शनि पर्वत पर ही होती है। आम तौर पर यह रेख मणिबन्ध, शुक्र पर्वत, जीवन रेखा चंद्र पर्वत या हृदय रेखा से शुरू हो सकती है अतः इन्ही रेखाओं के शुरू होने के स्थान से यह पता लगता है कि उस व्यक्ति का भाग्य कैसा रहेगा कैसा नहीं।

विवाह रेखा

सभी महत्वपूर्ण रेखाओं की तरह विवाह रेखा भी व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण रेखा होती है तथा इस रेखा

के माध्यम से ज्योतिषियों द्वारा यह पता चलता है, कि किसी भी व्यक्ति का विवाह कब होगा। अतः हमनें प्रेम–सम्बन्धी रेखाओं में विवाह की वास्तविक रेखा को भी पाया है विवाह होने या न होने के लिए कौन सा समय निश्चित है कौन सा समय नहीं इसका उत्तर तो व्यक्ति की हथेली में छुपी लकीरें ही दे सकती हे। बुध क्षेत्र पर स्थित जो विवाह रेखाएं होती है उससे यह पता कि विवाह किस उम्र में होनें की सम्भावना है। जब कभी भी विवाह रेखा हृदय रेखा के बिल्कुल निकट हो, तो विवाह 14 से 18 वर्ष की उम्र में होना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति की हथेली में विवाह रेखा बुध क्षेत्र के मध्य में हो तो 21 से 28 वर्ष की उम्र में होता है। यदि रेखा बुध क्षेत्र पर तीन चौथाई पर हो तो विवाह 28 से 35 वर्ष की उम्र में होता है। विशेष रूप से बुध क्षेत्र पर विवाह रेखा सीधी, बिना टूट–फूट के या क्रॉस चिन्ह् के बनी होनी चाहिए।

कहाँ होती है विवाह रेखा ?

विवाह रेखा लिटिल फिंगर (सबसे छोटी अंगुली) के नीचे वाले भाग में होती हे इस क्षेत्र को बुध पर्वत कहतें है। बुध पर्वत के अन्त में कुछ आड़ी गहरी रेखाएं होती है यह विवाह रेखा कहलाती है, या फिर यूं कहें की क्षैतिज रेखाएं कनिष्ठा के बिल्कुल नीचे और हृदय रेखा के ऊपर स्थित विवाह रेखा कहलाती है यह रेखाए रिश्तों में आत्मीयता, वैवाहिक जीवन में खुशी, वैवाहिक दंपती के बीच प्रेम और स्नेह के अस्तित्व को दर्शाता है।

सन्तान रेखाएं

सभी महत्वपूर्ण रेखाओं की तरह सन्तान की रेखाएं भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। अतः सन्तान के सम्बन्ध में विचार करते समय हाथ के अन्य सम्बन्धित भागों की परिक्षण करना जरूरी है। उदाहरण के लिए अगर शुक्र जीवन रेखा के कारण संकीर्ण हो गया हैं और समुचित रूप से उन्नत नहीं है तो उस व्यक्ति में उस व्यक्ति की अपेक्षा सन्तान की उत्पादन शक्ति कम होती है। जिसका शुक्र क्षेत्र विस्तृत और उन्नत हो।

संतान रेखा कौन सी होती है

संतान रेखा का स्थान जो है वह छोटी अंगुली (कनिष्ठा) की जड़ पर विवाह रेखा के ऊपर खड़ी रेखाएं संतान रेखा कहलाती है, तथा अंगूठा वाला क्षेत्र पित्र क्षेत्र कहलाता है और अंगूठे के नीचे शुक्र पर्वत होता है। जो संतान सम्बन्धित प्रश्न–उत्तर देता है। इस रेखा का सीधा सम्बन्ध संतान से होता है जैसे आपके कितने बच्चे होंगे, पुत्र पुत्री के जन्म का विवरण, संतान, का माता–पिता की ओर लगाव को दर्शाना, बच्चों से जुड़े प्रश्नों के उत्तर देने वाली रेखा और साथ–ही–साथ आपके संतान के स्वास्थ्य के बारे में भी बहुत सी जानकारी प्रदान कराता है।

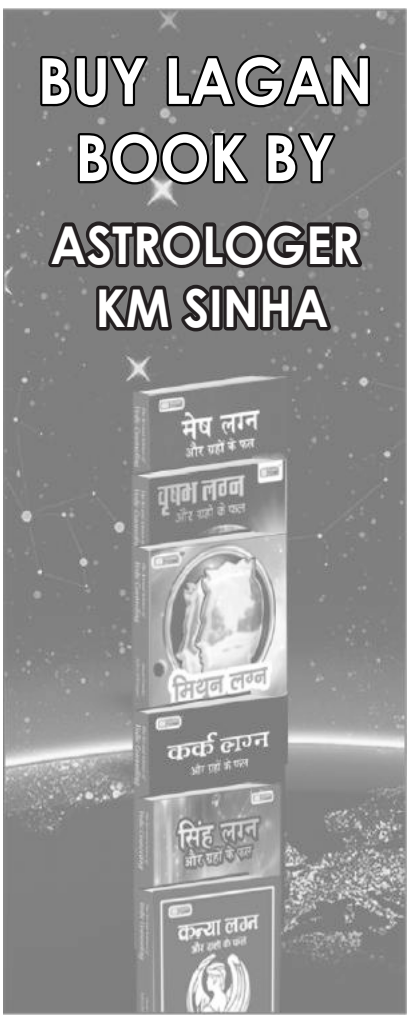

ग्रहों की अवस्था से दशा फल

ग्रहावस्था से दशाफल :

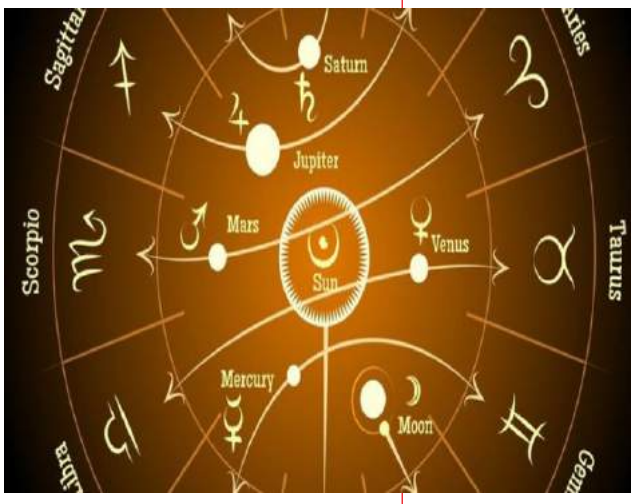

त्रयंषदंषे त्रिभाग चं कल्पयित्वा पृथक्पृथक् ।

विशमादिक्रमेणैव समें वै विपरीतहकम् ।।१।।

विज्ञाय प्रथमं पुंसा जाग्रत्स्वप्नसुशुप्तिकाः ।

विशेशेण परीक्ष्यैवं जागरः कार्यसाधकः ।।२।।

स्वप्नावस्था मध्यफला विज्ञेया हिं कल्पितम् ।।

निष्फला चरमावस्था फलमेवं हिं कल्पितम् ।।३।।

ग्रहों की अवस्था से हम दशाफल की बात करते है तो किसी व्यक्ति की राशि के 30 अंशो में 10–10 अंशो के 3 विभाग कर लें। विशम् राशि में 0–10 तक जाग्रत; 11–20 तक स्वप्न व 21–30 तक सुशुप्ति अवस्था होगी। सम राशियों में 0–10 तक सुशुप्ति, 11–20 तक स्वप्न तथा 21–30 तक जाग्रत अवस्था रहेगी। इनमें से जाग्रत अवस्था बालग्रह कार्यसिद्धदायक है। स्वप्नावस्था में मध्यम फल तथा सुषुप्ति अवस्था प्रायः निष्फल होती है। कुछ लोगों के वर्ष के अनुभव के अनुसार माना जाता है कि यह अवस्थाएँ नाम मात्र की हैं और ऐसा लगता है की इन्हें बहुत साधारण महत्व ही देना चाहिए। इसके आगे इस ग्रहावस्था से बताये गये दशाफल में शयनादि व दीप्तादि अवस्थाएँ फलदायी रहेंगी।

दीप्तादि अवस्थाफल :

1. दीप्तादि अवस्था में यह अपने उच्च में लीप्त होता है। 2. स्वक्षेत्र में स्वस्थ 3. अधिमित्र राशि में मुदित 4. मित्रराशि में शान्त 5. सम–क्षेत्र में दीन 6. शत्रु क्षेत्र में दुःखित 7. पाप्युक्त होनें पर विकल 8. पराजित ग्रह खल 9. सूर्य के साथ कोपी कुपित अवस्था होती है।

दीप्तह दशाफल :

दीप्ता अवस्था अर्थात् उच्च में हुए ग्रह की दशा में अपने परिवेश अपने पर्यावरण व वातावरण, कुलानुमान से राज्यलाभ, पद में उन्नति, और उनकी आर्थिक उन्नति व भौतिक उन्नति,उत्साहवृद्धि, शूरता, धन, वाहन का सुख, सत्री पुत्रों का सुख, बन्धुओं में सम्मान व सम्भव होन पर विद्या की प्राप्ति होती है।

स्वास्थ दशा फल :

स्वास्थ क्षेत्र फल की दशा में शारीरिक सुख की प्राप्ति होती है, राजपक्ष से धनलाभ होता है, धन का सुख सदैव मिलता है, विद्या व यश की वृद्धि होती है जिसका दुनिया में महत्व होता है, लोकप्रियता, स्त्री पुत्र, धन व सम्पत्ति की प्राप्ति होती है व सुख प्रदान होता है।

मुदित दशा फल :

प्रसन्न आधिमित्र क्षेत्री ग्रह की दशा में वस्त्रआभूषणों की प्राप्ति होती है इस दशाफल में अच्छा रहन–सहन, स्त्री पुत्र व धन के सुख की प्राप्ति होती है, मन जो है, वह धीरे होनें की अवस्था या स्थिरता में काम करता है। धार्मिक कार्यो को प्रेम से करनें में सहयोग मिलता है। गज आदि के वाहनों का आपको सुख मिलेगा व अन्य भौतिक सुख भी प्राप्त होंगे।

शान्त दशा फल

शान्त दशा फल में मित्रक्षेत्री ग्रह की दशा में सुख में वृद्धि होगी, धर्म में वृद्धि होगी, साथ–साथ भूमि और जायदाद का सुख भी प्राप्त होता है, स्त्री सुख, वाहन सुख भी होते है और आपके विद्या ग्रहण करने के माध्यम से लाभ व प्रसिद्धि मिलती है और धर्मशास्त्रों के फलों का लाभ होता है। अतः इस दशा फल वाले लोगों को अनेक बड़े लोगों से व राजाओं से मान–सम्मान की प्राप्ति भी होती हैं।

दीन दशा फल :

दीन दशा फल के अनुसार समक्षेत्री ग्रह की दशा में अपने पद या अपनें स्थान से परिवर्तन हो सकते है, और आपका विषम स्थिति में ट्रांसफर भी हो सकता है, जगह छोड़ने के चांस यहाँ बढ़ जातें है इनके अपनें भाई व धर्म का उदय, होना, धन में वृद्धि होना, इसके योग और मान–सम्मान भी होतें है लेकिन किसी व्यक्ति के 5. 7 भावों में यह सूर्य हो तो पहली संतान को हमेशा कष्ट होता हैं।

बन्धुओं से विरोध की सम्भावना रहती है, और खराब निन्दा करनें वाले लोगो से जीवनयापन होती है, व लोगो द्वारा उपेक्षित रोग से पीड़ा होती है।

दु:खित दशा फल

दु:खित दशा फलो के अनुसार शत्रुक्षेत्री ग्रह की दशा में अनेक प्रकार के दु:ख, भाई बन्धुओ द्वारा परित्याग की भावना रहेगी, चोर, आग व राज्य के विभागों से इस जातक को निरन्तर भय रहता है।

विकल दशा फल

विकल दशा फल के पापयुक्त ग्रह की दशा की दशा में मन में बेचैनी तथा व्याकुलता बनी रहती है ऐसे लोगो को इस दशा में फल की दृष्टि में शारीरिक कष्ट होते है, ऐसे दशा में मित्रों के पक्ष से शोक समाचार मिलता है। अतः विशेष रूप से स्त्री, पुत्र की हानि भी होती है, ऐसी दशा में वाहन व उपभोक्ता का सामानों की चोरी का भय रहता है।

खल दशा फल

खल दशा फल के अनुसार उनके पराजित ग्रह की दशा में कलह, किसी से दूर रहना, और ऐसी दशा में शत्रुओं से पीड़ा होती हे, तथा धन और सम्पत्ति की हानि होती है, और अपनें ही लोगों के बीच में हर प्रकार से निन्दा होती है।

कुपित दशा फल

कुपित दशा फल के अनुसार अस्त हुए ग्रह की दशा में बहुत सी परेशानियाँ ऐसी हैं जो लगातार आती जाती रहती है और इस दशा के अनुसार पापकर्मो का उदय भी होता है। तथा ऐसी दशा में विद्या, स्त्री, धन, तथा पुत्र के सहयोगियों से धोखा खाना पड़ता हैं ऐसी सन्तान को विशेष कष्ट होता है, तथा नेत्ररोग भी हो सकतें हैं।

शयनादि अवस्था दशा

1 शयन 2 उपवेशन 3 नेत्रपाणि 4 प्रकाशन 5 गमन 6 आगमन 7 सभावास 8 आगम 9 भोजन 10 कौतुक 12 निद्रा ये शयनादि की 12 अवस्थाएँ हैं। इनमें चेष्टा–विचेष्टा व दृष्टि के अनुसार विशेष फल होता है।

सूर्यावस्था दशाफल

शयनादि दशा के सूर्यावस्था दशा में वित्त, अपच पैरों में दर्द या सूजन हो सकता है अथवा गुप्त रोग होनें की सम्भावना भी होती है।

उपवेशनावस्था की दशा में सूर्यावस्था दशाफल के अनुसार कठिन कार्य करने वाले तथा परिश्रमी होंगे। इस दशा के लोगों में दरिद्रता व दु:ख में अधीनता होती है।

नेत्रपाणि सूर्य की दशा में यदि सूर्य 5, 9, 7,

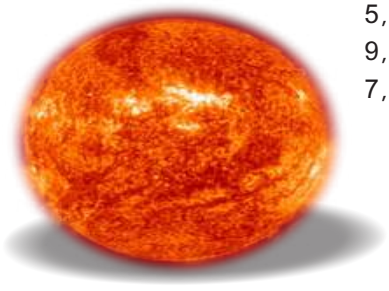

10, में हो तो सारे सुख मिलतें है। और उन्नति भी होती है इस दशा के लोगों में धन की वृद्धि होती है तथा मान्यता मिलती हैं। यदि किसी जातक के अन्य स्थानों में सूर्य हो तो क्रोध, द्वेशभाव व नेत्र–दोष हो तो है तथा जल के कारण उत्पन्न रोग होतें है।

प्रकाश अवस्था में सूर्य दशा में पुण्य व धर्म का उदय, होना, धन में वृद्धि होना, इसके योग और मान–सम्मान भी होतें है लेकिन किसी व्यक्ति के 5. 7 भावों में यह सूर्य हो तो पहली संतान को हमेशा कष्ट होता हैं।

जानें की अवस्था में सूर्य दशा में परदेश में रहने के कारण पैरों में रोग की पीड़ा उत्पन्न हो सकती है।

और सूर्य दशा के आने की अवस्था में लोगों की कंजूसी, बढ़ा–चढ़ाकर बात करने वाले लोग होतें है तथा ऐसे लोगों को दूसरे की पत्नी में आकर्षण होता है। यदि ऐसा सूर्य 7. 12 भापों में हो तो कम धन प्राप्त होता हैं और सन्तान की हानि होती है।

अगर सूर्य कभी स्वभावसति अवस्था दशा में हो तो धन में वृद्धि होती है, विद्यार्थी में विद्या की बढ़ोत्तरी होती हैं मान–सम्मान बढ़ता है।

सूर्य दशा की आनें की अवस्था में दु:ख होनें के साथ–साथ चिढ़ भी होता हैं लेकिन धन में हमेशा वृद्धि होती हैं

सूर्य दशा होने के कारण भोजन करने की अवस्था में स्त्री, पुत्र और धन की हानि होती है तथा जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द रहता है।

नृत्यलिव्यावस्था में सूर्य की दशा होनें के कारण इनमें बहुत अधिक विद्वान होने का भाव रहता है, तथा धन और धर्म में वृद्धि होती है लेकिन शरीर में हमेशा दर्द रहता हैं।

चन्द्रावस्था दशा फल

शयनावस्था की चन्द्र दशा में सर्दी से पीड़ा होनें की सम्भावना रहेगी और काम–वासना में भी वृद्धि होती है धन–हानि के योग भी बनतें है और शरीर में किसी प्रकार का संक्रमण होता है।

चन्द्र–दशा में किसी कार्य में जुटे रहनें की अवस्था में रोग, निर्धनता, होता है तथा बुद्धि का भ्रम होना व्यर्थ के कार्यो में प्रवृति होती है।

चन्द्र दशा के नेत्रपाणि अवस्था में बड़ा रोग होने की सम्भावना होती है। और बहुत अधिक बोलने से ऐसे लोगो को हानि होती है और कुकर्म प्रवृति होती है।

प्रकाशना वस्था के चन्द्र–दशा में होने वाले लोग शरीर के सुख, तीर्थयात्राएं करनें के योग तथा धन में वृद्धि होती है।

घूमनें की अवस्था दशा में परदेशवासी होते हैं धन में कमी रहती है क्रूर कार्य में प्रवृत्ति होती हैं, नेत्र–रोग होनें की सम्भावना होने के कारण व्यर्थ का भय रहता है और शरीर में शूल पीड़ा–रोग होने का भय रहता है।

चन्द्र–दशा में आनें की अवस्था में पैरों में अत्यधिक कष्ट होता है, मानव सम्मान में वृद्धि होती है और मन में सन्तोष होता है।

चन्द्र–दशा अगर सभावस्था में हो तो दान–धर्म में वृद्धि होती है, इनका राज–सम्मान उत्तम होता है और सामाजिक स्तर काफी ऊँचा होता है।

चन्द्र–दशा अगर आनें की अवस्था में हो तो धर्म–बुद्धि, धन–वृद्धि होती है परन्तु ऐसा चन्द्रमा अगर कृष्ण पक्ष का हो तो कन्या, सन्तान का जन्म व पत्नी के अतिरिक्त स्त्री के प्रति आकर्षण होना सम्भाविक होता है।

चन्द्र–दशा अगर भोजनावस्था में हो तो अति क्षीण चन्द्रमा रहित, चन्द्र होने पर, वाहन, स्त्री, पुत्र, धन सम्मान होते हैं अति क्षीण चन्द्र हो तो सर्पादि, सरकने वाले तथा रेंगने वाले कीटो से हमेशा भय रहता है।

चन्द्र दशा अगर नृत्यलिप्सागत चन्द्रदशा में पुष्ट (बलवान) चन्द्र हो तो धन–मान, सुख में वृद्धि होती है तथा अति क्षीण चन्द्र हो तो पैरों में कष्ट होतें हैं तथा रोग से शोक अदि झेलने पड़तें है।

चन्द्र दशा अगर कौतुकावस्था में हो तो धन में वृद्धि होती है तथा पुत्र और यश में प्रतिष्ठा के अवसर बढ़तें हैं और यदि इस दशा में चन्द्र 9.10 भावगत हों तो यह फल विशेष होती है।

अगर चन्द्र दशा निद्रावस्था में हो तो रोग, शोक, दुःख कष्ट आदि होते है लेकिन इन दशा में चन्द्र 5.7 भावों में हो तो कुल मिलाकर अन्त में भला ही होता है।

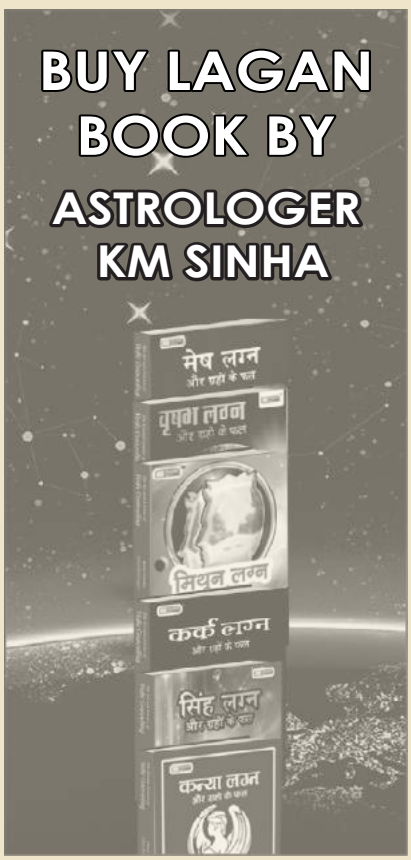

प्रश्न कुण्डली से जानें अपना भविष्य

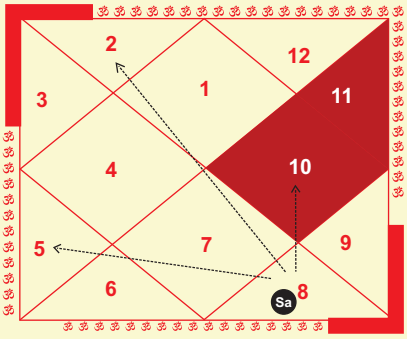

प्रश्न कुण्डली समस्या और समाधान

देखा जाए तो बहुत से मायनों में प्रश्न ज्योतिष का भी ज्योतिषशास्त्र में अत्यधिक महत्व है। शास्त्रों में प्रश्न के समय व स्थानों पर ज्योतिषी प्रश्न करनें वाले की समस्या का समाधान ढूँढता है। और अब प्रश्न यह उठता है तथा लोगो का मानना भी यही है कि जब जातक के पास जन्मकुण्डली उपस्थित है तो इसमें प्रश्न ज्योतिष की क्या आवश्यता पड़ गई ?

अर्थात् यह मानी जानी बात है की जब व्यक्ति के पास उस व्यक्ति के जन्म समय, दिनांक दिन और स्थान की जानकारी नही है तो ऐसे में किसी के भी भविष्य के विषय में कुछ भी कहना या बतना बहुत ही मुश्किल हो जाता है। फिर भी ज्योतिषी विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल करके उनके समस्याओं का प्रश्न ज्योतिष का सहारा लेना पडता है। और हर मायनों में कहा यह भी जाता है कि प्रश्न शास्त्र के बिना ज्योतिष और ज्योतिषी दोनो अधूरें हैं।

प्रश्न कुण्डली की उपयोगिता और महत्व :

योग्य ज्योतिषी या ज्योतिषाचार्य किसी व्यक्ति की जन्मकुण्डली की जीवन यात्रा में आयु के मार्ग पर बढ़ते हुए सुख–दुःख के जितने भी पड़ाव है उनको बताने का कार्य करते है। किन्तु प्रश्न कुण्डली तो बिना अधिक जटिल गणना किये इच्छा और प्रयत्न के संभावित परिणाम की सार्थक जानकारी प्रदान करती हैं। कई बार किसी की भी जन्मकुण्डली देते वक्त ऐसा होता है की जन्मकुण्डली सही–सही उपलब्ध नही हो जाती है और कभी–कभी लोगों कों जन्म तिथी पता होती है और जन्म समय नहीं पता होता तो इसके कारण जन्म कुण्डली की सही जानकारी के अभाव होनें के कारण भविष्य में कहनें वाले कथन सही नहीं हो पाते हैं और बहुत बार ऐसा भी होता है की व्यक्ति के जन्म का समय और दिन भी नही पता होता है ऐसी परिस्थिति में जन्मकुंडली बन नहीं पाती है परन्तु व्यक्ति अपनें मन के अन्दर उठ रहे प्रश्नों को जाननें के लिए हमेशा व्याकुल रहता है। और इन्ही सारी बातों को जाननें का एक मात्र उपाय ज्योतिषीयों के पास प्रश्न ज्योतिष ही होता है जिसके अनुसार कुण्डली में छुपे प्रश्नों का उत्तर व्यक्ति को दे सकतें है।

जानें जन्मकुण्डली और प्रश्न : कुण्डली में भेद

हम देखतें है की जन्मकुण्डली महादशा, अंतरदशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा के आधार पर यह ग्रहों का विश्लेषण करते हुए जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में संभावित शुभ अथवा अशुभ परिणाम का संकेत तो दे सकती है, परन्तु तात्कालिक समस्या बहुत ही इसके सीमा क्षेत्र से परे रह जाती है वहीं प्रश्न कुण्डली है अर्थात जन्म कुण्डली जितना बता सकती है उससे कहीं ज्यादा प्रश्न कुण्डली बता सकती है। अगर सामान्य तौर पर कहा जाए तो जन्मकुण्डली की सीमा जहाँ समाप्त हो जाती है वहीं से प्रश्न कुण्डली की सीमा प्रारम्भ हो जाती है। इसके बारे में स्पष्ट रूप से थोड़ा जान लेते है उदाहरण के लिए जैसे किसी जातक की जन्म कुण्डली में विवाह के बारे में पता करना हो तो उस लड़के या लड़की का रंग रूप और स्वभाव जन्मकुण्डली तो बता सकती है परन्तु जिस कन्या के विवाह का प्रस्ताव उसके पास आया है उससे विवाह होगा या नहीं ? यदि विवाह हो भी जाए हो जीवन अच्छा चलेगा या नहीं ? अगर किसी करण से मुकदमा चल रहा है किसी मामले में तो उसमे विजय होगी या पराजय ? इस प्रश्नों का उत्तर तो केवल प्रश्न कुण्डली के माध्यम से ही दी जा सकती है यहाँ जन्म–कुण्डली किसी भी प्रकार से फलदायी नहीं रहती है।

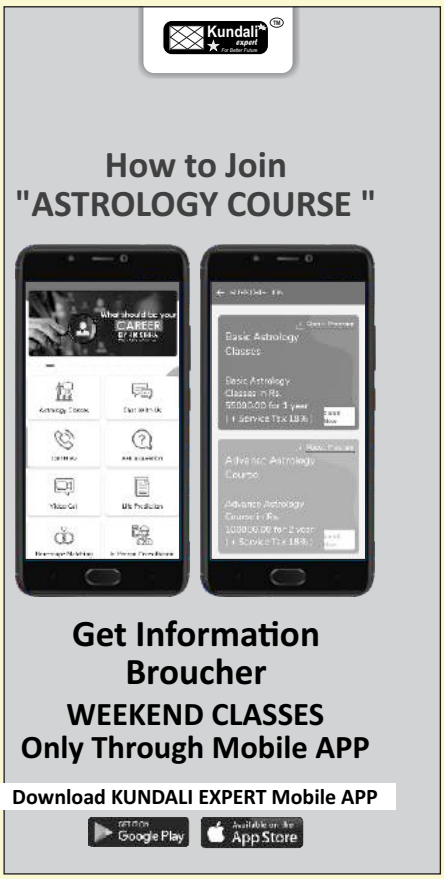

आखिर प्रश्न शास्त्र ही क्यों चुनतें है ज्योतिषी?

ज्योतिषशास्त्र में एक बात आपको जानना आवश्यक है की जितना हमारे भविष्य को जाननें के लिए जन्मकुण्डली उपयोगी है उतना ही प्रश्न शास्त्र का भी ज्योतिषशास्त्र में बहुत महत्व है यह एक ऐसा शास्त्र है जिसकी सहायता से जटिल से जटिल और विषम समस्याओं को बड़ी सरलता से सुलझाया जा सकता है। देखा जाए तो प्रश्न कुण्डली जन्मकुण्डली की कार्य सीमाओं से कहीं ज्यादा आगे है। जहाँ जन्मकुण्डली समाप्त होती है शायद वहीं से प्रश्न कुण्डली प्रारम्भ होती हैं जयोतिष विज्ञान की प्रश्न कुण्डली एक ऐसी विधा है जिसके माध्यम से किसी भी जातक की जन्मकुण्डली का एकदम सटीक उत्तर पाया जा सकता है। अर्थात् प्रश्न करने वाला जातक अपने प्रश्नों को ज्योतिष के सामने रखता है उसके बाद प्रश्न कालीन समय, तिथि तथा स्थान के आधार पर प्रश्न कुण्डली का निर्माण किया जाता है। और फिर इसी प्रश्न कुण्डली के आधार पर प्रश्न को आधार मानकर ही कुण्डली का विश्लेषण कर उसके फलों को बताया जाता है। प्रश्न कुण्डली गतिशील रहती है वह काल समय के साथ निरन्तर प्रवाहशील है। अतः प्रत्येक प्रश्न के लिए एक नई कुण्डली बनाई जाती है। प्रश्न कुण्डली में प्रश्न के अनुसार कुंण्डली के कारकतत्व व भाव फल बदल जाता है।

प्रश्न कुण्डली से सीखें प्रश्नों के सही उत्तर देना

॥ द्वादश भाव नाम / प्रश्न कुण्डली ॥

नीचे दिये गये इस कुण्डली से पता

करतें है कि प्रश्न कुण्डली को देखकर प्रश्नों के उत्तर कैसे देते हैं।

॥ द्वादश भाव नाम / प्रश्न कुण्डली ॥

आज हम नीचे दिए गए इस कुण्डली में देखेंगे की द्वादश भाव के नाम क्या–क्या है और कैसे उनमें कौन से ग्रह बैठे हों किस ग्रह की दृष्टि हो तो कैसे हम विचाार करें, अर्थात् प्रश्न कुण्डली वह होती है जो वर्तमान समय की कुण्डली है यानि अभी जो समय बीत रहा है या व्यतीत हो रहा है, इसी समय की कुण्डली के चक्र को बनाना प्रश्न कुण्डली कहलाता है। उदाहरण के लिए हम नीचे दीये गये कुण्डली को समझेंगे सबसे पहले जन्म कुण्डली में हम सफलता की बात करतें है तो सफलता के लिए हम चतुर्थ भाव को देखतें है, बस हमें सफलता के लिए यह देखना होता है कि चतुर्थ भाव में कौन सी राशि है, जैसे हम इस कुण्डली के चतुर्थ भाव में कौन सी राशि है, जैसे हम इस कुण्डली के चतुर्थ भाव को देखें तो इस चतुर्थ भाग में मकर राशि है तो हम कह सकतें हैं कि हाँ मकर राशि के जातक शीघ्र ही सफलता पायेंगे। क्योंकि चतुर्थ भाव चर लग्न है। यह कुण्डली वर्तमान समय की हैं जिसके अनुसार यह प्रश्न कुण्डली तैयार की गई है इस कुण्डली में 7 तुला लग्न की कुण्डली चर लग्न की है लग्न में गुरू और मंगल बैठे हैं। और अगर आपसे कोई पूछता है कि तुला लग्न की कुण्डली में ट्राँसफर के योग बन रहें है या नही तो आपको यह बताना है कि काम आपका बननें वाला है क्योंकि लग्नेष जो है। वो पराक्रम भाव में बैठै है। वो भाव जिसके बारे में बात–चीत चल रही हो वो या तो अपनें स्वामी से दृष्ट हो अथवा युत हो तो वह ज्यादा बलि हो जाता है। इस कुण्डली में स्वामी से दृष्ट और युत तो नहीं हैं तो आप कह सकतें है की उस भाव पर सौम्य ग्रह की दृष्टि अथवा सौम्य ग्रह बैठें हों तब भी उस भाव की वृद्धि हो जायेगी। और कहा जाता है यदि कुण्डली में पाप ग्रह हो अथवा पाप गृह की दृष्टि हो तो उस भाव की वह हानि कर देगा। इस कुण्डली के अगर 12 भाव की बात करे तो इन्हें क्या–क्या कहतें है? आइए इन्हें जान लेतें हैं। इस प्रश्न कुण्डली के प्रथम भाव को तनु कहतें है, (अर्थात् आपका तन आप), इसके द्वितीय भाव को धन कहतें हैं, इसके तीसरे भाव को सहज कहतें है (अर्थात् पराक्रम या आपका छोटा भाई), इसके चौथे भाव को मुहूर्त (अर्थात् आपके अपनें) कहतें है, इसके पाँचवे भाव को आपका पुत्र कहतें हैं (यहाँ से ज्ञान का भी विचार होता है), इसके छठे भाग को रिपु कहते हैं (यहाँ से शत्रु का, ऋण का, रोग का) विचार होता है। बात वगैरह, कमर से नीचे के भागों का विचार यहाँ से होता हैं इसके आँठवें भाव में (मुत्यु की विचार, पराविद्याओं का ज्ञान, तन्त्र–मन्त्र का विज्ञान, आकस्मिक धन लाभ, आकस्मिक मृत्यु का ज्ञान यहाँ से होता है। इसके नवम् भाव को धर्म कहतें है (यहाँ से धर्म का विचार किया जाता हैं) कुण्डली के के दशम् भाव को कर्म कहतें हैं (यहाँ कर्म से सम्बन्धित बातों की चर्चा की जाती है), इसके एकादश भाव को आय कहतें है (आय–व्यय से सम्बन्धित बातों की चर्चा की जाती है।) और इसके द्वादश भाव को धनु कहतें है अतः आप यह समझ गये होंगे की प्रश्न कुण्डली में कैसे भावों के माध्यम से प्रश्न पूछे जातें हैं इस प्रश्न कुण्डली के माध्यम से आप किसी के भी प्रश्नों का उत्तर दे सकतें हैं।

कान की संरचना पर भविष्यवाणी

देखा जाए तो ज्योतिषशास्त्र के अनुसार हर मनुष्य के अलग–अलग अंग की संरचना के अनुसार उनका व्यक्तित्व अलग–अलग होता है और हर अंग के अलग–अलग बनावट के कारण ही आपका यह व्यक्तित्व आपके कई राज खोलता है ज्योतिषशास्त्र में आइए हम जानतें है की हमारे कान के अलग–अलग बनावट से अपना भाग्य विचार, कैसे हैं आप, क्या कहता है। सामुद्रिक शास्त्र विद्या के अनुसार इनका अध्ययन निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया जा सकता है।

लम्बे कान

जिन जातक के कान और लोगों कि तुलना में लम्बे प्रतीत हों तो वे सामान्य रूप से बहुत ही पवित्र आचरण के होतें है स्वभाव से डरपोक होते है "लम्बे कान वाले पुरूष जातक हमेशा तनावरहित, घर परिवार में चलनें वाले होते है ऐसे व्यक्ति झूठ, फरेब, छल, कपट से कोसो दूर रहनें वाले होते है अपने काम से काम रखने वाले होते है तथा ऐसे व्यक्ति मेहनती और व्यवहारिक मानें जाते हैं "बात करें लम्बे कानों वाले स्त्री जातक कि तो यह पुरूषों के समान आचरण करने वाली, अपने ज्ञान, बुद्धि विवेक का प्रयोग न करके मात्र पति की सूचना का पालन करनें वाली, प्यार करने वाली, सुख समृद्धि वाली होती है तथा इनका दिमाग काफी तेज होता है यह किसी भी बात को आसानी से नहीं भूल सकतें है।

चौड़े कान

जिन जातको के कान अन्य लोगो कि तुलना में अत्यधिक चौड़े होतें है वे सामान्यतः दुःसाहसी और गम्भीर प्रकृति के होतें है। चौड़े कान वाले लोग जीवन में खुश रहते है। इन्हे हर अच्छे मौके का फायदा उठाना आता है। इनके किस्मत के सितारे बहुत बुलंद होते है। इनकी किस्मत हमेशा इनका साथ देती है, इन्हे जीवन में कम मेहनत के साथ–साथ इनको अधिक फायदा मिलता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में कभी भी पैसों की कमी नहीं होती है तथा यह हर तरह के धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते है और ऐसे व्यक्ति दान–पुण्य करने में अधिक विश्वास रखतें है। "चौड़े कान वाले व्यक्ति के पुरूष जाती के लोग अपने मेहनत और परिश्रम के बल पर जिम्मेदारी से भरे कार्यों को करनें में आन्नदित होतें है। किसी काम को बड़े मन से अपनाकर करतें हैं और हर क्षेत्र में सम्मान पातें हैं। इनके दाम्पत्य जीवन आदि के प्रति इनमें उदासीनता भी कभी–कभी देखनें को मिलती है। "बात करें चौड़े कानों वाले स्त्री जातक की तो यह घर परिवार की जिम्मेदारियों के बजाय यह सार्वजनिक जीवन व्यवसाय, नौकरी, समाज सेवा, राजनीतिक, पत्रकारिता अदि चीजों में रूचि रखनें वाली होती है। तथा धार्मिक, और अध्यात्मिक, श्रेष्ठ विद्या बुद्धि से सम्पन्न, वस्त्राभूषण, बनाव श्रृगांर जैसे स्त्री हर एक गुणों से रहित होती है।

छोटे कान

यदि किसी जातक के कान अन्य लोगों की अपेक्षा छोटें है तो ऐसे लोग प्रेम करनें वाले तथा चंचल प्रवृत्ति के होते है और यही कान अगर जरूरत से ज्यादा छोटे होतो ऐसे व्यक्ति कम दिमाग वाले तथा अल्पबुद्धि प्रवृति के होतें है। सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार छोटे कान वाले व्यक्ति धन के सामने में बहुत ही कमजोर होतें है या यूँ कहें तो यह कंजूस होतें है। ऐसे व्यक्यिों का समाज या परिवार में विशेष प्रभाव नहीं होता हे। देखा जाए तो ऐसे लोग बलवान हो सकतें है इसके कारण आप ऐसे लोगो पर विश्वास कर सकतें है यह अपने जीवन में हमेशा भय तथा संदेह को छाया के रूप में लेकर जीवन व्यतीत करते है और यह लोगों के किसी भी बात को मना करने में बहुत ही संकोच करतें है।

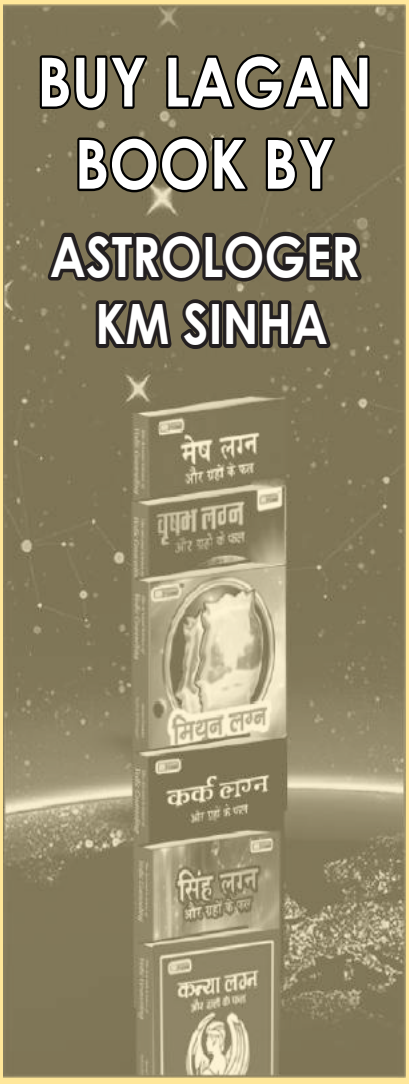

"छोटे कान वाले व्यक्ति के पुरूष जातक वाले व्यक्ति की बात करे तो यह बेहद चंचल और बहुत ही चालाक होते है यह हंसमुख, तेजी से चलने वाले, भयरहित, तनावरहित तथा कुशल प्रेमी होते है। यदि कान बहुत ही छोटा हो पुरूष जातक व्यक्ति तो दिल, दिमाग और विचारों मे भी छोटापन होता है "बात करें छोटे कान वाले स्त्री जातक की तो इस तरह के कानों वाली स्त्रियों बेहद ही चंचल, बातूनी, सदा प्रसन्न, से काम करने वाली होती है ऐसी स्त्रियाँ जहाँ भी रहती है प्यार आनन्द तथा खुशियां बिखेर देती है और यह बहुत सारे शोक अपनी चंचलता के कारण बहुत सारे लोगों के दिलो को जितने वाली भी होती है।

बड़े कान

यदि किसी जातक का अन्य लोगों की अपेक्षा ज्यादा बड़ा कान हो तो ऐसे व्यक्ति समय के साथ धीरे–धीरे गम्भीर हो जाते है तथा यह दार्शनिक प्रवृत्ति के होते है दार्शनिक प्रवृत्ति में रहनें के कारण यह हमेशा सम्भ3व सामान्य भाव में रहना पसंद करतें है "बड़े कान वाले पुरूष जातक के लोग आँखों देखी तथा कानों सुनी बातों पर विश्वास कर लेते है ऐसे लोग जो भी देखते और सुनतें है उन्हें वह मान लेते हैं ऐसे व्यक्ति अपनें बुद्धि का बहुत ही कम उपयोग करतें है। यह अधिक खातें है और सामान्य रूप से ज्यादा सोचतें है, सुखः दुखः, मान–अपमान आौर यश–अपयश के प्रति समान भाव बनाये रखना इन्हे बहुत ही अच्छे से आता है जिसके कारण समाज इन्हें आदर कि दृष्टि से देखता है। "बात करे बड़े कानों वाले स्त्री जातक की तो यह स्वभाव में मनमौजी होती है यह अपने दिमाग का बहुत ही कम उपयोग करती है" इन्हे वातावरण के अनुसार जिनके भी साथ रहना होता है उनमें यह ढ़ल जाती है। इनकी बहुत बड़ी महत्वकांक्षाए नही होती है परन्तु यह बिना किसी की भी या समाज की परवाह किए इन्हें जो करना होता है। वह कर लेती है, तथा यह अपने परिवार के प्रति हर स्थिति में समर्पित रहती है।

उभरा कान

यदि किसी जातक का कान अन्य लोगों की अपेक्षा ज्यादा बड़ा हो तो ऐसे व्यक्ति सामान्यतः हर काम करनें में आतुर रहतें है तथा ऐसे व्यक्ति हमेशा भोग–विलास में रत रहनें वाले होते है यह हमेशा रंगीन मिजाज वाले व्यक्ति होते है हर कामों को खुशी से करने वाले होते है तथा हर स्थिति में यह खुशी से अपने कामों को करतें है। "उभरे हुए कान वाले पुरूष जाती के लोग स्त्रियों से हर एक स्तर पर व्यवहार रखने वाले लोग होते है और स्वयं एक बहुत अच्छे कलाकार होकर कलात्मक ढ़ंग से व्यवहार करना और जीवन जीना इन्हें अच्छे से आता है। इनकी बौद्धिक कार्यो में दक्षता होने के साथ–साथ यह अपनी पत्नी का दिल जीतकर दाम्पत्य जीवन को यह सफल बनाने के प्रयाग में हमेशा तत्पर रहतें है। "बात करें उभरे हुए कानों वाले स्त्री जातक की तो यह स्त्रियां चित्त से चंचल चरित्र से कामातुर तथा प्रणय सम्बन्धों में सुख भोगनें वाली होती है ऐसी स्त्रियाँ बहुत ही अच्छे स्वभाव में वार्तालाप करनें वाली होती है।

धुमावदार कान

जिस किसी जातक का कान अन्य लोगों की तुलना में ज्यादा घुमावदार हो तो ऐसे व्यक्ति सदैव ज्ञान, बुद्धि, विवेक से काम लेने वाले, तथा व्यवहारिक सुख भोगनें वालें होतें हैं "घुमावदार कान वाले पुरूष जाति वाले लोगो की बात करें तो यह बचपन में ही कम आयु से संघर्ष और श्रम करनें वाले और तर्क शाक्ति से परिपूर्ण रहने वाले लोग होतें हैं तथा ऐसे लोग साहसी भी होतें है यह किसी की हानि किये बगैर अपनी प्रगति के रास्ते खुद बनाकर सफलता हासिल करना इन्हें अच्छी तरह आता है। तथा इनका भाग्य सदा इनका साथ देता है। "बात करे अगर घुमावदार कानों वाले स्त्री जातक की तो यह श्रेष्ठ बुद्धि वाली होती है तथा अपने जीवन में हमेशा कुछ ना कुछ सीखते रहनें की मनोवृत्ति वाली होती है, ऐसी स्त्रियाँ अपने कार्यो को पूरा लग्न से कार्य करने की चेष्ठा रखती हैं इन्हें सजने सँवारनें, तथा सुदर वस्त्राभूषण करनें में कोई रूचि नहीं होती है, परन्तु इन्हें अच्छा भोजन पकाने और अन्य लोगों को खिलाकर तारीफ सुननें की प्रबल इच्छा शक्ति रखती है

कोणदार कान

जिस किसी जातकों का कान किसी अन्य जातको के कान की अपेक्षा कोणदार होता है वे लोग बहुत ही महत्वकांक्षी और परिश्रमी होते है वही लापरवाह और फक्कड़ भी होते है "ऐसे कान वाले पुरूष जातक के लोग हमेशा वर्तमान में जीने वाले लोग होते है अर्थात् ऐसे लोग कल की चिन्ता न करनें वाले लोग होते है ऐसे व्यक्ति को रम और संघर्ष करना अत्यधिक अच्छा लगता है परन्तु सफलता मिलने के बाद ये पूरा लाभ उठाये बिना आगे बढ़ जाना इनके स्वभाव में होता और ना ही यह अपनी जिम्मेदारियों के प्रति सजग होते है "ऐसे कान वाले स्त्री जातक की बात करें तो ऐसी स्त्रियाँ बहुत ही गैर जिम्मेदार और उजाडू किस्म की होती है ऐसी स्त्रियाँ अपने घर को बेचकर तीर्थ करने वाली नियत की होती है। यह आलसी धूमने–फिरने खाने–पीने पहनने की शौकीन, कामचोर स्वभाव वाली होती है यह अपनी इसी आदतो पर नियंत्रण न रखें तो यह अरबपति को भी कंगाल कर दे। ऐसे सवभाव से इनका पूरा परिवार त्रस्त रहता है।

सिर से चिपके हुए कान :

जिस किसी जातक का कान अन्य लोगो की अपेक्षा सिर से चिपके हुए हो, वे आमतौर पर ऐसे व्यक्ति अन्दर की ओर जाने वाले व्यक्ति होते है ऐसे व्यक्ति अधिकतर अपनी बातों को कब क्या कैसे करेंगे, वे किसी को भी बतातें नहीं है। ऐसे व्यक्ति स्वभाव में स्वार्थी और दूसरों का नकल करने वाले व्यक्ति होते है। "ऐसे कान वाले पुरूष जातक सिर्फ और सिर्फ अपनों के बारे में सोचने वाले लोग होतें हैं ऐसे व्यक्ति देश, धर्म, समाज, इन सारी गतिविधियों से बेखबर होकर, मीठा बोलते हुए अपने स्वार्थ को लेकर ही पूरी जिन्दगी निकाल देते है ऐसे व्यक्ति ना किसी से दोस्ती ना किसी से बैर रखतें हैं बल्कि दूसरों की नकल और स्वभाव के कारण कई लोग ऐसे लोगो से रिश्ता रखतें वक्त कतरातें है। "सिर से चिपके हुए कानों वाली स्त्रियाँ बुद्धिमान, चालाक, और शड़यंत्रकारी स्वभाव की होती है। ऐसी स्त्रियाँ बदला लेनें में बोलती तो कम है पर कम बोलकर ही घर में उपद्रव करानें का कारण होती है।

सिर से बाहर फैले हुए कान :

जिस किसी भी जातको का कान किसी अन्य जातकों के कान की अपेक्षा सिर से बाहर फैले हुए कान हों तो ऐसे लोग स्वभाव से गहरे चिन्तक धीर, गम्भीर, एकान्तप्रिय, मिष्ठान मौजी होतें है। "ऐसे कान वाले पुरूष जातक के लोग बहुत ही अधिक सोचने वाले, विचारक, लेखक कवि, तथा आलोचक होते है ऐसे व्यक्ति कई बार अधिक सोचने के कारण कई सारी दिमाग की बिमारी के शिकार भी हो जाते हैं ऐसे व्यक्ति बहुत ही साहसी होतें हे और बहुत ही कम तथा पैना बोलने वाले होते है, इनमें एकमात्र मीठा खानें के अलावा कोई दुर्गुण नहीं होता है। "सिर से बाहर फैले हुए कान वाली स्त्रियों की बात करें तो ऐसी स्त्रियाँ शिक्षा के क्षेत्र में में भले ही ना हो परन्तु वह अपनी बुद्धि और कुशाग्रता के बल पर तथा अपने आत्मबल के आधार पर ऐसी स्त्रियाँ निरन्तर अपनें कार्यक्षेत्र में बढ़नें का प्रयास करतीं हैं यह हमेशा श्रम, ख्याति, बुद्धि और धन–लाभ के मामले में जाना जाता हैं यह अपने शादी शुदा जीवन को अच्छे से चलाना जानती हैं और सामंजस्य भाव रखना यह अच्छी तरह जानती है।

सब्सक्राइब कीजिए भारत की सबसे लोकप्रिय ज्योतिष पत्रिका

ज्योतिष विज्ञान

सफलतम् 1 ला वर्ष | हर अंक में विशेष

केवल ज्योतिष से सम्बन्धित मासिक पत्रिका
ज्योतिष सीखने के लिए अनेक लेख
वर्तमान में राशि परिवर्तन और उसका प्रभाव
महीने के व्रत त्यौहार इत्यादि
राजनीतिक विश्लेषण
अनेक विद्वानों द्वारा ज्योतिषीय विषय पर शोध

सदस्य शुल्क (प्रिंट एडिशन) (TAX सहित)

(साधारण डाक से)

वार्षिक 708
द्विवार्षिक 1298
त्रिवार्षिक 2360
आजीवन 12980

(कोरियर से)

वार्षिक 826
द्विवार्षिक 1416
त्रिवार्षिक 2478

(पंजीकृत डाक से)

वार्षिक 885
द्विवार्षिक 1475
त्रिवार्षिक 2537

सदस्यता शुल्क (डिजिटल एडिशन)

एक प्रति 35
वार्षिक 300

BANK DETAILS :
Name : **KM ASTROGURU PVT. LTD.**
A/C No. : 628605015394
IFSCE Code : ICICI0006286
Branch Add : R-1/88 RDC Raj Nagar Ghaziabad UP 201002
Type : CURRENT ACCOUNT

लटकनें वाले कान

जिन जातकों का कान अन्य लोगो की अपेक्षा अत्यधिक लटका हुआ होता हैं लटकना मतलब की ऐसा कान जिनका निचला हिस्सा कनपटी से अलग और भारी होनें पर लटकना सा दिखाई देता है उसे लटकता हुआ कान कहतें है। ऐसे कान वाले लोग सामन्यतः परिश्रमी और हिम्मती होते है। अतः ऐसे कान वाले पुरूष जातक की बात करें तो ऐसे व्यक्ति परिश्रम, हिम्मत, और साहस के साथ अपने कार्य क्षेत्र में अचानक से ऊँचाई पर जाते है, परन्तु ऐसे जातक का बचपन बहुत ही अभावपूर्ण तथा कष्टों से बीता हुआ होता है। परन्तु यह ऐसे व्यक्ति किसी काम को बड़े ही उत्साह और लग्न से करने वाले होते है। ऐसे व्यक्ति भौतिक सुखों के प्रति उदासीनता देखनें को मिलती है। "ऐसे कान वालों के स्त्री जातक की बात करें तो ऐसी स्त्रियाँ घर, परिवार तथा कुटुम्ब की एक जिम्मदार मुखिया बनती है। और कई बार एसी स्त्रियों को सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर भी नेतृत्व करनें के अवसर भी प्रदान होते रहते है ऐसी स्त्रियों का जीवन किसी भी क्षेत्र में प्रधान होकर अपने घर, कुटुम्ब को यशश्वी बनानें वाला होता हैं।

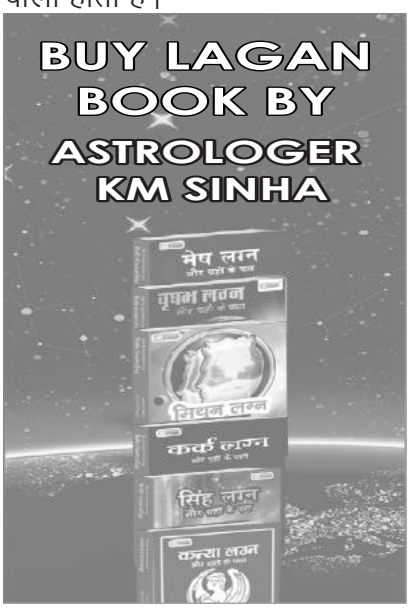

क्या है माँ तुलसी की कहानी और आखिर क्यों कि जाती है उनकी पूजा

आज हम जानतें हैं कि माँ तुलसी से जुड़ी कुछ बातें आखिर कौन है माता तुलसी और क्यों कि जाती है माँ तुलसी की पूजा।

माँ तुलसी कथा

माता तुलसी का नाम वृंदा और उनका जन्म राक्षस कुल में हुआ था :

बता दे कि माता तुलसी का जन्म राक्षस कुल में हुआ था, उनका नाम वृंदा था, राक्षस कुल में माँ तुलसी का जन्म लेनें के बाद भी वृंदा भगवान श्री विष्णु जी की परम् भक्त थीं और सच्चे मन से उनकी पूजा अर्चना भी करती थी और उनका विवाह भी राक्षस कुल में दानव राजा जलंधर के साथ हुआ था वह काफी पतिव्रता स्त्री थी, बहुत समय पहले एक बार जब देवताओं और दानवें के बीच युद्ध हुआ, उस युद्ध के दौरान वृंदा नें अपने पति जलंधर से जाते वक्त कहा कि स्वामी आप तो युद्ध पर जा रहें हैं और जब तक आप जीत हॉसिल कर वापस नहीं आ जाते हों तब तक मैं आपके लिए पूजा करती रहूँगी और अपना संकल्प नही छोडूँगी वहीं जलंधर तो युद्ध में चलें गए और वृंदा व्रत का संकल्प लेकर पूजा करनें में जुट गई, यह ही नहीं वृंदा के वृत का प्रभाव इतना अधिक था कि देवता जलंधर से जितने में विफल हो रहे थे, जब देवता जीत हासिल करने में असफल हो रहें थे तो उस दौरान वह भगवान विष्णु जी की शरण में जा पहुँचे, सभी नें भगवान विष्णु से प्रर्थना करते हुए कहा कि किसी भी तरह देवताओं को युद्ध जीतनें में मदद करें ऐसी स्थिति में भगवान विष्णु बड़े ही दुविधा में आ गए, वे सोच रहे थे कि वृंदा को कैसे रोका जाए, क्योंकि वह उनकी परम् भक्त थी, बहुत ही सोचनें समझने के बाद भगवान विष्णु जी नें वृंदा के साथ छल करने का निर्णय तक ले लिया, उन्होंने वृंदा का संकल्प ताड़ने के लिए उनके पति जलंधर का रूप धारण कर लिया था, और जलंधर के वेष में विष्णु जी वृंदा के महल में जा पहुँचे, जैसे ही वृंदा ने अपने पति जलंधर की छवि देखी तो उनके चरण छुनें के उद्देश्य से पूजा से उठ पड़ी जिससे वृंदा का संकल्प टुट गया, जैसे ही उनका वृत संकल्प टूटा, और देवताओं ने दानव जलंधर का सिर धड़ से अलग करके उन्हें मार दिया। जब वृंदा को भगवान विष्णु जी के छल करनें का आभास हुआ तो पहले तो वो जलंधर का कटा हुआ सर लेकर खूब फूट–फूटकर रोयी और सती होनें के पहले उन्होनें भगवान विष्णु जी को श्राप दे दिया, उन्होनें भगवान विष्णु को पत्थर बननें का श्राप दे दिया ये ही नहीं विष्णु जी पत्थर बन भी गए, लेकिन इस बात से तमान देवी–देवता और लक्ष्मी जी रोने लगी, सभी ने मिलकर वृंदा से खूब मिन्नतें की कि वह अपनें श्राप से भगवान विष्णु को वंचित कर दें आखिरकार वृंदा नें विष्णु जी को वंचित करनें की बात स्वीकारी और भगवान विष्णु अपनें पुनः अवतार में वापस आ गए।

छल का प्रायश्चित करते हुए विष्णु जी ने खिले हुए पौधे को तुलसी का नाम दिया

जब विष्णु जी ने देखा की वृंदा जिस स्थान पर सती हुई उस जगह एक पौधा खिला हुआ है, अपनी परम् भक्त से छल का प्रायश्चित करते हुए विष्णु जी नें खिले हुए पौधे को तुलसी का नाम दिया और ये फैसला किया कि आज से इनका नाम तुलसी है और मेरा एक रूप उस पत्थर क रूप में रहेगा। जिसे शालिग्राम के नाम से तुलसी जी के साथ ही पूजा जाएगा और तुलसी जी की पूजा के बगैर मैं कोई भी भोग स्वीकार नहीं करूंगा।

कार्तिक मास में तुलसी जी के साथ शालिग्राम जी का विवाह किया जाता है

बस यही वजह थी कि तब से लोग तुलसी जी की पूजा करने लगे, बता दें कि कार्तिक मास में तुलसी जी के साथ शालिग्राम जी का विवाह किया जाता है, और एकादशी वाले दिन इसे तुलसी विवाह पर्व के रूप में मनाया जाता है। चरणामृत के साथ तुलसी को मिलाकर प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है तुलसी के पौधें को काफी पवित्र माना जाता है तमाम हिन्दू अपने घर के आँगन और दरवाजे में तुलसी का पौधा लगातें है यही मुख्य कारण है कि हम उन्हें माँ तुलसी कहतें है।

तुलसी पूजा से होगा कैल्याण

शास्त्रो के अनुसार तुलसी की पत्तियों को कुछ खास दिनों में नहीं तोड़ना चाहिए

एकादशी, रविवार, सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण के समय तुलसी की पत्तियों को नहीं तोड़ना चाहिए व्यर्थ में तुलसी का पत्ता से दोष लगता है।

शाम के समय तुलसी के पास दिया जलानें से लक्ष्मी की कृपा सदैव बनी रहती है।

घर के आँगन में तुलसी का पौधा है तो आपके घर के सारे वास्तु दोष मिट जायेंगे।

घर में हमेशा धन–लाभ के शुभ संकेत बनें रहेंग।

तुलसी का पौधा परिवार को बुरी नजर से बचाता है।

तुलसी का पौधा नकारात्मक ऊर्जा का भी नाश करता है।

सुखा तुलसी का पौधा घर में रखना अशुभ माना जाता है।

पौधा सूख गया है तो उसे किसी पवित्र नदी, तालाब या किसी कुएँ में प्रवाहित कर दें।

सुखा पौधा हटाने के बाद तुरंत नया तुलसी का पौधा लगाएं।

तुलसी जी को जल चढ़ाते समय इस मंत्र का जाप करना चाहिए

महाप्रसाद जननी, सर्व सौभाग्यवर्धिनी
अधि व्याधि हरा नित्य, तुलसी त्वं नमोस्तुते।

इस मंत्र द्वारा तुलसी जी का ध्यान करना चाहिए :

देवी त्वं निर्मिता पूर्वार्चितासि मुनीष्वरैः
नमो नमस्ते तुलसी पापं हर हरिप्रिये।

तुलसी की पूजा करते समय इस मंत्र का उच्चारण करना चाहिए

तुलसी श्रीर्महालक्ष्मीर्विद्द्याविद्द्या यषस्विनी।
धर्म्या धर्मानन देवी देवीदेवमनः प्रिया।
लभते सुतरां भक्तिमन्तें विष्णुपदं लभेत।
तुलसी भूर्महालक्ष्मीः पद्द्मिन्नि श्रीर्हरप्रिया।

तुलसी के पत्ते तोड़ते समय इस मंत्र का जाप करना चाहिए :

ऊँ सुभद्राय नमः
ऊँ सुभद्राय नमः
मातस्तुलसि गोविनद हृदयानन्द कारिणी
नारायणस्य पूजार्थं चिनोमि त्वां नमोस्तुते ।।

रोहिणी नक्षत्र

चौथे राशिचक्र में 40.00 डिग्री से 53. 20 डिग्री के विस्तार का क्षेत्र रोहिणी नक्षत्र कहलाता है। रोहिणी बलराम की माता का नाम है। रोहिणी शब्द का शाब्दिक अर्थ "लाल–गाय" होता है जो ग्रह चन्द्रमा की पत्नी तथा ऋषि कश्यप व सुरभि की पुत्री; रक्तवाहिनी और विद्युत इत्यादि से है। रथ के आकार के पाँच सितारों का समूह रोहिणी नक्षत्र का प्रतीक है। दक्षिण भारतीय धारणाओं के अनुसार रोहिणी नक्षत्र 'वट्' वृक्ष के आकार का 42 सितारों का समूह है। कहा जाता हौ की किसी भी वर्ष की 26 मई से 8 जून तक के 14 दिनों में इस नक्षत्र से सूर्य गुजरता है। इस प्रकार रोहिणी के प्रत्येक चरण में सूर्य लगभग साढ़े तीन दिन तक रहता है। पुराण की कथा के अनुसार रोहिणी चन्द्र की सभी पत्नियों में सबसे सुन्दर तेजस्वी, सुंदर वस्त्र धारण करनें वाली हैं। और कहा जाता हे की ज्यों–ज्यों चन्द्र रोहिणी के पास जाता है त्यो–त्यों उसका रंग अधिक खिल उठता है। रोहिणी के देवता ब्रह्मा जी, मित्राचार वाले पद प्रतिष्ठा वाले, सुखी, संगीत कला इत्यादि ललित कलाओं में रस रखने वाले, देव, देवियों में आराध्य वाले मिलतें है। ऐसे जातक मानसिक रूप से स्वस्थ होतें है।

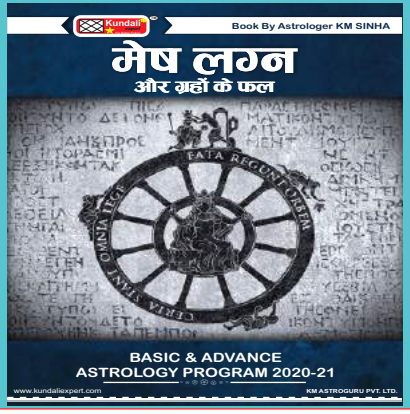

रोहिणी नखत्र में विभिन्न ग्रहों की उपस्थिति के परिणाम

सूर्य

रोहिणी नक्षत्र में यदि सूर्य पर चन्द्र की दृष्टि हो, तो जातक स्त्री वर्ग की सेवा तथा उनकी जरूरत पूर्ति व्यवसाय करेगा तथा ऐसे जातक को जल से सम्बन्धित काम से अत्यधिक लाभ होगा।

रोहिणी नक्षत्र में यदि सूर्य पर मंगल की दृष्टि हो तो, ऐसे जातक युद्ध कला में श्रेष्ठ होतें है तथा धन यशस्वी भी होते है।

इस नक्षत्र में यदि सूर्य पर गुरू की दृष्टि हो, तो जातक सामाजिक नेता, राजनैतिक गठबन्धन से लाभ कमानें वाली तथा सम्मान से प्रतिष्ठित होता है।

यदि सूर्य पर शनि की दृष्टि हो तो, ऐसा जातक हमेशा अस्वस्थ होता हैं, तथा आर्थिक लाभ का अभाव होने से जीवन भर निर्धन तथा हमेशा से जातक पत्नी के विरोधी होतें है।

रोहिणी सूर्य चरण फल

प्रथम चरण

इस नक्षत्र के सूर्य ग्रह के प्रथम चरण के जातक अच्छे और रईस होतें हैं, बहुत ही ज्यादा सजनें, सँवरनें अर्थात् फैशन करनें वाले होतें है, विभिन्न प्रकार के प्रतियोगिताओं का आयोजन या क्रय–विक्रय करनें वाली नौकर होता है। ऐसे जातक को मस्तिष्क या नाड़ी तन्त्र के रोग होते है।

द्वितीय चरण

द्वितीय चरण का जातक सदैव प्रसन्नचित, तथा हर तरह से प्रभावी रहता है, ऐसा जातक तरल पदार्थो से अजीविका करेगा, तथा हर समय मूर्छा, पित्त विकार और सिरदर्द से पीड़ित रहेगा। और इस चरण के जातक गहरे पानी या नदी में तैरनें से हमेशा डरे रहतें है। अतः यदि इस चरण में सूर्य मंगल से युत हो, तो सेना या कानून पक्ष में उच्च पद प्राप्त करता है।

तृतीय चरण

इस चरण के जातक जन साधारण के परोपकारी कार्यो से लाभान्वित होता हैं ऐसे जातक को हिक्का/हिचकी रोग होने की सम्भावना बनी रहती है। इस चरण के स्त्री जातक की बात करें तो इनको मासिक धर्म के रोग होनें की सम्भावना रहती है। इस चरण में हुए जातक को पानी से डरने का भय तथा नदी में डूबनें का भय निरन्तर बना रहता है।

चतुर्थ चरण

इस चरण के जातक शुरू से ही शासकीय नौकर होते हैं जिन्हें मन ना होनें के कारण अनिच्छा से यात्राएं करनी पड़ती है। यह ऐसे व्यक्ति होतें है जो पत्नी के आज्ञाकारी होते है। लेकिन ऐसे जातक स्त्री को पुरूष से निम्न स्तरीय मानतें है।

चन्द्र

रोहिणी नक्षत्र के चन्द्र का सूर्य ग्रह की दृष्टि पड़ने पर जातक ऐशो आराम प्राप्त करने वाला होगा तथा भूमि संपत्ति और वाहनों का मालिक होगा। यह तंत्र–मंत्र, रहस्य विद्या, भूमिगत धन आदि से अपनी आजीविका करेगा।

चन्द्र के मंगल ग्रह से दृष्टिगत होने पर पुरूष जातक स्त्री जातको को

आकर्षित करनें वाला होगा तथा ऐसा व्यक्ति सभ्य तरीके से जीने वाला होगा।

चन्द्रमा अगर बुद्ध ग्रह से दृष्टिगत हो तो ऐसा जातक बहुत ही बुद्धिमान होगा तथा यह सफलता को प्राप्त करने की क्षमता रखनें वाला व्यक्ति होगा।

चन्द्रमा अगर वृहस्पति से दृष्ट हो तो ऐसा जातक अपने माता–पिता का आज्ञाकारी पुत्र होता हैं तथा अपनें कर्तव्य के प्रति जागरूक होता है और ऐसा जातक प्रत्येक धर्म को मानने ताला होता है।

चन्द्रमा अगर शुक्र ग्रह से दृष्ट हो तो जातक सभी भौतिक सुखों को प्राप्त

भवन, वस्त्राभूषण इत्यादि का आनंद लेगा।

चन्द्रमा अगर शनि से दृष्ट हो तो माता की कम आयु में ही मृत्यु होने की सम्भावना रहेगी तथा पिता से किसी भी प्रकार की सहायता नहीं मिलेगी।

रोहिणी चन्द्र चरण फल

प्रथम चरण

रोहिणी चन्द्र चरण फल के प्रथम चरण फल के अनुसार जातक आनन्दित स्वभाव का होता है मिष्टभाषी, संतुष्ट, संतान के स्नेह, खाद्यान्न, दूध डेयरी या अन्य तरल वस्तुओं से अपनी अजीविका यानि रोजी–रोटी चलायेगा। ऐसे जातक के कान में दोष होंगे व इनके अत्यधिक भाई–बहन होंगे।

द्वितीय चरण

इस चरण में जन्में जातक की शिक्षा अधूरी रहेगी तथा यह ललित कला–वादि होगा। ऐसे जातक को समय एवं परिस्थितियों के अनुसार अपने निवास का स्थान बदलना पड़ सकता हैं जन्में स्त्री जातक चरित्रहीन और आचरणहीन होती है जिसका खामियाजा उसे समय के अनुसार भुगतना पड़ सकता है।

तृतीय चरण

चन्द्रमा के तृतीय चरण में जन्में जातक हमेशा प्रसन्न रहतें हैं, यह हमेशा सुखी जीवन व्यतीत करतें हैं, इनमें जल्दी स्मरण करने की भी शक्ति होती हे यह व्यक्ति विश्वास के प्राप्त होते है। और व्यापार करनें वाले होतें है और इनकी रोजी रोटी तरल वस्तुओं से होती है।

चतुर्थ चरण

चतुर्थ चरण वाले व्यक्ति रत्न या आभूषण का व्यापार करनें वाले होतें है और इनकी नौकरी हमेशा यात्रा से सम्बन्धित होती है, और यह परचूनी और डेरी उद्योग से सम्बन्धित काम करके अपना रोजी–रोटी चलाने वाला होता है। नक्षत्र के इस चरण में स्त्री जातक के पास ललित वस्त्र होते है, बहुत ही प्रचुर मात्रा में ऐसे स्त्री जातक के आभूषण होते है। ऐसें स्त्री जातको के अनियमित मासिक धर्म होते हैं और हमेशा पैरो में इनके दर्द होते है।

मंगल

मंगल ग्रह का सूर्य से दृष्ट होने पर जातक पहाड़ो या वन में निवास करनें वाले होतें हैं और ऐसे जातक अपनी पत्नी तथा परिवार को कभी खुशी नहीं दे पातें है।

मंगल ग्रह का चन्द्र से दृष्ट होनें पर ऐसा जातक अपनी माता की इच्छा के विपरीत कार्य करने वाला होगा तथा अपनें से निम्न स्तर की स्त्रियों के पास या निकट होनें की अवस्था में रहेगा।

मंगल ग्रह के बुध से दृष्ट होने पर जातक धार्मिक रूप से जातक धार्मिक रूप से विद्वान होगा इसकी विद्वता के कारण यह हर जगह प्रभावशाली बना रहेगा लेकिन यह व्यक्ति खराब स्वभाव वाला होगा।

मंगल ग्रह का गुरू से दृष्ट होने पर ऐसा जातक अपनें परिजनों के साथ रहने वाला होगा, और जब भी इस जातक को मदद करनी होगी तो आवश्यकता पड़ने पर यह सब की मदद करेगा।

यदि मंगल ग्रह का शुक्र से दृष्ट होनें पर ऐसा जातक पूर्ण रूप से प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ होगा।

मंगल ग्रह यदि शनि ग्रह से दृष्ट है तो जातक बहुत बड़ा विद्वान होगा, पवित्र हृदय वाला होगा तथा यह जनसेवक होगा।

रोहिणी मंगल चरण फल

प्रथम चरण

मंगल के प्रथम चरण में जन्में जातक वाधयन्त्र के अत्यधिक प्रेमी होतें है इन जातको का संगीत के प्रति रूझान अत्यधिक होता है, और ऐसे जातक हमेशा गिल्टियों के रोग से पीड़ित होता है।

द्वितीय चरण

इस द्वितीय चरण में यदि सुगल और सूर्य की युति हो, तो ऐसे जातक सैनिक होते है या सैन्य अधिकारी होते है। ऐसे जातक कभी–कभी गलत निर्णय (बुध राहु की युति और दुर्बुद्धि के कारण) ले लेते है

तृतीय चरण

तृतीय चरण वाले जातक शांत स्वभाव के होतें है तथा चंचलता से रहित होते हे ऐसे जातक संतान या अपने वंशज की मृत्यु से दुखी होता है तथा यह जातक स्त्री द्वारा बहुत अधिक कष्ट पाने वाले भी होतें हें

चतुर्थ चरण

इस चरण में जन्में जातक समपन्न व्यक्ति से अस्थिर होकर रहतें है और इस चरण मे अस्थिर होकर शराब और स्त्रियों में धन का अपव्यय करता है। यदि ऐसा व्यक्ति शासकीय अधिकारी होता है और वह अनैतिक तरीकों व (रिश्वतखोरी) से धन कमाता है।

बुध

चन्द्र से दृष्ट होनें पर ऐसा जातक परिश्रमी और धनवान होता है और कई मायनों में सरकार से आमदनी अच्छी होती है।

बुध ग्रह का मुगल से दृष्ट होने पर जातक धनाढ़य वर्ग से लाभ प्राप्त करेगा लेकिन शनि की दशा, अर्न्तदशा जब चलेगी तो इसमें यह विपरीत फल पायेगा।

बुध ग्रह का गुरू से दृष्ट होने पर ऐसा जातक किसी नगर का नेता होता है, और यह बुद्धिमान भी होते है, तथा यह हर एक चीज से समृद्ध होतें हैं।

बुध ग्रह का शनि से वृष्ट होने पर मनोवैज्ञानिक समस्याग्रस्त होने से परिवार और दूसरे लोग उसका

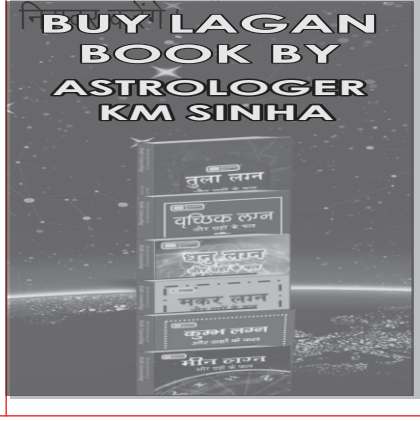

रोहिणी बुध चरण फल

प्रथम चरण :

बुध ग्रह के प्रथम चरण में जन्म लेने वाले जातक होशियार होते है, मेघावी होते है तथा ऐसे जातक दूसरों की भलाई करके अजीविका चलाने वाले होतें है, ऐसे जातकों की पत्नी अत्यधिक विनम्र और बुद्धिमान होती हैं ऐसे जातक बोलते वक्त उत्तेजित होनें से हकलानें लगतें है।

द्वितीयक चरण : नक्षत्र के इस चरण का जातक वैदिक साहित्य को मानने वाला होता है तथा व्याख्याकार भी होता है, ऐसे जातक राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभातें है तथा अपने भाई–बहनों से हमेशा असंतुष्ट रहतें है। जिससे की इसके प्रजनन अंगों की कमजोरी होती है।

तृतीय चरण : तृतीय चरण वाले जातक बहुत ही तीव्र इच्छा शक्ति वाले, तथा नरम आदत वाला, धनाढ्य तथा भौतिकवादी, होता है और सम्भोग का आनन्द चाहता है इस कारण यह व्यक्ति चरित्रहीन और विवादास्पद होता है

,

चतुर्थ चरण :इस चरण में जन्मे जातक को किसी दूर के रिश्तेदार से फायदा होगा, इनके शत्रुओं से इनको हानि होगी, तथा अपनें बहनों से मुसीबत होगा। और यदि बुद्ध शनि से दृष्ट हो, तो रोगी कुरूप दाँत गिरे हुए तथा अशांत होते है और इन्हे **हृदयघात** भी होता है।

गुरू

गुरू ग्रह का सूर्य ग्रह से दृष्ट होने पर जातक हमेशा सेना में उच्च पद पर होता है। तथा ऐसे जातक युद्ध में घायल भी हो सकते है।

गुरू ग्रह का चन्द्र से दृष्ट होनें पर ऐसा जातक भाग्यशाली, सम्मानित और जरूरतमन्दों की सहायता करनें वाला होता है।

गुरू ग्रह का मंगल से दृष्ट होनें पर जातक अपने संतान का उद्यमी और गुणों से भरपूर होता है, और ऐसे जातक की पत्नी भी सुन्दर होती हैं

यदि गुरू पर बुद्ध की दृष्टी हों तो ऐसे जातक राजनीतिज्ञ होतें हैं तथा यह कला और शिक्षा की उन्नति में रूचिवान होतें हैं

यदि गुरू पर शुक्र की दृष्टी हो, तो जातक सर्वदा भाग्यशाली होता है और दान देने में हमेशा आगे होता है और सदैव धनवान होता है।

यदि गुरू पर शनि की दृष्टी हो तो, ऐसा जातक धन–संपत्ति और यश प्राप्त करेगा तथा मंत्री या संस्था अथवा संगठन का प्रमुख होगा।

रोहिणी गुरू चरण फल

प्रथम चरण : इस नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्में जातक दर्शन और पौराणिक अनुशासन में रूचिवान होतें हैं, ऐसे व्यक्ति सदैव सत्यवादी होतें है, प्रभावशाली व्यक्ति होतें हैं। तथा ऐसे व्यक्ति स्त्रियों में भी रूचि लेने वाले होते हे।

द्वितीय चरण : इस नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्में जातक धार्मिक पिता का आज्ञाकारी होता हे ऐसा जातक वफादार होने से लोगों का आदर करने वाला होता है, तथा यह अपने व्यवहार से सद्चरित्रवान होते है, हालांकि वह खुद को अपने तरीके से नियोजित करने वाले होतें हे। फिर भी ऐसे लोग बहु–पत्नी वाले होते है।

तृतीय चरण : तृतीय चरण में जन्म लेने वाले जातक चतुर होते है, तथा समाज और परिवार से हमेशा बचे रहने वाले लोग होतें हैं। तथा ऐसे व्यक्ति पैसे के लिए कुछ भी कर जाने वाले होते है। ऐसे जातक संसर्ग जनित रोग के कारण 50 या 55 वर्ष से अधिक जीवित नहीं रह पातें है।

चतुर्थ चरण : चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले जातक विदेश यात्रा करके अपनी आजीविका करता है। ऐसे जातक 32 वर्ष तक परेशान रहतें हैं बाद में उदार प्रीतिमान से धनाढ्य होकर आनंद लेता है। तथा इनहें 40 वर्ष वक परेशानियाँ होती रहती है।

शुक्र

शुक्र ग्रह पर चन्द्र की दृष्टि हो तो ऐसा जातक रत्नाभूषण के व्यापार से आजीविका करेगा। ऐसा व्यक्ति भौतिक, कामुक, आनन्द पर केन्द्रित होते हुए भी परिवार का उद्धारक होगा।

शुक्र ग्रह पर यदि मंगल की दृष्टि पड़ रही हो तो जातक क्रूर अनैतिक तरीको से धन कमानें वाला होता है और इसके कारण वह सुख से हीन होता है।

शुक्र ग्रह पर यदि गुरू की दृष्टि हो तो, ऐसा जातक सुखी वैवाहिक जीवन, तथा प्रतिभामान संतान, और वाहन सम्पत्ति आदि से भरपूर जीवन होता है।

शुक्र ग्रह पर यदि शनि की दृष्टि हो, तो जातक निर्धन, स्वास्थ्य की समस्या होगी और आत्म–सम्मान नष्ट होगा।

रोहिणी शुक्र चरण फल

प्रथम चरण : शुक्र ग्रह के प्रथम चरण में जन्म लेनें वाले जातक मोहक, मनोरंजक अत्यधिक सम्पत्तिवान तथा माता की सुविधा से युक्त, पारिवारिक स्थिति 35 वर्ष की उम्र तक दयनीय होती है तथा ऐसे जातको का बाद में पत्नी से तालाक होने पर जीवन सामान्य रहता है।

द्वितीय चरण : द्वितीय चरण में जन्म लेने वाले जातक पटकथा लेखक, संगीतकार, ललित कला का प्रेमी, सुखी वैवाहिक जीवन, तथा पुत्र–पुत्री से युक्त होता है। इस चरण के स्त्री जातक को गर्भपात या संतान की हानि होती हे।

तृतीय चरण : इस चरण में जन्में जातक भौतिक सुख का इच्छुक होता है। इसें चरित्रहीन या निम्न स्तरीय औरत से इनका सम्बन्ध होनें के कारण, व्यक्ति को दुख भोगना पड़ता है। धोखा दिये हुए विद्या चलानें के कारण यह तुच्छ प्रतिष्ठा वाला होता है और इनको आर्थिक हानि होती है यदि ऐसा व्यक्ति 30–35 तक अपने चरित्र को नहीं सुधारता है तो ऐसे लोगो को भयानक संसर्गजनित रोग हो सकते है।

चतुर्थ चरण : चतुर्थ चरण में जनमें जातक ठिगना (छोटे कद के) होते हैं, तथा कुछ जातक इस चरण के कुबड़े भी होतें है। इसे गलसुआ या कण्ठमाल रोग होते है। एसे जातक का विवाह बेहद सुंदरी से होता हे। जिससे संपत्ति और सौभाग्य प्राप्त होता है। और यह भी सत्य स्त्री जातक का विवाह पूर्ण निपुण पुरूष से होता है।

शनि

शनि ग्रह पर यदि सूर्य की दृष्टि हो तो ऐसा जातक गरीब होता है और सदैव दूसरों पर आश्रित रहनें वाला होता है।

शनि ग्रह पर यदि चन्द्र की दृष्टि होता ऐसा जातक स्वस्थ, व्यवसाय में वरिष्ठ से दूसरे नंबर पर रहकर व्यापार करेगा।

शनि ग्रह पर यदि मंगल की दृष्टि हो तो जातक वाचाल (अधिक बोलने वाला) और मुस्कुरानें वाला होता है। शनि ग्रह पर यदि बुद्ध की दृष्टि हो तो जातक खराब स्वभाव ताला होता है, तथा दुष्टो की संगति करनें वाला होता है। शनि ग्रह पर यदि गुरू की दृष्टि हो तो जातक अत्यन्त दयालु स्वभाव का होता है, ऐसा व्यक्ति स्वास्थ्य और सामान्य सेवाओं मे दानी स्वभाव का होता है और उच्च पद पर पदासीन होता है शनि ग्रह पर यदि शुक्र की दृष्टि हो तो ऐसा जातक सोने–जवारात का कारोबारी होता है ऐसा व्यक्ति कामुक तथा शराबी होता है।

रोहिणी शनि चरण फल

प्रथम चरण : शनि ग्रह के प्रथम चरण में जन्मे जातक धार्मिक स्वभाव का होता है लेकिन जुआरी भी होता हे। ऐसा व्यक्ति युवावस्था में धन बर्बाद करने वाला होता है परन्तु 45 वर्ष के बाद यह स्थिर, शांत व अल्प अपल्ययी होता है। तथा इन्हे क्षय रोग से सम्बन्धित पीड़ा हो सकती है और इनके दाँत गिर जाने की भी संभावना होती है।

द्वितीय चरण : शनि ग्रह के द्वितीय चरण में जन्मे जातक शिक्षित होतें हैं, मोहक, और मृदुभाषी तथा गंजे भी होते है। ऐसे जातको को उदर की शल्य चिकित्सा हो सकती है तथा मवशियो से आमदनी होती है।

तृतीय चरण : शनि के तृतीय चरण में जन्में जातक बचपन से ही विद्यार्थी के समान होतें हैं तथा ऐसे लोग साहित्यविद भाषविद, और सम्पत्तिवान होतें हैं तथा दाँत के रोगी भी होतें है।

चतुर्थ चरण : शनि ग्रह के चतुर्थ चरण में जन्मे जातक फैशनेबल ड्रेस पहनने वाले, अत्यधिक धन कमाने वाले तथा दृढ़ आर्थिक स्थिती के कारण राजनीति में उच्च पद प्राप्त करने वाले होतें है। तथा इस चरण वाले जातक 50 साल की उम्र में ही मंत्री बन जातें है और इस चरण में

रोहिणी राहु चरण फल

प्रथम चरण

राहु के प्रथम चरण में जन्में जातक वीर होतें है परन्तु अत्यधिक खाने–पिने के बाद भी ये दुबले–पतले होते हैं।

इस जातक को दीर्घकाल तक का अपचन रोग होने के कारण परेशानी झेलनी पड़ती है ऐसे लोगों की आँखें कमजोर होनें के कारण ये दीर्घायु होते है। यदि लग्न भी इसी चरण में हो तो, राहु जीवन में प्रत्येक क्षण रक्षा करता हैं।

द्वितीय चरण

राहु के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाले जातक हमेशा दृढ़ इच्छा शक्ति वाले होते है ऐसे व्यक्ति व्यापार में सफल और प्रसिद्ध, सहनशील और आत्मविश्वास से पूर्ण होते है। ऐसे व्यक्ति को अधिक खानें से अमाशय और आंत के रोग होते हैं तथा आँखें इनकी कमजोर हो जाती है।

तृतीय चरण

मन्दबुद्धि होतें हैं और दूसरो पर निर्भर होते हैं राहु के तृतीय चरण में जन्में जातक है। ऐसे व्यक्ति 65 साल तक जिन्दा रहकर दुर्घटना या रक्तविकार या मधुमेह के कारण ऐसे व्यक्ति मर जातें है।

चतुर्थ चरण :

राहु के चतुर्थ चरण में जन्में जातक साहित्य प्रेमी और लेखक होतें है ऐसे जातक उच्च शिक्षित न होते हुए भी बौद्धिक अनुसरण से जीविका करता है और श्रेष्ठ विद्वान हो जाता है। तथा इसके परिश्रम का फल भी जीवन के उत्तरार्द्ध में मिलता है।

रोहिणी केतु चरण फल

प्रथम चरण

केतु के प्रथम चरण में जन्में जातक अपने जन्म स्थान से कहीं दूर जाकर जीविका उपार्जन करते हैं। और इनका स्वभाव ऐसा है कि इनका अधिकांश समय दूसरो के भोजन पर ही निर्भर करता है। इस चरण में जन्में व्यक्ति 65 साल तक ही जीवित रहतें हैं तथा कोई–कोई जातक गुँगे और दृष्टि–हीन होतें हैं।

द्वितीय चरण

केतु के द्वितीय चरण के जातक का जीवन बहुत ही अल्प काल का होता है। यदि इनमें मीन के गुरू या चन्द्र की दृष्टि हो तो ऐसा व्यक्ति 20–25 साल तक जीता है। ऐसे व्यक्ति का शरीर कमजोर होता है और बचपन से ही इनमें दृष्टिदोष होते है। और किसी–किसी जातको को अपंग या कुष्ठ रोग होते है।

तृतीय चरण

केतु के तृतीय चरण में जन्में जातक प्राध्यापक या पादरी या पुरोहित या सन्यासी होते है, ऐसा जातक परिवार का बड़ा होता है तथा उसका जीवन 30 वर्ष तक सुखमय तथा आनन्दमय होता है इसके बाद से उनके जीवन में संघर्ष प्रारम्भ होता है इनके विवाह में अड़चने आती रहती है और इन्हे **असाध्य** रोग भी होतें हैं

चतुर्थ चरण

केतु के तृतीय चरण में जन्में जातक विज्ञान का दार्शनिक, वेद, शास्त्रों का पंडित, मन्त्र शास्त्र आदि रहस्य विज्ञान में रूचिवान, आयुर्वेद या परम्परागत चिकित्सा में पारंगत होता है। ऐसा व्यक्ति हकलाना या मुकपन या अंधपर से पीड़ित होता है

कर्क लग्न और विपरीत राजयोग

इस लग्न में अगर किसी जातक का जन्म होता है तो उसका जन्म लेना ही ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से ही यह संकेत देता है की जातक पिछले जन्मों के शुभ कर्मों को भोगनें या फिर उससे सम्बन्धित प्राप्त आनन्द को प्राप्त करनें के लिए ही जन्मा है या फिर इस मृत्युलोक में उसके द्वारा

किये गये पिछले जन्म के अधूरे कार्य को वह पूर्ण करनें के लिए आया है। अतः कहा यह जाता है कि इस लग्न का जातक स्वतः भाग्यवान होता है।

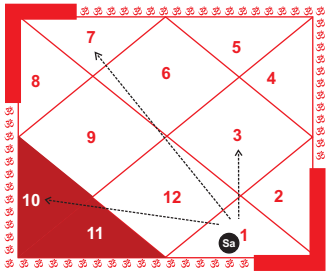

क्योंकि इसकी जन्म कुण्डली में अशुभ भाव तृतीय, षष्ठम, अष्टम एवं द्वादश भावों में से तीन भावों में नेसर्गिक शुभ ग्रह की राशियाँ कन्या (तृतीय भाव), धनु षष्ठम भाव एवं मिथुन द्वादश भाव

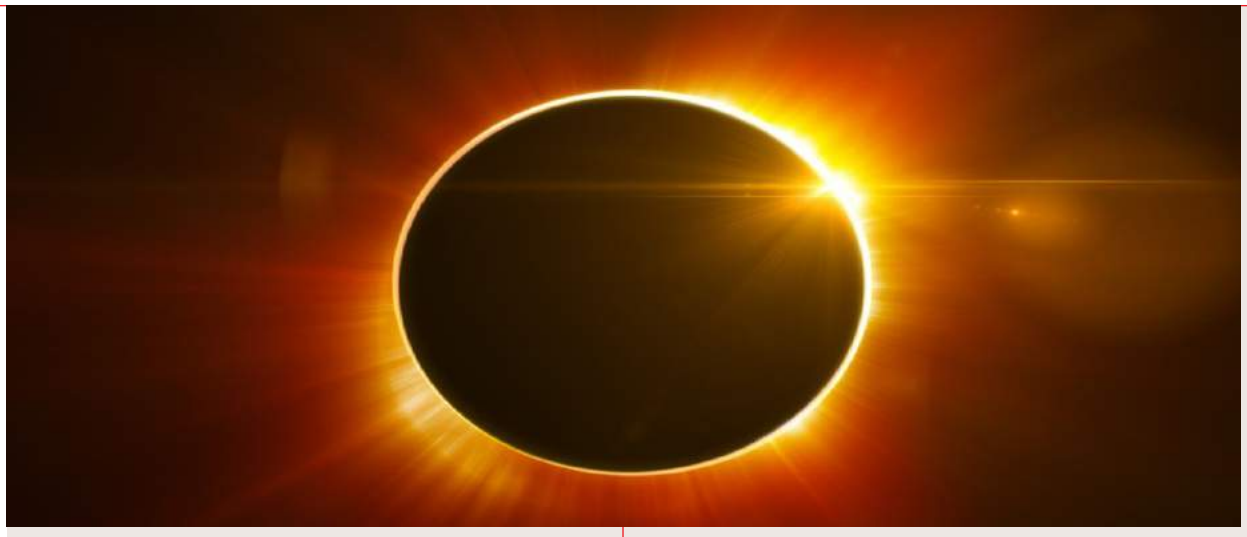

14 December सूर्यग्रहण विशेष

देखा जाए तो सूर्य ग्रहण और चन्द्रग्रहण एक प्रकार की खगोलीय घटनाक्रम है। जब सूर्य और चन्द्रमा के बीच पृथ्वी आती है और इसकी छाया से जब चन्द्रमा पूरी तरह ढ़क जाता है। तो ऐसे में इसे चन्द्र ग्रहण कहा जाता है वहीं जब सुर्य और पृथ्वी के बीच चन्द्रमा आता है तो उसे सूर्यग्रहण कहा जाता है। और यह बता दे सूर्यग्रहण आमतौर पर अमावस्या को और चन्द्रग्रहण पूर्णिमा को लगता है। साल 2020 में कुल मिलाकर छह ग्रहण लगेंगे। जिसमें से चार चन्द्रग्रहण और दो सूर्यग्रहण हैं। "साल का दूसरा व आखिरी सूर्य ग्रहण 14 दिसम्बर का लगने वाला है। यह ग्रहण एक खंडग्रास प्रकार का ग्रहण होगा एवं यह भारत में दिखाई नहीं देगा इसलिए भारत के लोगों कों इससे घबराने की जरूरत नही है और इसीलिए इसकी धार्मिक एवं ज्योतीष मान्यता नहीं हैं तिथी के अनुसार बात करें तो यह ग्रहण अगहन, कृष्ण अमावस्या, सोमवार, 14 दिसंम्बर, 2020 को घटित होगी, और इस सूर्य ग्रहण को विश्व में प्रशांत महासागर, दक्षिण अफ्रीका में देखा जा सकेगा।

सूर्य ग्रहण तिथि

14 दिसम्बर 2020 (सूर्यग्रहण)

समय — 14 दिसम्बर, 19:03 बजे से 15 दिसम्बर को 12 बजे तक।

बुध — बुध एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है तथा पराक्रम दुःस्थान एवं द्वादश दुःस्थान अर्थात् दो अशुभ भावों का स्वामी होता है अर्थात् बुद्ध राजयोग बनानें की स्थिति में जातक को उच्च स्तर का बौद्धिक लाभ पहुँचाता है।

गुरू — गुरू एक षष्ठम स्थान का दुःस्वामी होता है। अतः गुरू ग्रह एक नैसर्गिक शुभ ग्रह होता है शुभ ग्रह होने के कारण इस भाव में विशेष फल के रूप में जातक के रोग और शत्रुओं का नाश करनें वाला होता है। और विपरीत राजयेग की दशा में भाग्यवर्द्धक होता है (क्योंकि दूसरी राशि भाग्य भाव में हैं) त्रिकोण का भाव होने से शुभत्व में भी कमी अति है जिसके कारण विपरीत राजयोग होता है।

शनि — शनि ग्रह नैसर्गिक पापी ग्रह होनें के काण सार्वाधिक पाप भाव का स्वामी होता है। साथ ही साथ यह सप्तम केन्द्र का स्वामी भी होने से कम अशुभ, किन्तु विपरीत राजयोग बननें पर जातक को सदैव एकरूप बनाता हे।

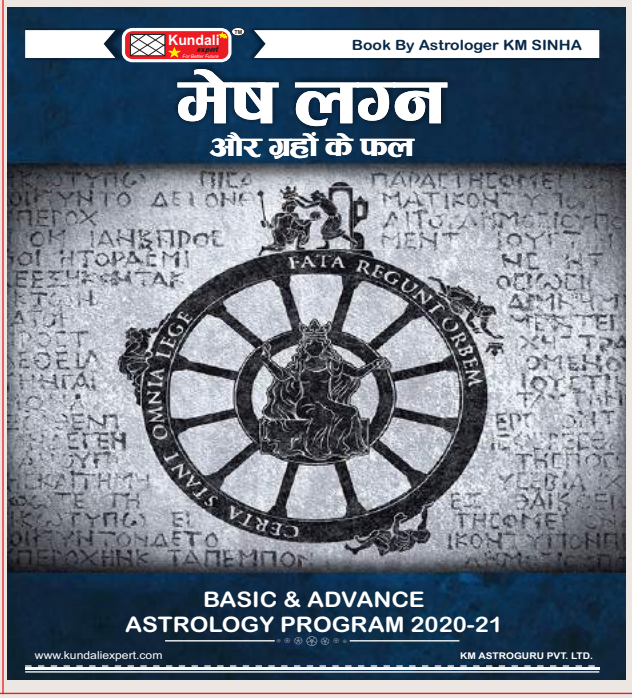

तृतीय भाव में विपरीत राजयोग

तृतीय भाव में अगर विपरीत राजयोग बनें और षष्ठम दःस्थान में स्वगृही बुध हो तो जातक प्रायः (स्त्री होता है) अतः धार्मिक होता है और धर्म को मानने वाला भी होता है। एसा जातक, मनुष्य से ज्यादा प्रकृति और पशुओं को प्रेम करनें वाला सम्पन्न, सुखी, विख्यात और भाग आदि में रत रहने वाला होता है ऐसे लोगों के भाई बहन अधिक होते हैं प्रायः कम आयु में इन्हें अधिक सफलता हो सकती है, बशर्ते वह अपनी जन्मभूमि या जन्म स्थान का त्याग कर दें। विपरीत राज योग में अगर बुध के साथ सूर्य भी हो तो उक्त फलों में वृद्धि के साथ–साथ जातक उच्च कोटि का साहित्यकार, कवि, राजनीतिज्ञ, कुशल वक्ता या संगठक होकर विश्व व्यापी होता है और ख्याति प्राप्त करता है धन और वैभव मानों उसके पीछे–पीछे चलते है और ऐसे व्यक्ति धन के मामले में भी भाग्यवान होते है।

गुरू यदि षष्ठम दुःस्थान में हो तो जातक मानों भाग्योदय के साथ ही जन्म लेता हैं ऐसा व्यक्ति जहाँ भी जन्म लेता है, उसके मन के अनुकूल भोगादि पदार्थ, धन वैभव स्वतः ही चले आते है। ऐसा व्यक्ति कम श्रम में भी सैकड़ों गुना अधिक मूल्य प्राप्त करता है। और ऐसा व्यक्ति अगर नेता हो तो सामाजिक परिवर्तन करने में सक्षम होता है और इनकी विदेश यात्राएँ भी काफी ज्यादा होती है।

तृतीय दुःस्थानों में यदि शनि हो तो व्यक्ति अपने धन से अधिक धर्म को मानने वाला होता हे, ऐसा व्यक्ति स्वार्थ के स्थान पर परमार्थ को, और भोग के बजाय त्याग को महत्व देने वाला होता है किन्तु उनसे अलिप्त बना रहकर वह सामाजिक क्रिया–कलापों में खूब आनन्द लेता है। ऐसे व्यक्ति को विदेश यात्राओं का बहुत शौक होता है और वह विदेश यात्राएँ हमेशा करता हैं यदि शनि के साथ बुध भी हो तो व्यक्ति को जो भी फल प्राप्त होतें है उसमें वृद्धि हो जाति हे फलतः यह युति आंशिक रूप से नपुंसकता को जन्म देती है।

तृतीय दुःस्थान में शनि गुरू की युति हो तो ऐसे जातक हो सन्यास योग होता है, वह अपने सामाजिक जीवन में रहते हुए भी एकसन्यासी के समान जीवन यापन करते है यूँ कहें तो सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धान्त का पालन करता हैं सौम्य, सहनशील, रोग–शत्रु रहित, ईमानदार, कर्मनिष्ठ धर्मात्मा धीर, वीर, तेजस्वी होना इस युति की ही महिमा होती है। यदि नवम् भाव या दस युति का सम्बन्ध किसी प्रकार चन्द्र से हो तो प्रबल सन्यास योग होता है। ऐसा व्यक्ति धन वैभव, ऐश्वर्य लक्ष्मी एवं सौन्दर्य इनके पीछे चलता है। किन्तु ऐसा जातक इन सबको छोड़कर आत्मनिष्ठ बना रहकर मोक्ष प्राप्ति का उपाय करता है। और जब कभी भी ऐसे व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो मृत्यु के पश्चात् भी यह सम्मानित होता रहता है।

यदि तीन, चार या इससे अधिक ग्रह तृतीय दुःस्थान में हो तो ऐसा जातक बहुत ही परिश्रम करने वाला होता है साथ ही साथ वह भाग्यवान धीर, वीर योद्धा उधमी होकर भी लोक विख्यात होता है चूँकि यहाँ नैसर्गिक शुभ ग्रह की राशि होती है। अतः जातक के उक्त सारे गुण सामाजिक पुर्नरचना या नवीन शोधदि करवातें हैं यूँ कहें तो ऐसा जातक समाज के हित में अपने आपको झोंक देता है। अर्थात् धन, वैभव ख्याति, भौतिक संसाधनों से परिपूर्ण होनें के कारण ऐसा व्यक्ति कई बार विदेश यात्राएँ भी करता है। यदि इस जातक की कुण्डली में सारे ग्रह पापीं हो तो जातक को घोर परिश्रम करना पड़ता है। इसके विपरीत यदि सारे ग्रह शुभ हों तो कम प्रयत्न करके भी ऐसा व्यक्ति पर्याप्त सफलता प्राप्त कर सकता है।

षष्ठम् भाव में विपरीत राजयोग

विपरीत राजयोग के षष्ठम दुःस्थान में स्वगृही गुरू होतो ज्योतिषीय सिद्धान्तों और फलित सूत्रों में वर्णित कुछ विधिवत नियतों से आगे भी जातक को शुभ फल प्राप्त होतें हैं क्योंकि ऐसे जातक को ऐसे रोग या शत्रुओ से संघर्ष करना पड़ता है जिनसे संघर्ष करना उनके लिए गौरव की बात होती है। कई बार ऐसा होता है कि प्रबल से भी प्रबल शत्रु युद्ध में परास्त हो जातें है। अर्थात् ऐसा जातक वीर योद्धा होते है तथा कुशल राजनीतिज्ञ, बुद्धिमान, चतुर और बाहरी सम्बन्धों से लाभ प्राप्त करने वाले होते है। ऐसा जातक अत्यधिक बार विदेश यात्रा करने वाला और इन सब से हटकर कहा जाए तो प्रबल भाग्यवान होता है और उसकी सारी मनोकामनाएँ पूर्ण होती है ऐसे व्यक्ति के मरने के बाद भाग्यवान होने के कारण लोग इनको याद करते है।

षष्ठम दुःस्थान में यदि शनि हो तो जातक शत्रु रहित होकर दीर्घायु जीवन पाता है। ऐसा जातक अपनें घर परिवार में कम रूचि रखनें वाला होता है (उसका दाम्पत्य जीवन सदैव असंतोषजनक रहता है) शुभ ग्रह की राशि में शनि विपरीत राजयोग की पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाता है अतः उसे कई बार असफलता तथा अभाव भी महसूस होते है। ऐसे व्यक्ति को एक दो बार अचानक धन लाभ प्राप्त होने

भी हो तो व्यक्ति को उक्त फल अपनी प्रबलता से फलित होते है। व्यक्ति सन्यास योगी होतें है। और व्यक्ति दर्शनशास्त्री या दार्शानिक मनोवृत्ति के कारण विख्यात होता है।

बुध यदि किसी जातक की कुण्डली में षष्ठम भाव में हो तो जातक चर्म रोग से पीड़ित रहता है। ऐसे व्यक्ति के शत्रु तो होते है लेकिन शत्रु के होते हुए भी जातक अपनी चतुराई के बल परस्त करता है। ऐसा जातक कभी भी अपनी जन्मभूमि पर प्रगति नहीं कर पाता हैं। ऐसा जातक परलौकिक विद्या में रूचि लेने वाला होता है। और ऐसा जातक कूटनीति कारकता के कारण समाज में अपनी विशिष्ट पहचान बना लेता है। ऐसे बुध के साथ अगर गुरू भी हो तो व्यक्ति को मिलने वाले फलों में और वृद्धि हो जाती है। यह हमेशा निरोग रहतें है, और ऐसे लोगों के शत्रु भी नही होतें है और अगर इनके शत्रु होते भी है तो बहुत जल्दी ही नष्ट हो जाते हैं ऐसा व्यक्ति अपनें जन्म स्थान से ज्यादा विदेशों में (जन्म स्थान से दूर) धन यश तथा लाभ प्राप्त करतें है।

दुःस्थान में बुध शनि की युति हो तो जातक के शरीर में भीषण चर्म रोग या किसी में भी जहर फैलनें की सम्भावना जीवन–पर्यन्त बनी रहती हैं और स्वास्थ्य की दृष्टि से ऐसे योग ठीक नहीं रहतें है। एसे व्यक्ति को अत्यधिक बौद्धिक परिश्रम करना होता है कभी–कभी तो इनमें पागलपन भी उभर जाता हैं किन्तु यह युति उसके व्यक्तित्व को महानतम ऊँचाईयाँ भी प्रदान कराती है। लोग उसे दार्शनिक भी समझतें हैं, और धार्मिक रूप से सिद्ध दिवाना भी कहते हैं ऐसे व्यक्ति का सार्वजनिक जीवन मस्त मौला की तरह माना जाता है अतः परिश्रमी होने और नैसर्गिक गुण होने के कारण वह आसानी से सेवा भाव में लगा रहता है। ऐसा व्यक्ति अपनें धन, मान, ख्याति या अपनी विशिष्ट पहचान दुनियां में बनानें के लिए कुछ नहीं करता। फिर भी उसे ये सारी चीजें प्राप्त हो जाती है। जब ऐसे व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो मरनें के बाद भी लोग इन्हें याद करतें हैं

षष्ठम दुःस्थान में तीन चार या इनसे भी अधिक ग्रह विराजमान हों तो जातक रोग एवं अपने शत्रुओं को एक क्षण में परास्त कर देता है। अति दुःसाहसी होनें के कारण यह नई–नई मुसीबतों का जैसे अपने पास बुलाता है। अर्थात् हमेशा कोई न कोई जोख्यिम का काम उठाता रहता है ऐसा व्यक्ति शुभ ग्रहों की अगर युति होती है तो वह स्वयं परस्त हो जाता है। और अशुभ ग्रह की युति होनें पर भी वह व्यक्ति विजय प्राप्त करता ह। तथा व्यक्ति धन एवं मान दोनो ही स्थितियों में प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति साइंस से सम्बन्धित अपनें किसी विशेष अभियान या कार्य के कारण पूरे संसार में जाना जाता हे। मरणोपरान्त भी ऐसा व्यक्ति एक ऐतिहासिक पुरूष के रूप में अपनी पहचान है बनानें में सफल होता है। किन्तु किसी भी चीजों का फल उसे 32 से 36 वर्ष की आयु के पश्चात् ही प्राप्त होतें है। इस आयु तक ऐसे व्यक्ति को भीषण संघर्षों का सामना करना पड़ता ह। तथा पल–पल अपनें अस्तित्व के लिए उसे संघर्ष करना पड़ता है।

अष्टम भाव में विपरीत राजयोग

यदि किसी जातक की कुण्डली में अष्टम भाव में स्वगृही हों तो 36 वर्ष तक जातक का जीवन नर्क तुल्य

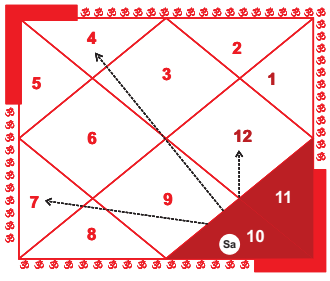

(अर्थात् नर्क के समान हो जाता है। तथा इन्हें माता–पिता कुटुम्ब आदि में से किसी से भी सुख और सहयोग नहीं मिलता हैं तथा शिक्षा के लिए यह व्यक्ति दर ब दर की ठोकरें खाता है। ऐसा व्यक्ति भूख प्यास और रोटी से प्रत्यक्ष संघर्ष करता है। (और कई बार ऐसा भी होता हैं की जातक का पालन पोषण अपनें अभिभावकों से दूर होता है। जैसे गोद चले जाना, अनाथ हो जाना, जन्म लेते ही माता की मृत्यु हो जाना, रोगग्रस्त हो जाना, दादा–दादी या नाना–नानी द्वारा अत्यन्त दुलार होनें के कारण उन्हे अपने साथ ले पाना इत्यादि ऐसी घटनाएँ देखी गई है जिसके कारण इनका पालन पोषण दूर होता है। किन्तु ऐसी अवस्था में उसे सब प्रकार का सुख क्यों न मिल जाए परन्तु उसे आत्मिक शान्ति का अभाव बना रहता है। अतः यह आयु गुजर जाने के बाद जातक आग से तपे हुए सोनें की तरह तेजस्वी, यशस्वी, विलासितापूर्ण एवं लोकमान्य होकर ही अपनी जीवन यात्रा को भोगता है।

यदि किसी जातक के अष्टम दुःस्थान में बुध ग्रह हो तो ऐसे जातक कि आयु प्रायः कम होती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन मध्य आयु का होता है और इनकी मृत्यु अचानक हो जाती है। अतः ऐसा जातके बौद्धिक दृष्टि से सम्पन्न होता है ऐसा जातक धर्म, विद्वान, दर्शन, अध्यात्म या किसी भी अन्य विषय का श्रेष्ठ साहित्यकार होता है। सूर्य के साथ होनें पर उसे किसी भी क्षेत्र में ख्याति प्राप्त होती है। किन्तु इसके लिए अन्य विपरीत राजयोग भी होना चाहिए, ऐसी स्थिति में यदि बुध के साथ शनि भी हो तो जातक दार्शनिक, वैज्ञानिक या तीव्र तर्कशक्ति वाला होता है। किसी–किसी विषयों में गम्भीर रूप से पारंगत ऐसा व्यक्ति अपनी वाणी मात्र से ही जन समाज को मंत्र मुग्ध कर देता है, तथा धार्मिक व्यवस्थाओं के विपरीत अपनी नवीन व्यवस्थाओं की वकालत करता है और लोग उसका अनुसरण भी करते है। देखा जाए तो ऐसा जातक मृत्यु के पहले भी अत्यधिक संघर्ष करता है और मरनें के बाद विश्वविख्यात होकर

समाज द्वारा पूजित होता है। ऐसा व्यक्ति एक ऐतिहासिक पुरूष बनकर सदियों तक अमर रहता है। समाज द्वारा पूजित होता है। ऐसा व्यक्ति एक ऐतिहासिक पुरूष बनकर सदियों तक अमर रहता है।

विपरीत राजयोग में गुरू यदि अष्टम भाव में हो तो ऐसा जातक बहुत ही दीर्घायु वाला होता है, और इनके जन्म स्थान से दूर जाकर ही इनका भाग्य उदय होता है। इस राजयोग के जातक धार्मिक प्रवृत्ति के होते है, और धार्मिक कृत्यों पर व्यय करने में इन्हे आनन्द मिलता है। केवल धार्मिक प्रवृत्ति में मन लगनें के कारण इनका अन्य जटिल साधना की ओर रूझान कम रहता है। ऐसा व्यक्ति सांसारिक जीवन में सभी प्रकार के सुखोपभोग की ओर अग्रसर रहता है तथा इनके जीवन में हर प्रकार के सुखों से सम्पन्न होनें के कारण यह सभी प्रकार के भोग विलास, ऐश्वर्य को भोगता हैं। ऐसे व्यक्ति को विदेश यात्रा करनें के योग हमेशा बनतें है और विदेश यात्रा करना इनके लिए अत्यन्त ही लाभदायक होता है। पूरे समाज में उसके पद और प्रतिष्ठा से उसे सम्मान प्राप्त होता है। विपरीत राजयोग बननें के करण यदि गुरू के साथ शनि हो तो जातक धर्म, समाज, देश और विश्व के लिए हर प्रकार से लाभदायक होते हैं किन्तु जो भी फल होते हैं किन्तु जो भी फल होते है इसके विपरीत होते हैं तथा ऐसे व्यक्ति यथा धर्म के बजाय वह अध्यात्म तंत्र, मंत्र, ज्योतिष, दर्शन आदि जैसे परलौकिक विषयों में रूचि लेकर उनमें सफलता भी प्राप्त करतें हैं लोग उसे प्रेम, सम्मान और आस्था की दृष्टि से देखतें है। और वह स्वयं भी सामाजिक क्रिया कलापों में रूचि भी लेनें वाला होता है।

यदि किसी जातक की कुण्डली में अष्टम भाव में बुध गुरू हो तो जातक सदैव पवित्र आचरण करनें वाला होता है, तथा धार्मिक एवं सामाजिक मूल्यों की रक्षा करने वाला होता है, ऐसा व्यक्ति धार्मिक कथाकार या लेखक भी हो सकता है। अगर ऐसे जातक की आयु की दृष्टि को देखा जाए तो वह अपनी बड़ी आयु में अचानक मृत्यु को प्राप्त होता है। ऐसे जातकों की विशेषता यह होती है की यह धनी, यशस्वी, लेखन और धार्मिक कथा कार होते है परन्तु ऐसे व्यक्ति कुछ मायनों में दिखावा भी करने वाले होतें है। ऐसा जातक विदेश यात्राओं और विदेशी सम्बन्धों से लाभ भी उठाता है। यह योग प्रायः साधारण स्तर पर ही अपना प्रभाव भी जातक को प्राप्त कराता है।

विपरित राजयोग बननें के भाव में यदि तीन, चार या इनसे अधिक ग्रह यदि अष्टम भाव में हो तो तीन और चार के फलो के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय योग्यता प्राप्त कर विश्व–व्यापी होता है। तथा ऐसे जातक को हर एक पल कठोर संघर्ष करना पड़ता है और यह आगे बढ़ने के लिए हर समय कठोर परिश्रम भी करते है। साथ ही साथ वह अपने अच्छा व्यवहार करनें वाले आचरण एवं व्यक्तित्व को किसी शाक्तिशाली चुम्बक की तरह बनाए रखता है। जिस तरह से एक चुम्बक अपनें से छोटे टुकड़ो को अपनी ओर आकर्षित कर लेतें है वैसे ही ऐसे जातक का नाम सुनकर जनता उनके पीछे दौड़ पड़ती है। ऐसा योग बहुत ही कम लोगों की कुण्डली में देखनें को मिलता है। ऐसा व्यक्ति किसी कारणवश अगर मृत्यु को प्राप्त हो जाता तो भी उसके बाद भी ऐसे व्यक्ति के नाम और ख्याति में वृद्धि होती है।

द्वादश भाव में विपरीत राजयोग

द्वादश दुःस्थान में स्वगृही बुध हो तो ऐसा जातक बौद्धिक स्तर पर महान लोगों की श्रेणी में गिना जाता है। यदि विपरीत राजयोग में इसके साथ सूर्य भी हो तो वह साहित्य क्षेत्र और विशेषतः खेल जगत से सम्बन्धित रिर्पोटिंग या एक महान तथा प्रत्यक्ष खिलाड़ी के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करता हैं ऐसे व्यक्ति राजनीति में होने पर एक कुशल संगठन का निर्माण करनें वाले होता है। ऐसे विपरीत राजयोग के व्यक्ति रोगी तो होते ही हैं, किन्तु इनके शरीर में तंत्रिका तन्त्र में खराबी होने के कारण यह एक बिमारी चर्म रोग से पीड़ित होते है। ऐसे व्यक्ति के मित्र कम शत्रु ज्यादा होते है, इनके शत्रु इन्हे समय समय पर अत्यधिक परेशान करते है, जिसे वह अपनी बुद्धि बल से परस्त करता है। तथा जातक को विदेशी सम्बन्धों से अच्छा लाभ भी मिलता है। ऐसे व्यक्ति के पास उत्तम घर, वाहन का स्वामी होकर यह श्रेष्ठ जीवन जीने वाला होता है परन्तु ऐसा व्यक्ति प्रायः स्वार्थी स्वभाव का होता है। परन्तु यह समाज की भावनाओं के विपरीत काम करने वाला होता है। जिससे लोकप्रिय होकर भी वह सम्मानित या प्रतिष्ठित नहीं कहा जा सकता। द्वादश भाव में यदि गुरू हो तो व्यक्ति अपनें जीवन में अनेक बार धार्मिक यात्राएँ करता है। धर्म से जुड़े होनें के कारण ऐसा जातक रोग और शत्रु से पीड़ित होता हैं हर प्रकार से सुख भोगने तथा सुख प्राप्त करनें वाला ऐसा व्यक्ति धर्मभीरू भी होता है। वह धर्म के प्रति हमेशा तत्पर रहता हैं धर्म के लिए ऐसा व्यक्ति हमेशा मरने–कटनें का तैयार रहता है। यदि गुरू ग्रह के साथ इसमें बुध भी हो तो इन्हे जो फल प्राप्त होने वाले थे उसमें इनको कई गुना वुद्धि हो जाती है। ऐसा व्यक्ति समाज में प्रतिश्ठा प्राप्त करने

प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला तथा नेतृत्व प्राप्त करनें वाला होता है। और जनता इनकी बातों को सुनकर उनका अनुसरण करनें वाली होती है।

यदि जातक के द्वादश भाव में शनि हो तो ऐसा जातक अपने शत्रुओं को अपने पराक्रम से नष्ट कर देता है। ऐसे व्यक्ति को एक उम्र 32 से 36 वर्ष की उम्र आने तक कठोर परिश्रम करना पड़ता हैं इस अवधि में भाग्य इनका साथ नहीं देता हे, भाग्य इनसे रूठा–रूठा होने के कारण इनका कम साथ देता है। ऐसे जातक को उसके जीवन में कुटुम्ब मामा और जीवनसाथी से अत्यधिक कष्ट प्राप्त होतें है। इन सबके बावजूद वह अपने श्रम, मेहनत और कर्तव्यनिष्ठा के कारण यह इसी आयु के पश्चात् धीमी गति से प्रगति करते हैं ऐसे ही व्यक्ति धार्मिक किन्तु समाजवादी और मानवतावादी होते हैं ऐसा व्यक्ति वर्तमान समय में प्राप्त हुए भौतिक संसाधनों एवं ऐश्वर्यशाली जीवन के अवसर होते हुए भी वह सादा जीवन उच्च विचार वाला जीवन जीता है, और जीवन में उच्च विचार के सिद्धान्त का पालन करते हुए समाज में आदर्श प्रस्तुत करने वाला होता है। यदि द्वादश भाव में शनि के साथ बुध भी हो तो जितना भी फल व्यक्ति को प्राप्त हो उसमें वृद्धि होती है।

यदि किसी जातक के द्वादश दुःस्थान में शनि और गुरू की युति हो तो ऐसा जातक धनवान, सुखी, समृद्ध होकर समाज का नेतृत्व करने वाला होता हे। ऐसा व्यक्ति धार्मिक और अध्यात्मिक व्यक्तित्व के रूप में सामाजिक स्तर पर प्रतिस्थापित होता है। ऐसे व्यक्ति को रोग या शत्रु घेरे नहीं रहतें है, अगर ऐसे व्यक्ति के रोग या शत्रु होते भी है तो वे जल्दी नष्ट हो जातें है। ऐस व्यक्ति का भाग्योदय इनके जन्म स्थान से दूर होता है। तथा इनका भाग्यउदय एक उम्र 32 से 35वर्ष की आयु के बीच ही होता हैं। अतः अन्य विशेष राजयोग या चन्द्र का सम्बन्ध इस युति या नवम् भाग में होने पर ऐसा जातक सन्यासी या दार्शनिक होकर भी विश्वव्यापी ख्याति प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति का समाज में उसके प्रति विशेष आदर व सम्मान होता है। तथा इनके मरनें के बाद भी इनकी लोकप्रियता बनी रहती है

यदि किसी जातक की कुण्डली के द्वादश दुःस्थान में तीन चार या इनसे अधिक ग्रह एक साथ हों तो जातक मनोविज्ञान, दर्शन, अध्यात्म, गणित या किसी विशेष क्षेत्र में विशेष ज्ञानी और नवीन शोध आदि के कारण विश्व में प्रख्यात होतें है। इसके कारण इन्हे पूरे समाज में मान्यता मिलती है। ऐसे व्यक्ति भले ही सत्तात्मक या कानून के खिलाफ हों ऐसी दशा में कई बार वह विवादास्पद हो जातें है। किन्तु कई बार किसी विशेष परिस्थिति में धन, वैभव व ऐश्वर्य एवं लोकप्रियता उसके साथ रहती है। ऐसे व्यक्ति के हर एक शब्दो में शक्ति होने के कारण इनका व्यवहार चुम्बकीय होता है। ऐसे व्यक्ति 32 से 36 वर्ष की आयु की अपेक्षा 54 से 56 वर्ा तक भयानक संघर्ष का सामना करते है। यदि सूर्य भी यूति में शामिल हो तो ऐसे व्यक्ति को राजदण्ड भोगना पडता है। ऐसा व्यक्ति या जातक मरनें के बाद भी बड़े आदर की दृष्टि से देखा जाता है और लोग उसके विचारों को भली–भाँति अपनातें है।

द्वितीय और एकादश भाव में विपरीत राजयोग

द्वितीय भाव का स्वामी जो होता है वह नैसर्गिक क्रूर ग्रह सूर्य होता है। चूँकि ज्योतिष फलों के सिद्धान्तोनुसार इनका तट्स्थ भाव माना जाता है। अतः यह मान लेना चाहिए की सूर्य जिस दुःस्थान में हो या जिस दुःस्थान

का स्वामी द्वितीय स्थान में हो उसके अनुरूप लाभदायक परिणाम प्राप्त होतें हैं। तथा तीन, चार या इससे अधिक ग्रह की स्थिति में उसके फल द्वादश भाव के अनुरूप गु. होतें हैं

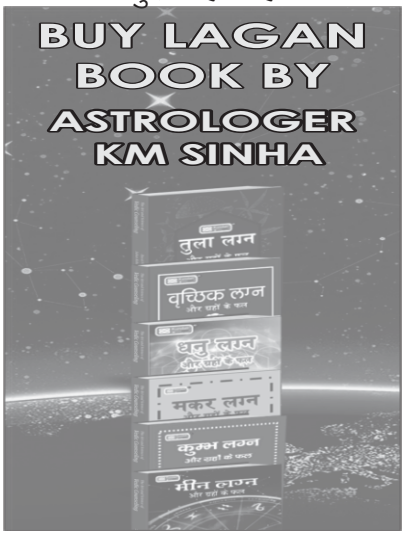

यह दी गई कुण्डली धीर, वीर, न्यायप्रिय विक्रमादित्य की है जिनके न्याय की कहानियों से आज भी पूरा समाज प्रेरणा प्राप्त करता है। अतः जब हम वीर विक्रमादित्य की कुण्डली को देखतें है तो इस कुण्डली में दो प्रकार के विपरीत राजयोग विघमान है। प्रथम तो चारों केन्द्रों (1,4,7,10) भाव में स्थित ग्रह अपनी–अपनी उच्च राशियों में हैं जिसमें लग्न भाव में षष्ठेश गुरू, चतुर्थ भाव में अष्टमेष शनि, एवं दशम भाव में द्वितीयश सूर्य। इसी प्रकार एकादश दुःस्थान में द्वादश बुध, स्वगृही शुक्र और उच्चगत लग्नेश (चन्द्र) के साथ युतिरत है। इस प्रकार विलक्षण योग दर्शाने वाली कुण्डली लाखों–करोड़ो में एक दो ही होती है। और परिणाम हम भली–भाँति जानतें हैं ऐसे व्यक्ति सदियों तक आस्था के प्रतीक बनें रहतें है।

विपरीत राजयोग विशेष

द्वितीय दुःस्थान में सूर्य एवं एकादश दुःस्थान में शुक्र ग्रह हो तो ऐसा जातक जन्म से ही लखपति होता है। अर्थात् वह एक पूरी तरह से सम्पन्न कुल में जन्म लेता है।

यदि किसी जातक की कुण्डली में सूर्य एकादश भाव में और शुक्र द्वितीय भाव में परस्पर राशि परिवर्तन कर के विराजमान हो तो ऐसा जातक करोड़पति होता है। ऐसा व्यक्ति जहाँ कहीं भी रहता है वहाँ धन किसी न किसी बहाने आकस्मात आ जाता है। अतः धन के मामले में ऐसे व्यक्ति को भाग्यवान होता है।

यदि जातक की कुण्डली में सूर्य अष्टम भाव में हो और चन्द्र की उस पर दृष्टि हो अर्थात् चन्द्र द्वितीय भाव में हों तो ऐसे जातक को गड़ा हुआ धन प्राप्त होता है, अचानक से उसे शेयर, सट्टा, दान, पुरस्कार या ऐस ही किसी प्रकार से अधिकाधिक धन प्राप्त होता है।

बुध एकादश भाव में हो और शुक्र तृतीय भाव में हो तो जातक अपनें मित्रों या अपनें भाइयों के सहयोंग से करोड़ो रूपये कमाता हैं इसी प्रकार सूर्य तृतीय भाव में और बुध द्वितीय भाव में हो तो कुटुम्बजन की सहायता से धन प्राप्त करता है।

सूर्य और शुक्र की परस्पर दृष्टि या युति सम्बद्ध जन्म–कुण्डली के किसी भी भाव में हो तो ऐसा जातक धनवान होता है।

सूर्य, गुरू, बुध, शनि और राहु में से तीन या इससे अधिक ग्रह एक ही भाव या जन्म, कुण्डली में कही भी हो तो जातक करोड़पति होता है।

सूर्य बुध या सूर्य शुक्र या शुक्र बुध की युति यदि द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक भी करोड़पति होता है।

सूर्य, गुरू, या शुक्र, गुरू की युति द्वितीय या द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक शत्रुओं को पराजित करके धन प्राप्त करता है।

सूर्य, बुध, गुरू, शुक्र में से कोई भी तीन ग्रह अपनी–अपनी उच्च या स्वराशि में हो तो ऐसा जातक सामान्य रूप से करोड़पति होता है।

यदि गुरू चन्द्र की युति द्वितीय या एकादश भाव में हो तो ऐसा जातक भी करोड़पति होता है।

अष्टम भाव में सूर्य द्वितीय या एकादश भाव में शनि हो तो ऐसा जातक गलत या अनैतिक तरीको से प्राप्त कर सम्पन्न बनता है।

शुक्र यदि अष्टम भाव में हो और सूर्य एकादश भाव में हो तो जातक धन के मामले में भाग्यवान होता है। क्योंकि ऐसे जातक को कम श्रम मेहनत में ही खूब धन प्राप्त होता है।

बुध, शुक्र की युति यदि द्वादश भाव में हो तो ऐसे जातक के पास मानों अखण्ड लक्ष्मी का वास होता है, ऐसे जातक के पीछे धन खुद चलकर आता है।

तुला राशि

आइए हम तुला राशि के बारे में जान लेतें है :

12 राशियों कें चक्र की सातवाँ राशि तुला है और इस राशि को भलि–भॉति जाननें का निर्देशांक अंक 7 है। अतः जन्म के समय से प्राचीन समयों में भी इनके नाम न लिखकर उनके अंक लिखनें की ही परम्परा थी। तुला राशि को पहचानने का चिन्ह् एक तराजू है। तुला लग्न के स्वामी शुक्र होते है। ये एक चर राशि है। तुला राशि में वायु तत्व की प्रधानता देखनें को, मिलती है। अर्थात् शूद्र वर्ण की ये राशि भचक्र की सातवें स्थान पर आनें वाली राशि है। देखा जाए तो तुला राशि का विस्तार 180 अंश से 210 अंश तक फैला हुआ है। इसके अन्तर्गत चित्रा के तृतीय, चतुर्थ चरण, स्वाति नक्षत्र के चारों चरण, तथा विशाखा नक्षत्र प्रथम, द्वितीय, तृतीय चरण के संयोग से तुला लग्न बनता है।

नक्षत्र चित्रा नक्षत्र के अन्तिम चरण, स्वाती नक्षत्र के चार चरण एवं विशाखा नक्षत्र के पहले तीन चरण को मिलाकर तुला राशि बनती है। नीचे दिये गये कोष्ठक में चंद्र के अंश, नक्षत्र, चरण, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, योनी, नाड़ी गण एवं नामाक्षर के विषय की जानकारी दी है–

चन्द्र के अंश	नक्षत्र	चरण	नामाक्षर	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	योनी	नाडी	गण
00: से 06:40 तक	चित्रा	3, 4	रा, री	शुक्र	मंगल	व्याघ्र	मध्य	राक्षस
06: से 20:00	स्वाती	1 से 4	रू, रे, रो, ता	शुक्र	राहु	महिष	अंत्य	देव
20: से 30:00	विशाखा	1 से 3	तू, तो, ते,	शुक्र	गुरू	व्याघ्र	अंत्य	राक्षस

राशि के नाम

तौलि, वाणिक, जूक, तुला, घट और अंग्रेजी में (लिब्रा) कन्या राशि के दक्षिण पूरब में तुला राशि है। जब रवि इस राशि में रहता हैं तब दिन रात एक सरीखी रहती है। समानता, अनुरूपता एवं न्याय का प्रतीक है यह राशि बृहत्काया, व्यापार कुशल, धातुसंज्ञक वायुत्व की, पुरूषस्वभावी, शूद्र, वर्ण की, मृदुज्वर, रजोगुणी, राशि है। यह विपुल धन वैभव से परिपूर्ण ऐसे महानगर में बाजार–हाट या व्यापारी केन्द्र, सर्वोच्च न्यायालय एवं मनोरंजन के स्थानों में इसका निवास होता है। वायुतत्व की नीलवर्णप्रिय, वैश्यजाति की, दीवाबली, शीर्शोदय, ऐसी तुलाराशि का निवासस्थान कोल्लार देश (पश्चिम) भारत है। इस राशि का स्वामी शुक्रवार एवं अंक 6 हैं तथा इन राशियों का प्रभाव शरीर के नाभि के नीचे के अवयव, मूत्राशय, तथा पेट पर रहता है। मेदिनीय ज्योतिषशास्त्र में आस्ट्रेलिया, पुर्तगाल, जापान, तिब्बत, बर्मा, अर्जेन्टीना इत्यादि देशों की प्रतिनिधित्व यह राशि करती है।

चित्रा नक्षत्र में जन्में जातकों के लक्षण

चित्रा नक्षत्र में जन्में जातक पतले, सुन्दर आँखों वाले आकर्षक, संवेदनशील तथा भावुक होते है। ऐसे जातको में गजब की ऊर्जा होती है और ये निरन्तर अपनें कार्य में कार्यरत रहतें हैं ऐसे व्यक्ति अत्यन्त परिश्रमी होते है, ये अपने मन की सुनतें हैं और जीवन में आने वाले मुश्किलों को पार कर सफल होते हैं। तथा ऐसे जातको में फोर्थ श्रेणी के लोगों की ओर विशेष लगाव होता है। ऐसे जातको का 32 वर्ष तक का कार्य–काल थोड़ा स्ट्रगलिंग रहता है परन्तु बत्तीसवे वर्ष बाद ऐसे व्यक्ति उन्नति करते है, और इनके इमोशनल प्रकृति के होनें के कारण इनकों निर्णय लेने में कठिनाई आती है। चूँकि आप अपनें दिल की सुनतें हैं इस कारण से आपकी रूचि व्यापार में अधिक होती है।

चित्रा नक्षत्र में जन्में महिलाओं के लक्षण :

चित्रा जन्म में जन्मी महिलाएं हंसमुख स्वभाव की होती है, इनकी आँखें बहुत ही सुन्दर व आकर्षक होती हे। ऐसी महिलाएँ ईश्वर भक्त व अपनें माता पिता की चहेती होती हैं हाथ में लिए काम को अधूरा छोड़ देना आपका नकारात्मक पक्ष है।

चित्रा नक्षत्र की व्याधियाँ एवं उनसे मुक्ति के उपाय :

चित्रा नक्षत्र में जन्में स्त्री एवं पुरूष बहुमूत्र रोगी, अर्धागवायु, कामवासना के कारण ज्ञानेन्द्रियों से ग्रसित होतें हैं ऐसे में ये व्यापार में असफलता के शिकार भी होते है। ग्रहस्थ जीवन की बात की जाए तो इन्हे अपनें जीवन में कई प्रकार की मुसीबते झेलनी पड़ती है। इन सभी चीजों के निवारण के लिए इन्हें मंगलवार के दिन चित्रा नक्षत्र वाले लोगों को विश्वकर्मा देव का पूजन करके निचे दिये गये मंत्र का दस हजार बार जाप करें।

"ऊँ त्वष्टा तुरीयो अद्भुत इन्द्राग्निपुश्टी वर्धनपू।
द्विपदादन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्रवयोदथः ऊँ विश्वकर्मणे नमः।"

इस मंत्र का जाप करनें के बाद एक दशांक ध्वन अगर खुद करना चाहें तों कर सकतें हैं या फिर किसी योग्य ब्राम्हण से करवा ले। इसको करनें के फलस्वरूप वाहन, मकान के विषय में आनें वाले जितने भी कष्ट है वह दूर हो जायेंगे और सुख समृद्धि आपके घर आयेगी।

स्वाती नक्षत्र के जातकों के लक्षण

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेनें वाले जातक अत्यधिक चालाक, धर्म के प्रति प्रिय एवं अपनें स्वभाव से अत्यधिक कंजूस होतें हैं यह दिलदार व्यक्त्वि के तो होतें है परन्तु नशें में धुत रहने वाले होते है। राजकरण एवं अन्य दो व्यवसायों से धन कमानें वाले, कुछ क्रोधित से स्वभाव के, और अपनें सगे सम्बन्धियों के प्रेमी होते हैं ऐसे व्यक्ति प्लास्टिक उद्योग, कपड़ा उद्योग, बार रेस्टोरेंट, फैंसी स्टोर ऑटोमोबाइल उद्योग, पेंटिंग, फोटोग्राफी, ब्यूटीपार्लर, तंत्र, मंत्र एवं ज्योतिष, बेकरी स्टुडियो, आदि की हैसियत से स्वाति नक्षत्र के जातक सफल होते हैं।

स्वाति नक्षत्र की महिलाओं के लक्षण

स्वाति नक्षत्र में जन्मी महिलाएं दिखनें में बहुत ही खूबसूरत, मनोरथपूर्ण करने वाली, किसी बुरे इंसान के साथ असंगत में रूचि लेनें वाली, मधुरभाषा में वार्तालाप करनें वाली, धार्मिक स्वभाव की भी होती है। ऐसी स्त्रियाँ खरीदारी–फरोख्त में होशियार, तथा व्यवसाय में सफल होती है।

स्वाति नक्षत्र की व्याधियाँ एंव उनसे मुक्ति पानें के उपाय :

स्वाति नक्षत्र में जन्में स्त्री–पुरूष को मूत्राशय के विकार, होते हैं ऐसे व्यक्तियों को गर्भाशय का अल्सर, चमड़ी के विकार, कुष्ठरोग जैसी विमारियों से पीड़ित रहना पड़ता है। ऐसे व्यक्तियों के जीवन में काफी उतार–चढ़ाव आतें है। और अनेक विध मुसीबतें इनके प्रगति के मार्ग में खड़ी रहती है। इन सभी मुश्कीलों को दूर करनें के लिए निचे दिये गये जप को दस हजार बार करें।

"ऊँ वायु ये ते सहस्त्रिणे रथा सस्ते चिरागहि निकुत्वाम् सोम् वितये ऊँ वायवे नमः।"

ऐसे में वासुदेव हनुमानजी या श्री शंकरजी की नित्यपूजा और उपासना करें।

स्वाति नक्षत्र के चरणों का फलित :

प्रथम चरण : तुला राशि वाले स्वाति नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाले जातक बहुत शूर वीर, गंभीर स्वभाव के और हमेशा स्वप्न देखने वाले होते है, ऐसे जातक हवाई किले बनाने वाले, होते हैं तथा हमेशा यह प्रगति की ओर अग्रसर होतें है।

द्वितीय चरण : स्वाति नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाले जातक सदृढ़ किसी भी काम में हमेशा आगे रहनें वाले, सत्य भाषा बोलने वाले तथा आकर्षणशील होते है।

तृतीय चरण : स्वाति नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म लेने वाले जातक अत्यधिक कठोर हृदय वाले, होते है तथा बहुत ही दयालु और दूसरों की गलती को जल्दी क्षमा कर देने वाले होते है।

चतुर्थ चरण : स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्में जातक अत्यधिक चालाक, बोलने में तथा बात करने में तेज, और कामातुर भी होते है।

विशाखा नक्षत्र के जातकों के लक्षण

तुला राशि के विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाली महिलाएँ धर्म के प्रति अत्यधिक जागरूक होती है यह धार्मिक कार्यो में भी अग्रसर होती हैं ऐसी महिलाएं स्वभाव से नम्र, सत्यभाषी, धनी, विद्वान, लेखन एवं भाषा कला में विज्ञ और आकर्षण व्यक्तित्व के धनी होते है।

विशाखा नक्षत्र की व्यधियां एवं उनसे मुक्ति पानें के उपाय :

विशाखा नक्षत्र में जन्में स्त्री और पुरूष आमतौर पर देखा जाए तो कुक्षि शूल सरदर्द एवं सर्वपीड़ा के शिकार होतें है। और अपनें जीवने में किसी प्रकार की स्थिरता को प्राप्त करनें के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। और अपनी सारी अनिष्टताओं को दूर करनें के लिए निचे दिये गयें इस मंत्र का दस हजार बार जाप स्वयं करें या योंग्य ब्राम्हण से करवा लें। और जाप करनें के बाद एक विधिवत रूप से दशांश हवन अवश्य करना चाहिए।

"ऊँइन्द्राग्नि आगत गूं सूतं गिभिर्नमोवदेध्यम्।
अस्य पातं धिये पिता ऊँ इन्द्रग्निभ्यां नमः॥"

विशाखा नक्षत्र के चरणों का फलित

प्रथम चरण : विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाले जातक सफल व्यवसायी होते है, यह एक फलित ज्योतिष भी होते है विशेषज्ञ एवं भोले मन के होतें हैं

द्वितीय चरण : विशाखा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्में जातक, बड़बोले होते है, अपनी ही डींग मारनें वालें, जादूगरी, हाथ की सफाई यानि चोरी में माहिर, हर काम में आगे रहने वालें, सत्य बोलने वालें तथा विपरीत गुणों से युक्त रहतें है।

तृतीय चरण : विशाखा नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म लेनें वाले जातक शरीर से हष्ट–पुष्ट होते है तथा बहुत ही नीची सोच वाले होते हैं। और स्वभाव से यह चरित्रहीन होते है।

चतुर्थ चरण : विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले जातक ऐश्वर्यसम्पन्न, बुद्धिमान, वार्तालाप चतुर एवं व्यवहार कुशल होते है।

तुला राशि के व्यक्तियों का भविष्य

तुला राशि वाले जातकों को वाहनों का शौक अत्यधिक रहता है, इस राशि वाले जातक पराक्रमी दान–पुण्यशील और धार्मिक कार्यों में रूचि रखनें वाले, पुरूषार्थ से अपने धन कमानें वाले, स्वतंत्रबुद्धि के ऐसे व्यक्ति नेतृत्व शक्ति के धनी न्यायप्रिय, सत्य भाषा बोलने वाले और खरीदारी में अत्यन्त माहिर होते है। इस राशि के जातक एक से अधिक स्त्रियों से संबंध रखने वाले होते है। इनके भाग्य की बात करें तो भाग्योदय होने में काफी विलम्ब होता है। ऐसे व्यक्ति के संतान सुख में हमेशा कमी रहती है। तुला राशि वाली महिलाएं काफी चंचल होती है। इस राशि वाली महिलाओं के गर्दन सुराहीदार होतें है। ऐसी स्त्रियों के यश, धन अच्छे प्रमाण में प्राप्त होता है।

'जातका भरण' चद्र निर्याणाध्याय के अनुसार :

तुला राशि वाले व्यक्ति प्रतिष्ठित होते हैं तथा यह अत्यधिक ऐशो आराम फरमाने वाले लोग होते हैं ऐसे व्यक्ति अपनें राजदरबार में उच्चपद और मान सम्मान प्राप्त करतें हैं इनको विभिन्न प्रकार के कलाओं का ज्ञान भी होता है। तुला राशि के व्यक्तियों को अपनी रूचि के अनुसार भोजन पकानें और खानें का बहुत शौक होता है। इनके राशि में दो विवाह होने की संभावनाओं को भी बताया जाता है। तथा ऐसे व्यक्ति खरीद–फरोख्त में काफी ज्यादा धन कमातें है। तुला राशि के जातको को उम्र के आठवे वर्ष में ज्वर ताप के कारण कष्ट होता है। तो 20 वे वर्ष में अपघात (कोई बुरी बीमारी) होने का भय रहता है। 21वें वर्ष में अनेक विघ्न मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति कला प्रेमी होते है तथा इनकी पत्नी हमेशा बीमार रहती है। तुला राशि के लोग 55, 60, 63, 77, 74, 77 वर्ष में अरिष्टसूचक होते है और इनका जीवनयोंग 85 वर्ष का बनता है।

तुला राशि का अनुभव सिद्ध फलित

तुला राशि लोगों का ऊँचा शारीरिक ढ़ाँचा होता है, ये दीर्घनाक वालें होते हैं, इनका मुखड़ा अत्यन्त आकर्षण होता है अर्थात् से सारी विशेषताएँ जो है वह तुला राशि की होती हैं इनके जीवन में एक संतान होने के योग होते है वह भी रोगी होतें है। इन व्यक्तियों को व्यवसाय बार–बार बदलने की प्रवृत्ति के कारण इनके जीवन में स्थिरता देर से आती है, अतः ये व्यक्ति पुरूषार्थी किन्तु आलसी होते है। ऐसे व्यक्ति सौन्दर्य प्रसाधन, वस्त्रउद्योग कागज, स्टेशनरी, किराना समान फर्नीचर, होटल इत्यादि व्यवसायों में तुला राशि के व्यक्ति सफल होते है।

प्रतिकुल :

किसी भी वर्ष का अप्रैल महीना इनके लिए प्रतिकूल रहता है।
किसी भी महीने की 4, 14, 19, 24, ये तारीखें इनके लिए प्रतिकुल रहता है।
गुरूवार का दिन इनके लिए अच्छा होता हैं।
लाल रंग के वस्त्र एवं लाल रंग की अन्य चीजें प्रतिकूल होती है।
कर्क एवं सिंह राशि के व्यक्ति इनके लिए अच्छे होते है।
ये पाँच बातें तुला राशि वाले व्यक्तियों के लिए प्रतिकूल होती है।

तुला राशि के व्यक्तियो की जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का क्रम :

तुला राशि के लोगों का 18 से 30 वर्ष में विवाह के योग बनतें है। तुला राशि वाले कुछ लोग अविवाहित ही रहना पसंद करतें है।

इस राशि वालें लोगो का 28 से 32 वर्ष के अन्दर ही भाग्योदय होते है और इनकी आर्थिक स्थिती में भी इस आयु के बाद ही सुधार आता है।

इस राशि वाले लोगो का 43 से 68 वर्ष की आयु में अत्यधिक शारिरीक कष्ट होते हैं इस स्थिती में इनके आमदनी एवं खर्च में तालमेल नही रहता है। किसी व्यक्ति के द्वारा इनको धोखाधड़ी भी हो सकती है। तुला राशि वाले जातको का 72 वें वर्ष में कोई बहुत बड़ा खतरा या अपमृत्यु संभव है।

तुला राशि वाले व्यक्तियों के लिए विशेष उपासना

नित्य भैरव का पूजन करें और 'भैरवस्तोत्र' का पाठ करें निम्न मंत्र का प्रतिदिन 108 बार जाप करें।

"ऊँ तत्व निरंजनायतारक रामाय नमः।"

इसके उपाय के लिए अनामिका में हीरा, अमेरिकन डायमंड या सफेद पुखराज धारण करें।

कुण्डली में विवाह के कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

विवाह के समय यदि कन्या (कनिष्ठ) छोटी हों और वर (ज्येष्ठ) बड़ा हो, तो भी इस स्थिति में भी दोनों का ज्येष्ठ में विवाह करना शुभ होता है।

किसी स्त्री का विवाह जन्म होनें के बाद से सम वर्ष यानि 18/20 वर्ष में करनें से पुत्र, पौत्र प्राप्ति होती है, तथा पुरूष का जन्म के बाद से विषम वर्ष में विवाह हो तो, लक्ष्मी की प्राप्ति होती है अन्यथा मृत्यु हो जाती है।

जिस स्त्री या पुरूष की जन्म कुण्डली में मंगल ग्रह 1, 12, 4, 7 या 8 इन स्थानों में से किसी भी स्थान पर हो, तो वह स्त्री या पुरूष हमेशा अपनें पति या पत्नी का नाश करने वाले होते है। ऐसी स्थिति में निश्चित रूप से मंगली स्त्री का विवाह मंगला पुरूष से ही करना चाहिए। और किसी मांगलिक कन्या का विवाह किसी ऐसे पुरूष से करना चाहिए, जिसकी कुण्डली में उसका ग्रह बलवान हों और ऐस जातक का आयुष्य योग प्रबल हों। ऐसी सावधानिया पहलें से देख लेनें से किसी भी प्रकार की परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ता है।

जिस स्त्री या पुरूष की जन्म कुण्डली में 7, 1, 4, 9, 12 आदि स्थानों में शनि ग्रह स्थित हों, तो ऐसे स्त्री या पुरूष को किसी भी प्रकार का मंगल दोष नहीं होता है।

यदि कोई जातक वर ज्येष्ठ या कन्या ज्येष्ठा या ज्येष्ठ मास हो, तो ऐसी दो ज्येष्ठ की अवस्था में विवाह करना मध्यम है। एक ज्येष्ठ में विवाह करना शुभ है और पुरूष ज्येष्ठ, स्त्री ज्येष्ठ, मास ज्येष्ठ, इन तीनों की स्थिति में या अवस्था में विवाह करना वर्जित माना जाता ह ै।

विवाह के दौरान एक बात का ध्यान रखें ज्येष्ठ (बड़ी) स्त्री, या ज्येष्ठ (बड़े) पुरूष का एक साथ विवाह कभी नहीं करना चाहिए। यदि ऐसे जातकों का विवाह होता है तो दोनों का हर स्थिति में नाश हो जाता है।

जिस किसी स्त्री की वाणी बोली इस के समान मीठी हो, शुद्ध वर्ण हो उसके नेत्र का वर्ण मधु सदृश हो या पिङ्गल (सफेद + काला) हों। यदि ऐसी कन्या से किसी पुरूष का विवाह हो तो ऐसे पुरूष को गृहस्थ सुख प्राप्त होता है।

किसी पुरूष का विवाह से पूर्व उसके गुणों को देखना हो तो ऐसे में पुरूष की जाति उत्तम हो, विघायुक्त हो, युवक हो, स्वभाव का अच्छा हो, स्वस्थ्य हो तथा निरोगी हो, ऐसे व्यक्ति का परिवार बड़ा हो, ऐसा व्यक्ति पत्नी की इच्छा रखता हो, धन सम्पदा से युक्त हो ऐसे आठ लक्षणों वाले पुरूष से किसी कन्या की विवाह करवाना सदैव उचित रहता है।

यदि किसी स्त्री में इस प्रकार के लक्षण लम्बी नाक वाली, लम्बी होंठ वाली, कुष्ठ रोग वाली, तथा जिसकी बोली धर्धराती हो रोगिणी हो तथा जिसके भाई न हों, जिसके शरीर से हमेशा दुर्गन्ध आती हो उस कन्या से किसी पुरूष को विवाह नहीं करना चाहिए।

विद्वानों के अनुसार अत्यधिक दूर रहने वाले, मोक्ष धर्म को माननें वाला, योगाभ्यासी, युद्ध करनें वाला और ऐसे दरिद्र पुरूष का विवाह अपनी कन्या से नहीं करना चाहिए। मूल नक्षत्र में जन्मी कन्या गुणों को नष्ट करनें

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाली कन्याएँ देवर का नाश करनें वाली होती है।, और ज्येष्ठा में जन्म लेने वाली कन्याएँ (अपनें पति के बड़े भाई) का नाश करने वाली होती है। यदि किसी कन्या की जन्म कुण्डली में लग्न में बृहस्पति हो, तो विवाह के तुरंत बाद पुत्रों को नाश करनें वाली होती है, यदि उसके लग्न से द्वितीय भाव में वृहस्पति हो तो ऐसी कन्या अत्यधिक धनवती होती है। यदि इसके तृतीय भाव में वृहस्पति हो तो ऐसी कन्या विधवा होती हैं।अगर चतुर्थ में हो तों वह व्याभिचारिणी पंचम स्थान पर हो तो पुत्रवती, षष्ठ में पतिनाश करने वाली सप्तम में हो तो सौभाग्यशाली होती है, अष्टम स्थान में हो तो पुत्रहीन होती है, नवम स्थान में हो तो पतिप्रिय होती है। दशम में हो तो पुत्र व पति का नाश करने वाली होती हैं, एकादश स्थान में हो तो धनाढ़य, द्वादश स्थान में वृहस्पति हो तो ऐसी कन्या बाँझ होती है

यदि कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक जितनी संख्या हो उसमें 9 का भाग दे देने से यदि शेष में तीन या सात हो, तो अशुभ और अन्य शुभ होतें हैं इसी प्रकार वर से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर, जितनी नक्षत्र संख्या होती है उसमें 9 का भाग देकर पूर्ववत् शुभ और अशुभ फल जानना चाहिए।

मार्तण्डमत से गुण मेलापन

वर्ण का गुण

दोनो का एक वर्ण अथवा वर उच्च वर्ण हो, तो शुभ जानना चाहिए। गुणों का ज्ञान जाननें के लिए दिए गए चक्र का अवलोकन करें।

वष्य का गुण

शत्रु और भक्ष्य में गुण शून्य (0) तक जाति में गुण 2, वष्य और वैर में गुण 1 वष्य और भक्ष्य में

गुण आधा (1/2) लेना चाहिए

वधू का वर्ण

वर का वर्ण				
वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
ब्राह्मण	1	0	1	0
क्षत्रिय	1	1	0	
वैश्य	1	1	0	0
शूद्र	1	1	1	1

वश्य का गुण

वश्य	चतु	मा	जल	वन	की
चतुष्पद	2	॥	1	0	2
चतुष्पद	॥	2	0	0	0
जलचर	1	0	2	2	2
वनचर	0	0	2	2	0

तारा का गुण

वर और वधू में एक का शुभ तारा और दूसरे का अशुभ तारा हो, तो गुण डेढ़, दोनों का एक ही तारा या शुभ तारा हो तो गुण तीन तथा दोनों का तारा अशुभ होनें पर गुण शून्य जानना चाहिए। तारागुण का मेल प्राचीन मुनियों नें इस प्रकार किया है–

तारा	1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	3	3	1½	3	1½	3	1½	3	3
2	3	3	1½	3	1½	3	1½	3	3
3	1½	1½	0	1½	0	1½	0	1½	1½
4	3	3	1½	3	1½	3	1½	3	3
5	1½	1½	0	1½	0	1½	0	1½	1½
6	3	3	1½	3	1½	3	1½	3	3
7	1½	1½	0	1½	0	1½	0	1½	1½
8	3	3	1½	3	1½	3	1½	3	3
9	3	3	1½	3.	1½	3	1½	3	3

इस ऊपर दिये गये चार्ट में महावैर का गुण शून्य (0), दोनों की शत्रुता का गुण एक (1), अपनें स्वभाव का गुण 2, दोनों की मित्रता का गुण 3, अतिमित्रता का गुण 4 पाना चाहिए।

यज्ञेनि गुण ज्ञानार्थ चक्र – 4

	अ.	गा.	मे.	स.	स्वा.	मा.	मू:	गौ.	म.		ह.		न.	सि.
अश्व	4	2	2	3	2	2	2	1	0	1	3	3	2	1
गज	2	4	3	3	2	2	2	2	3	1	2	3	2	0
मेष	2	3	4	2	1	2	1	1	1	2	2	2	0	2
सर्प	3	3	2	4	2	1	1	1	1	2	2	2	0	2
श्वान	2	2	1	2	4	2	1	2	2	1	0	2	1	1
मार्जार	2	2	2	2	2	4	0	2	2	1	3	3	2	2
मूषक	2	2	1	1	1	0	4	2	2	2	2	2	2	1
गाय	1	2	3	2	2	2	2	4	3	0	3	2	2	1
माहिषी	0	3	3	2	2	2	2	3	4	1	2	2	2	3
व्याघ्र	1	2	1	1	1	1	2	0	1	4	1	1	2	2
हरिण	3	2	3	2	2	3	2	3	2	1	4	2	2	2
वानर	3	3	0	2	2	3	2	2	2	1	2	4	3	2
नकुल	2	3	3	0	0	2	1	2	2	2	2	3	0	2
	1	0	1	2	2	1	1	1	3	2	2	2	1	4

ग्रह मैत्री का गुण

दोनों के राशि स्वामी ग्रह मित्र हों या एक ही ग्रह हों, तो 5 गुण, एक मित्र दूसरा सम हों, तो भी 4 गुण, दोनों सम हो, तो 3 गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो 1 गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो 1/2 गुण दोनों शत्रु हों, तो 0 गुण लिया जाता हैं।

वधू के गुण

वर के गुण

वार	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
रवि	5	5	5	3	5	0	0
चन्द्रमा	5	5	4	1	4	॥	॥
मंगल	5	4	5	॥	5	3	॥
बुध	3	1	॥	5	॥	5	4
गुरू	5	4	5	॥	5	॥	3
शुक्र	5	॥	3	5	॥	5	5
शनि	0	॥	॥	4	3	5	5

गण का गुण

दोनो का गण एक हो, तो गुण 6, वर देवगण और वधु मनुष्यगण उसका गुण भी 6, इससे विपरीत होनें पर गुण 5, वर राक्षसगण और वधु देवगण हो, तो उसका गुण 1 और अन्यथा शून्य गुण लेना चाहिए।

वधू के गुण

वर के गुण

गण	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	6	5	0
मनुष्य	6	6	0
राक्षस	6	0	6

भकूट का गुण विचार

शुभ भकूट के गुण – स्त्री एंव पुरूष दोनों की एक राशि हो, भिन्न चरण या भिन्न नक्षत्र हो, तो उसका गुगा 7, दोनों की राशियाँ तृतीयैकादश हो या भिन्न राशि और नक्षत्र हो तो गुण, 5, शुभ शडष्टक या द्विर्द्वादश या नवम पंचम हो तो, वर दूरत्व योनि शत्रुता होने पर भी गुण 6 लेना चाहिए। अशुभ कूट का गुण – वर योनि मैत्री व स्त्री दूरत्व हो, तो शडष्टक, द्विर्दाश, नवम पंचम आदि दुष्ट कूटों के भी गुण 4, योनि मैत्री व स्त्री दूरत्त, इन में से एक हो, तो दुष्ट कूट का गुण 1, यहाँ एक

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
मेष	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0
वृष	7	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7
मिथुन	0	7	7	0	7	7	0	0	7	0	7	7
कर्क	7	0	7	7	0	7	7	0	0	7	0	7
सिंह	0	7	0	7	7	0	7	7	0	0	7	0
कन्या	0	0	7	0	7	7	0	7	0	0	0	7
तुला	7	0	0	7	0	7	7	0	7	7	0	0
वृश्चिक	0	7	0	0	7	0	7	7	7	7	7	0
धनु	0	0	7	0	0	7	0	7	7	0	7	7
मकर	7	0	0	7	7	0	7	0	0	7	0	7
कुम्भ	7	7	0	0	7	0	0	7	7	7	7	0
मीन	0	7	7	0	7	7	0	0	0	0	7	7

नाड़ी का गुण

वर व वधु दोनों की भिन्न नाड़ी हो, तो शुभ और दोनो की समान नाड़ी हो, तो अशुभ अर्थात् शून्य गुण लेना चाहिए।

वर व वधू के गुण मेलापन में यदि गुण 18 या उससे अधिक हों, तो शुभ, अन्यथा अशुभ जान कर त्याज्य

वधू का गुण

वर का गुण			
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	0	8	8
मध्य	8	0	8
अन्त्य	8	8	0

वर्ण के फल

जिस कन्या का वर्ण वर के वर्ण से श्रेष्ठ हो, तो उसका पति अथवा उसका ज्येष्ठ पुत्र का नाश हो जाता है।

वैर योनि का फल

जैसे अश्व और भैंस की वैर योनि है, उसी तरह वर व वधु की वैर योनि का विचार करना चाहिए। राजा या स्वामी और सेवक इत्यादि का भी विचार करें। हमेशा शुभ की इच्छा करनें वाले मनुष्य को परस्पर वैर योनि का परहेज करना चाहिए।

गुणनफल

वर व वधु का समान गण हो, तो उत्तम प्रीति, मनुष्य और देव में मध्यम देव और राक्षस में कलह तथा मनुष्य और राक्षस में मृत्यु होती है।

कूट फल

दोनों का शडष्टक मृत्युकारक, नवपंचम अनपत्यकारक और द्विर्द्वादश निर्धनता कारक, शेष प्रायः मध्यम जानना चाहिए।

नाड़ी फल

स्त्री एंव पुरूष की अग्र (आदि) नाड़ी हो, तो भर्ता (पति) को, मध्य नाड़ी हो, तो दोनों को, अन्त्य नाड़ी कन्रा को मृत्युकारक होती है

दोनों की मध्य नाड़ी निर्धनता का कारण है और गर्भनाश होती है। अन्त्य नाड़ी दुर्भाग्य कारक भी जानना चाहिए।

दोनों की मध्य नाड़ी मृत्युप्रद, वैसे ही पार्श्व नाड़ी भी मृत्युप्रद होती है परन्तु विवाह में पार्श्व नाड़ी निन्दित नहीं है, ऐसा अन्य मत में क्षत्रियादिकों के लिए कहा गया है।

स्त्री और पुरूष का समान वर्ग में जैसे दोनों सिंह राशि के ही हो, तो थोड़ी प्रीति, लेकिन शत्रुवर्ग में होनें से मृत्युप्रद होती है।

असत्कूट विचार

स्त्री नक्षत्र से वर नक्षत्र निकट हों, तो अशुभः वर नक्षत्र से स्त्री नक्षत्र दूर हो, तो शुभ और यदि एक नक्षत्र या स्वामी एक हों, तो शुभ समझना चाहिए।

दुष्टकूटों का दान

अतिआवश्यक विवाह में वधु और वर के दुष्ट कूटादिकों की शान्ति के लिए दान क्रम से शडष्टक में दो गायः नवपंचम में रूपा सहित काँसे का पात्रः एक नाड़ी में गौ; द्विर्द्वादश में अन्न, सुवर्ण वस्त्र आदि तथा ब्राम्हणों को भोजन काराना इत्यादि से दुष्ट कूटादिक दोषों का परिहार कहा गया है।

एकविंशति महादोष

(1) पञ्चङ्ग शुद्ध रहित दोष, (2) उदयास्त शुद्ध रहित, (3) संक्रकान्ति दिन, (4) पापग्रह का वर्ग (5) लग्न से छठा शुक्र, (6) लग्न से अष्टम मंगल, (7) लग्न से 6–8–12 में चन्द्र, (8) त्रिविध गण्डान्तकाल, (9) कर्तरी दोश, (10) लग्न में चन्द्र व पाप ग्रह, (11) पर वधु की राशि से अष्टम लग्न वर्जनीय, (12) विष घटिका, (13) दुष्ट मुहूर्त, (14) यामद्वि आदि वार दोष, (15) लत्ता 16 ग्रहण नक्षत्र (17) उत्पात नक्षत्र, (18) पापग्रह से विद्ध नक्षत्र, (19) पापग्रह युक्त, (20) पापांश, (21) क्रान्ति साम्भ

कर्तरी दोष

लग्न अथवा चन्द्र से बारहवें और दूसरें स्थानों में पापग्रह के होनें से कर्तरी दोष होता है, इस में विवाह, यज्ञोपवीत वर्जित हैं कर्तरी दोष का भङ्ग इस प्रकार होता है कि यदि उक्त स्थानों में शुभग्रह हो अथवा शुभग्रह से युक्त लग्न या चन्द्र हो, तो क्रूर ग्रहों की कर्तरी नहीं होती।

वर वधू की राशि से अष्टम लग्न

वर, वधु और बटुक; इन तीनों की जन्म राशि और लग्न से अष्टम लग्न विवाह और व्रमबन्ध में वर्जित है।

दुष्ट मुहूर्त

दिनमान और रात्रिमान, इनका पन्द्रहवाँ अंश दुर्मुहूर्त होता है, जो शुभ कार्य में निन्ध कहा गया है।

यामा र्द्धादिक विचार

रविवार से अर्द्ध यामार्द्ध की अधोलिखित कोष्ठक कू अन्त तक प्रवृत्ति निवृत्ति के अंक का क्रम जानना चाहिए। यह शुभ कर्म में वर्जित हैं दिन में दिनमान का सोलहवा भाग रविवार से कुलिक कोष्ठक के अन्त तक अंक होते है। उनकी कुलिक संज्ञा है और शुभ कर्म में वर्जित है।

रात्रि में एक घटायें। किसी के मत में दिनमान का पञ्चदशांश वर्जित करके गुरू से काल दोष, बुधवार से कण्टक, शुक्रवार से निघण्ट, ये सब यथा क्रम कुलिक के समान वर्जित है।

अर्ध यामार्द्ध बोधक चक्र

एकदिन का यामार्द्ध 8, कुलिक 16, वारानुसार जानना चाहिए, परन्तु उनमें से जिस वार का जो वर्जित है, वह अधोलिखित कोष्ठक में लिखा गया है

अर्द्ध यामार्द्ध बोधक चक्र

वार	यामार्द्ध घटिक 4 संख्या				काल ध. 2		
रवि	4 था	12	26	14 वाँ	8 वाँ	6 वाँ	10 वाँ
चन्द्र	7 वाँ	24	28	12 वाँ	6 वाँ	4 था	8 वाँ
मंगल	2 रा	4	8	10 वाँ	4 था	2 रा	6 वाँ
बुध	5 वाँ	16	20	8 वाँ	8 वाँ	14 वाँ	4 था
गुरू	8 वाँ	28	32	6 वाँ	14 वाँ	12 वाँ	2 रा
शुक्र	3 रा	8	12	4 था	11 वाँ	10 वाँ	14 वाँ
शनि	6 ठाँ	20	24	2 रा	10 वाँ	8 वाँ	12 वाँ

लत्ता दोष

भौम जिस नक्षत्र में स्थित हो, उससे तीसरे नक्षत्र में लत्ता दोष और बुध, जिस नक्षत्र में स्थित हो, उससे बाइसवे नक्षत्र में, गुरू से छठे नक्षत्र में, सूर्य से 12 वें नक्षत्र में, पूर्ण चन्द्रमा से सातवें नक्षत्र में लत्ता दोष होता है। यह दोष केवल मालव देश में अशुभ कर मानना चाहिए, अन्यत्र शुभ ही जानें।

ग्रहण तथा उत्पात नक्षत्र

जिस नक्षत्र में उत्पात अथवा ग्रहण हो, उस नक्षत्र में शण्मास तक शुभ कर्म नहीं करना चाहिए।

पापग्रह युक्त तथा उत्पात नक्षत्र

पञ्च और सप्त शलाका चक्र में जिस रेखा पर जो नक्षत्र हो और उसी में पापग्रह हो, तो वह शुभ नक्षत्र विद्ध जानना चाहिए।

नक्षत्र चरण वेध

विद्ध नक्षत्र एकार्गल और लत्ता उत्पात नक्षत्र, इनके जिस चरण में शुभ ग्रह हो, तो वह चरण शुभकर्मो में वर्जित है। प्रथम चतुर्थ द्वितीय तृतीय नक्षत्र के चरण परस्पर विद्ध होते हैं किसी अन्य के मत में पापग्रह विद्ध नक्षत्रों के चरण वर्जित है। एकार्गल दोषो के प्रसंग में मार्तण्ड का मतह है कि विश्कम्भादि दुष्ट योग रहित दिन नक्षत्र से अभिजित् सहित गणना से विषम् नक्षत्र में सूर्य हो तो एकार्गल दोष होता है।

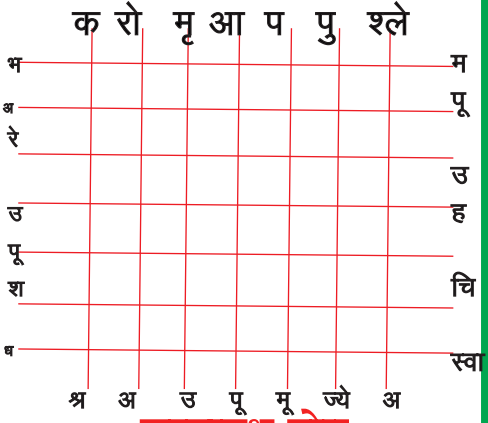

पञ्चशलाका चक्र

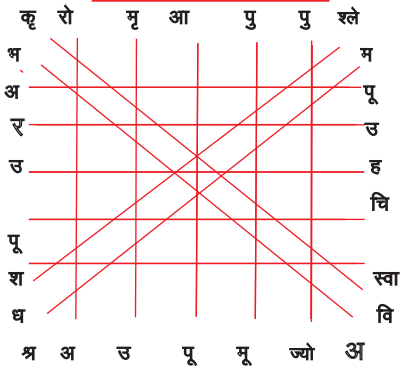

सप्तशलाका चक्र

चण्डायुध दोष

शूल, गण्ड, व्यतिपात्, साध्य, वैधृति, हर्षण आदि योगों के अन्त में जो नक्षत्र हो, उसे चण्डायुध दोष कहा गया है।

क्रान्ति साम्य दोष

धनु, मिथुन; इन लग्नों के सूर्य और चन्द्रमा हो, तो क्रान्ति साम्य होता है। इसी प्रकार से कर्क वृश्चिक, कन्या मीन, वृष मकर, मेष–सिंह कुम्भ–तुला, आदि दो–दो राशियों के क्रान्ति साम्य दोष जानना चाहिए।

क्रान्ति साम्य प्रदर्शनार्थ चक्र

तीन ऊर्ध्व और तीन आड़ी रेखा खींचे और मध्य भाग की रेखाओं में तीन–तीन लग्न क्रम से लिखें। द्वादश लग्नों में से दो–दो का क्रान्ति साम्य सि) हो जाता है।

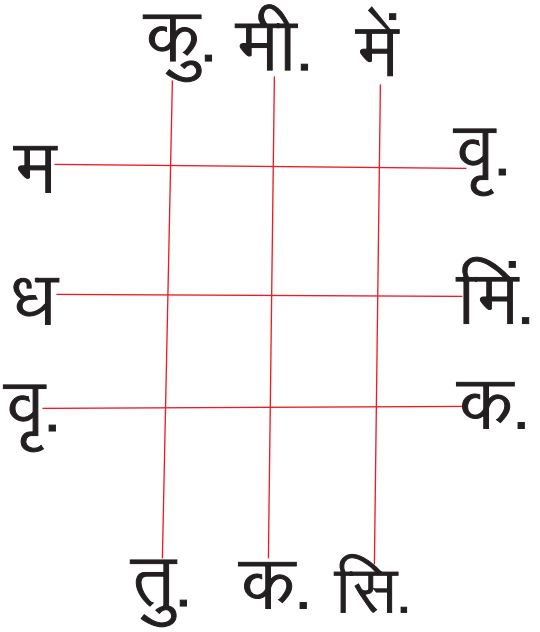

यमित्र दोष

लग्नगत चन्द्र अस्तगड़त न हो और पापग्रह उसके तुल्यांश में स्थित हो, तो यामित्र दोष होता है। यदि न्यूनाधिक अंश में पाप हो, तो दोष नहीं होता । दूसरे मत के अनुसार लग्न से वा चन्द्र से सप्तम् स्थान में शुभ ग्रह या कश्यप, देवल आदि ऋषियों के मत में यामित्र दोष विवाद में वार्जित है।

सब्सक्राइब कीजिए भारत की सबसे लोकप्रिय ज्योतिष पत्रिका

ज्योतिष विज्ञान

सफलतम् 1 ला वर्ष

हर अंक में विशेष

केवल ज्योतिष से सम्बन्धित मासिक पत्रिका
ज्योतिष सीखने के लिए अनेक लेख
वर्तमान में राशि परिवर्तन और उसका प्रभाव
महीने के व्रत त्यौहार इत्यादि
राजनीतिक विश्लेषण
अनेक विद्वानों द्वारा ज्योतिषीय विषय पर शोध

सदस्य शुल्क (प्रिंट एडिशन) (TAX सहित)

(साधारण डाक से)

वार्षिक 708
द्विवार्षिक 1298
त्रिवार्षिक 2360
आजीवन 12980

(कोरियर से)

वार्षिक 826
द्विवार्षिक 1416
त्रिवार्षिक 2478

(पंजीकृत डाक से)

वार्षिक 885
द्विवार्षिक 1475
त्रिवार्षिक 2537

सदस्यता शुल्क (डिजिटल एडिशन)

एक प्रति 35
वार्षिक 300

BANK DETAILS :
Name : **KM ASTROGURU PVT. LTD.**
A/C No. : 628605015394
IFSCE Code : ICICI0006286
Branch Add : R-1/88 RDC Raj Nagar Ghaziabad UP 201002
Type : CURRENT ACCOUNT

दिसम्बर महीने में त्यौहार/व्रत

रवि SUN	**मूल-विचार** ता. 5 आश्लेषा दिन 2/28 से ता. 7 मघा दिन 2/3 तक । ता. 13 ज्येष्ठा रात्रि. 1/40 से ता. 15 मूल रात्रि 9/31 तक । ता. 22 रेवती रात्रि 1/37 से ता. 25 अश्विनी प्रातः 7/36 तक	मार्गशीर्ष कृष्ण 6 6	मार्गशीर्ष कृष्ण 14 13 महाशिवरात्रि व्रत	मार्गशीर्ष शुक्ल 6 20	मार्गशीर्ष शुक्ल 13 27 प्रदोष व्रत
सोम MON		मार्गशीर्ष कृष्ण 7 7	मार्गशीर्ष कृष्ण 30 14 सोमवती अमावास्या	मार्गशीर्ष शुक्ल 7 21	मार्गशीर्ष शुक्ल 14 28 दत्तात्रेय जयंती, पूर्णिमा
मंगल TUE		मार्गशीर्ष कृष्ण 1 1	मार्गशीर्ष कृष्ण 8 8	मार्गशीर्ष शुक्ल 1 15	मार्गशीर्ष शुक्ल 8 22	मार्गशीर्ष शुक्ल 14 29
बुध WED		मार्गशीर्ष कृष्ण 2 2 सं. श्रीगणेश चतुर्थी	मार्गशीर्ष कृष्ण 9 9	मार्गशीर्ष शुक्ल 2 16 चन्द्रदर्शन	मार्गशीर्ष शुक्ल 9 23	मार्गशीर्ष शुक्ल 15 30
गुरू THU		मार्गशीर्ष कृष्ण 3 3	मार्गशीर्ष कृष्ण 10 10	मार्गशीर्ष शुक्ल 3 17	मार्गशीर्ष शुक्ल 10 24	पौष कृष्ण 1 31
शुक्र FRI		मार्गशीर्ष कृष्ण 4 4	मार्गशीर्ष कृष्ण 11 11 उत्पन्न एकादशी व्रत	मार्गशीर्ष शुक्ल 4 18 वै. श्री गणेश चतुर्थी	मार्गशीर्ष शुक्ल 11 25 क्रिसमस डे (बड़ादिन) मोक्षदा मौनी एकादशी	**पंचक-विचार** ता. समय 19 प्रातः 7/16 से 23 रात्रि 4/33 तक ।
शनि SAT		मार्गशीर्ष कृष्ण 5 5	मार्गशीर्ष कृष्ण 12/13 12 शनि प्रदोष व्रत	मार्गशीर्ष शुक्ल 5 19	मार्गशीर्ष शुक्ल 12 26	**विवाह-मुहुर्त** ता. 1, 2, 6, 7, 8, 9, 10, 11,

Kundali expert
For Better Future

KM ASTROGURU PVT. LTD.

Regd Off.: B-1, 101, Block-E, Classic Residency Apartment Raj Nagar Extenion, Ghazabad

S.No. ______

ADMISSION OPEN

For Astrology Course

AFFIX YOUR PHOTO

Course Name : 1 Year Basic Astrology Course ☐
2 Year Advanced Astrology Course ☐

1. Name of student: ______
(IN BLOCK LETTERS)

2. Father's Name/ Guardian's Name: ______
(IN BLOCK LETTERS)

3. Date of Birth : ______ 4. Religion: ______

5. Mobile/Telephone: ______ 6. Nationality : ______

7- Qualification: ______ 8. Email :______

9- Gender: ☐ Male ☐ Female 10. Parental's Alerts: ☐ Email ☐ SMS

11. Postal Address: ______

______

12. Class/Course to be joined: ______ Timings:______to:______

13. Aadhar Card Number ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

14. Blood Group : ______

______ Signatue of the Applicant

______ Signatue of the Parents

-: FOR OFFICE USE ONLY :-

Receipt No.:

Dated :

Admin Signature ______

Kundali expert
For Better Future
TM

KM SINHA

World Famous

-: ASTROLOGER :-

VISITING CENTER INDIA

Mumbai, Delhi, Kolkata, Chennai, Ahmedabad
Bhubneshwar, Chandigarh, Lucknow,
Jaipur, Gorakhpur, Ghaziabad, Bangalore, Hydeerabad

VISITING CENTER ABROAD

Indonesia, Australia
Philippines, USA, UK

KUNDALI EXPERT

B1- 101, Block E, Raj Nagar Extension, Ghaziabad 201017
Contact us : 98-183-183-03

Follow us: